DainikBhaskar.com भोपाल, गुरुवार 13 अगस्त 2021 श्रावण शुक्ल पक्ष - 5, 2078 12 पेज | 65 रुपए

ये हरे-भरे दरख्त हैं भोपाल की पहचान और ये इलाका भोपाल के फेफड़े, इनसे मिलती हैं सांसें...

बाघ मूवमेंट वाला देश का इकलौता शहरी इलाका...

तस्वीर भोपाल के वाल्मी-कलियासोत इलाके की है। यह देश की इकलौती रिहायश है जहां बाघ भी आते जाते है। ये मुमकिन हो पाया है यहां मौजूद इन हरे दरख्तों की बदौलत। यहां पर अभी भी 4 बाघ घूम रहे हैं, जबकि 18 बाघ ऐसे हैं जो यहां आते-जाते रहते हैं। इतना ही नहीं यहां पर तेंदुआ और भालू भी हैं। ये इलाका हमारे शहर के फेफड़े हैं और यहां के पेड़ हमें सांसें देते हैं। देशभर में 18 नगर वन बन रहे हैं, ये इलाका भी उनमें शुमार है। फोटो : शान बहादुर

मध्य प्रदेश जल एवं भूमि प्रबंध संस्थान, भोपाल

वाल्मी हिल्स, कलियासोत डेम के पास, पी.बी. नं. 538, भोपाल-462016
फोनः 0755-4082502 (ट्रेनिंग), 4082523 (हॉस्टल) फैक्सः 0755-249432
ई-मेलः mpwalmi@gmail.com | वेबसाईटः mpwalmi.org

आत्मनिर्भर वाल्मी

इला अमृतम्

वाल्मी प्रकाशन

मध्य प्रदेश जल एवं भूमि प्रबंध संस्थान, भोपाल

विशिष्ट अतिथिगण

संसद भवन के ऐतिहासिक सेंट्रल हॉल में युवा कार्यक्रम, खेल मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय युवा संसद 21 के समापन समारोह में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने देशभर के युवाओं को संबोधित किया। वाल्मी संस्थान के सभागार से सहभागी प्रतिभागियों की वर्चुअल सहभागिता को इस गरिमामय आयोजन में टैग किया गया!

म. प्र. जल एवं भूमि प्रबंध संस्थान, भोपाल को प्राकृतिक संसाधनों, सर्वेक्षण तथा प्रबंधन के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु मध्य प्रदेश की माननीय राज्यपाल

श्रीमती आनन्दी बेन पटेल

द्वारा प्रशस्तिपत्र प्रदान किया गया

संस्थान को गौरव प्रदान करने वाले कार्य

मंत्रालय में प्राकृतिका टेरेस गार्डन का विकास

रविन्द्र भवन एवं सतना स्मार्ट सिटी परिसर में वाल्मी फॉरेस्ट का विकास

पॉलिटेक्निक कॉलेज भोपाल में वाल्मी फॉरेस्ट–
एक वर्ष में घने जंगल की गारंटी 'विकास द्वारा वन'

वाल्मी परिसर में वेस्ट मटेरियल द्वारा
निर्मित ओपर एयर थियेटर 'कलाकाश'

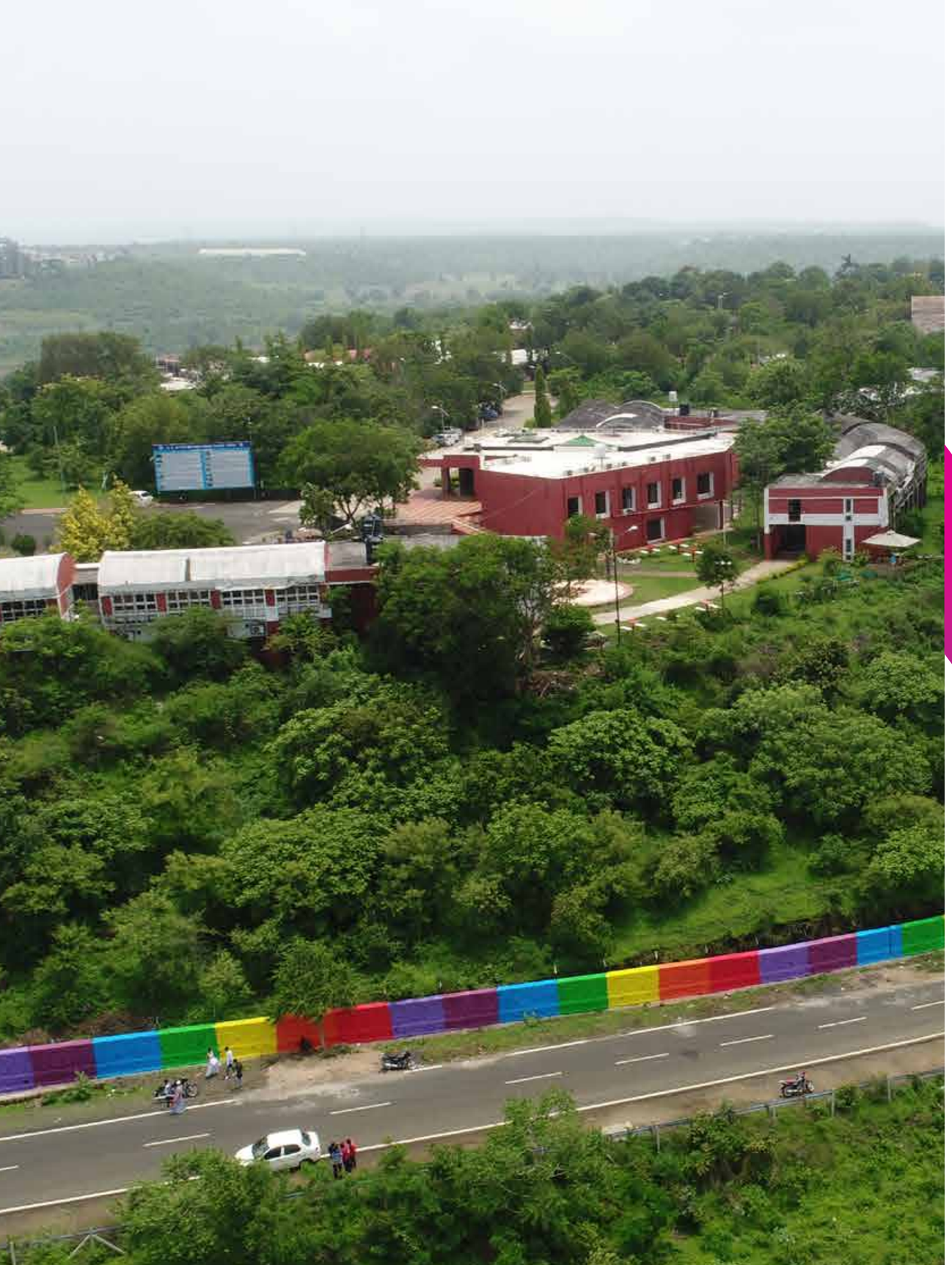

संस्थान द्वारा अर्जित उपलब्धियाँ (सम्मान)

म.प्र. जल एवं भूमि प्रबंध संस्थान, भोपाल को प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण एवं संवर्धन, जल संरक्षण, युवाओं को मार्गदर्शन प्रदान करने तथा युवा गतिविधियों में उल्लेखनीय योगदान हेतु माननीय राज्यपाल छत्तीसगढ़ **सुश्री अनुसुईया उइके** एवं पूर्व राज्यपाल मध्यप्रदेश स्वर्गीय **श्री लाल जी टंडन** के कर-कमलों द्वारा सम्मान पत्र प्रदान किये गए।

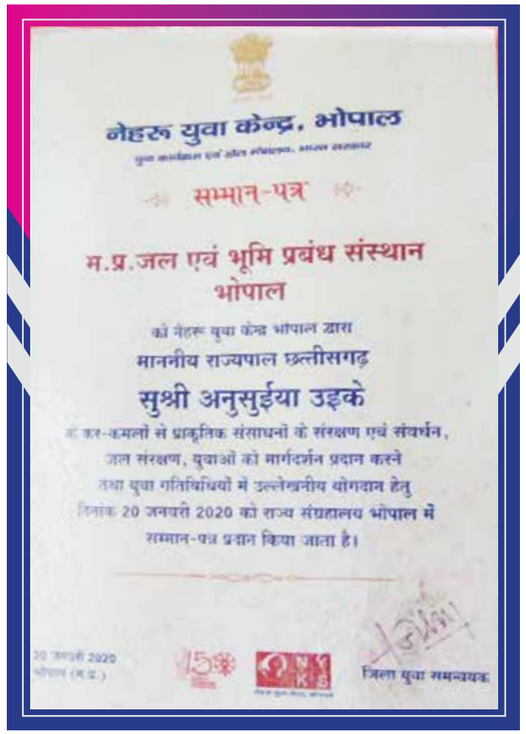

नेहरू युवा केन्द्र, भोपाल

सम्मान-पत्र

म.प्र.जल एवं भूमि प्रबंध संस्थान
भोपाल

को नेहरू युवा केन्द्र भोपाल द्वारा
माननीय राज्यपाल छत्तीसगढ़
सुश्री अनुसुईया उइके
के कर-कमलों से प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण एवं संवर्धन,
जल संरक्षण, युवाओं को मार्गदर्शन प्रदान करने
तथा युवा गतिविधियों में उल्लेखनीय योगदान हेतु
दिनांक 20 जनवरी 2020 को राज्य संग्रहालय भोपाल में
सम्मान-पत्र प्रदान किया जाता है।

20 जनवरी 2020
भोपाल (म.प्र.)

जिला युवा समन्वयक

नेहरू युवा केन्द्र, भोपाल

सम्मान-पत्र

म.प्र.जल एवं भूमि प्रबंध संस्थान
भोपाल

को नेहरू युवा केन्द्र भोपाल द्वारा
माननीय राज्यपाल श्री लाल जी टंडन
के कर-कमलों से प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण एवं संवर्धन,
जल संरक्षण, युवाओं को मार्गदर्शन प्रदान करने
तथा युवा गतिविधियों में उल्लेखनीय योगदान हेतु
दिनांक 30 दिसम्बर 2019 को राजभवन, भोपाल में
सम्मान-पत्र प्रदान किया जाता है।

30 दिसम्बर 2019
राजभवन, भोपाल

जिला युवा समन्वयक

नेहरु युवा केन्द्र संगठन
युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय
भारत सरकार

प्रशस्ति-पत्र

म.प्र. जल एवं भूमि प्रबंध संस्थान, भोपाल को नेहरु युवा केन्द्र संगठन मध्यप्रदेश
द्वारा महामहिम राज्यपाल मध्यप्रदेश
श्रीमती आनंदीबेन पटेल
के कर-कमलों से प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण एवं संवर्धन के क्षेत्र में किये गये
उत्कृष्ट कार्यों एवं नेहरु युवा केन्द्र द्वारा आयोजित राष्ट्र स्तरीय कार्यक्रमों के सफल
आयोजन में प्रदत्त सहयोग एवं योगदान हेतु दिनांक 06 जून, 2019 को राजभवन
भोपाल में प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया जाता है।

06 जून, 2019
राज भवन, भोपाल

राज्य निदेशक

Nehru Yuva Kendra Sangathan
Ministry of Youth Affairs and Sports
Government of India

CITATION

M.P. Water and Land Management Institute, Bhopal is awarded
the Citation Letter from Nehru Yuva Kendra Sangathan, Madhya Pradesh
by the Honorable Governor of Madhya Pradesh
Mrs. Anandiben Patel
for Excellent Contribution in
field of Natural Resource Management and Conservation and
extending outstanding support and cooperation in organizing
National Level Programmes of NYK.

06 June, 2019
Raj Bhavan, Bhopal

State Director

विषय सारणी

स. क्र.	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1	परिचय	01
2	उद्देश्य एवं कार्यक्षेत्र	03
3	संगठनात्मक संरचना	05
4	अधोसंरचनात्मक सुविधाएँ	09
5	प्रमुख प्रशिक्षण विषय, विशेषज्ञता के क्षेत्र एवं सम्पादित परियोजनाएँ	
6	आत्म विश्लेषण	12
7	आत्मनिर्भर वाल्मी की संकल्पना – चरणबद्ध नियोजन एवं क्रियान्वयन	13
8	परिणाम	17
9	अन्य सम–सामायिक गतिविधियाँ	37
10	निष्कर्ष	46
11	झरोखा– प्रगतिशील कार्यों का	47
12	विभिन्न सेवाओं हेतु संपर्क अधिकारियों की सूची	50
13	सोच आगे की	51
14	मीडिया में वाल्मी	54
15	अभिव्यक्तियाँ– प्रतिभागियों की	60
16	कैमरा वॉक	62

इला अमृतम्
(आत्मनिर्भर वाल्मी)

संपादन एवं परिकल्पना
डॉ. रवीन्द्र ठाकुर

विशेष सहयोग
श्री विकास अवस्थी
श्री अभिषेक गुप्ता
श्री जे.के. गुप्ता
श्री योगेन्द्र लाड
श्री विवेक भट्ट
श्री सुमित जैन
श्री सुधीर श्रीवास्तव
श्री सुनील चौधरी
श्री गौरव पुष्प
श्री एस. श्रीवास
श्री बी. अग्निहोत्री
श्री शशांक भुजबल

योगदान
समस्त वाल्मी परिवार

विशेष आभार
संस्थान के सर्वांगीण विकास में श्री इकबाल सिंह बैंस, पूर्व अपर मुख्य सचिव, म.प्र. शासन, पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग एवं वर्तमान मुख्य सचिव, म.प्र. शासन, श्रीमती दीप्ति गौर मुखर्जी, प्रमुख सचिव, म.प्र. शासन, सामान्य प्रशासन विभाग तथा श्रीमती रश्मि अरूण शमी, प्रमुख सचिव, म.प्र. शासन, स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा प्रदत्त मार्गदर्शन एवं सहयोग हेतु वाल्मी, भोपाल हृदय से आभारी है।

परिचय

प्रकृति की सुरम्य उपत्यकाओं के बीच अवस्थित मध्यप्रदेश शासन पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग के अंतर्गत मध्य प्रदेश जल एवं भूमि प्रबंध संस्थान, भोपाल प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन के क्षेत्र में शीर्ष स्वशासी प्रशिक्षण संस्थान है। कलियासोत बांध के दायें तट पर 89 हेक्टेयर क्षेत्र में फैला यह संस्थान मध्यप्रदेश सोसायटीज पंजीकरण अधिनियम 1973 के अंतर्गत दिनांक 21 अगस्त 1985 को पंजीकृत है।

प्रकृति के पंच तत्वों के संरक्षण हेतु प्रतिबद्ध **''वाल्मी''** प्रकृति के प्रति **''त्वदीयं वस्तु प्रकृत्यं, तुभ्यमेव समर्पितेव''** के बीज मंत्र से संचालित है।

प्राकृतिक संसाधन संरक्षण, संवर्धन एवं प्रबंधन के क्षेत्र में मानव संसाधन विकसित किये जाने हेतु कटिबद्ध वाल्मी, भोपाल द्वारा न सिर्फ प्राकृतिक संसाधन से जुड़े शासकीय एवं अशासकीय अमले को गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण प्रदाय किये जाते हैं अपितु सलाहकारिता सेवाओं, क्रियात्मक अनुसंधान एवं परियोजनाओं के माध्यम से तकनीकी विस्तार भी किया जाता है। अपने सामाजिक दायित्वों का निर्वहन करते हुए संस्थान द्वारा सामान्य जन एवं सामाजिक संस्थाओं हेतु भी सेवाएँ प्रदान की जाती हैं। विगत कुछ वर्षों में संस्थान द्वारा अपने उद्देश्यों के अनुरूप कार्यक्षेत्रों में अप्रत्याशित विस्तार कर चहुंमुखी विकास के माध्यम से विशिष्ट पहचान स्थापित की है।

उद्देश्य एवं कार्यक्षेत्र

(1) विज्ञान एवं तकनीकी का प्रचार प्रसार तथा तकनीकी वैज्ञानिक ज्ञान का अर्जन करना।

(2) सिंचाई, जलग्रहण क्षेत्र प्रबंधन, भूमि विकास एवं ग्रामीण विकास के क्षेत्र में अनुसंधान करना एवं विविध पहलुओं पर प्रयोग संचालित करना तथा समान उद्देश्यों वाले संगठनों से समन्वय करना।

(3) सिंचाई प्रबंधन योजनाओं से संबंधित कर्मचारियों एवं लाभार्थियों के प्रशिक्षण संचालित करना।

(4) ग्रामीण विकास, सिंचाई एवं जलग्रहण प्रबंधन योजनाओं से संबंधित सामाजिक संस्थाओं एवं लाभार्थियों की सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा देना।

(5) ग्रामीण विकास, सिंचाई एवं जलग्रहण प्रबंधन कार्यक्रमों में संलग्न कर्मचारियों के लिए विशेष क्षमतावर्धन प्रशिक्षण आयोजित करना।

(6) सिंचाई, जलग्रहण क्षेत्र प्रबंधन एवं ग्रामीण विकास कार्यक्रमों के प्रभाव का अंकेक्षण एवं मूल्यांकन।

(7) सिंचाई प्रबंधन, जलग्रहण क्षेत्र प्रबंधन एवं ग्रामीण विकास गतिविधियों में शासन एवं स्थानीय निकाय व अन्य संगठनों को सलाहकारिता सेवा प्रदाय करना।

(8) पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग तथा जल संसाधन विभाग की विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों हेतु प्रशिक्षण, क्षमतावर्धन, शोध, तकनीकी एवं वैज्ञानिक सहयोग और प्रभावों का अंकेक्षण तथा मूल्यांकन करना।

उक्त उद्देश्यों की पूर्ति संस्थान द्वारा निम्न कार्यक्षेत्रों के माध्यम से की जाती है :

- प्रशिक्षण (Online एवं Offline)
- संगोष्ठियों एवं कार्यशालाओं का आयोजन (Online एवं Offline)
- सलाहकारिता सेवाएँ
- क्रियात्मक अनुसंधान एवं परियोजनाएं
- तकनीकी हस्तांतरण
- सूचना प्रौद्योगिकी
- अंकेक्षण एवं मूल्यांकन
- भ्रमण कार्यक्रम
- शिविरों एवं मेलों का आयोजन
- साहित्य एवं पठन सामग्री विकसित करना
- ई–विस्तार
- ''लैब टू लेंड'' अवधारणा
- विशिष्ट विद्वानों एवं अतिथियों के व्याख्यान
- प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन की तकनीकों का प्रक्षेत्र एवं परिसर में प्रदर्शन
- प्रकाशन – मैगजीन, वेबसाईट, फेसबुक, ट्वीटर, फिल्म्स, पोस्टर्स इत्यादि।

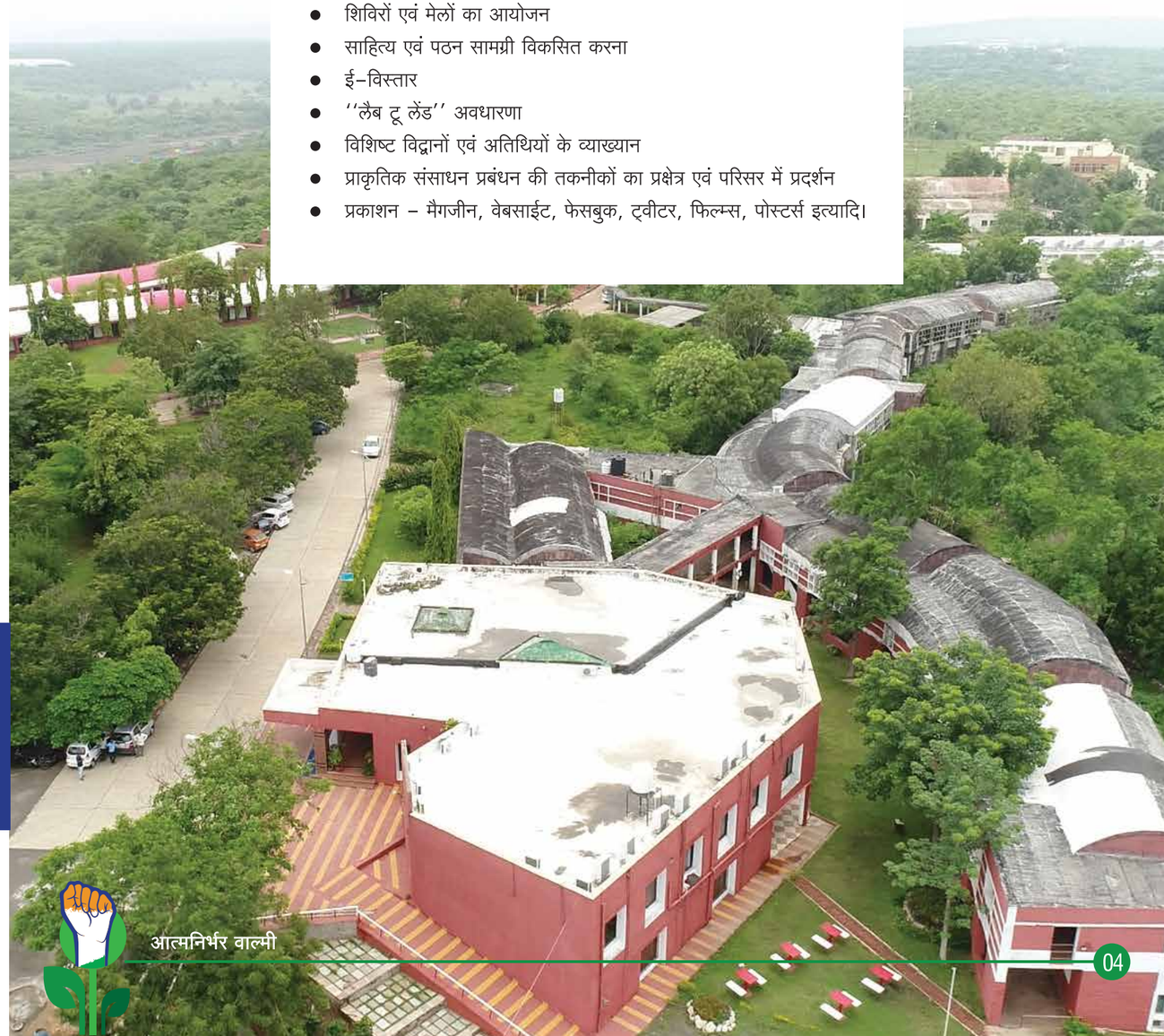

संगठनात्मक संरचना:

1. शासी निकाय (Governing Body)

- मुख्य सचिव – अध्यक्ष
- अपर मुख्य सचिव/प्रमुख सचिव, पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग – सदस्य
- कृषि उत्पादन आयुक्त, म.प्र. – सदस्य
- अपर मुख्य सचिव/प्रमुख सचिव, वित्त विभाग – सदस्य
- अपर मुख्य सचिव/प्रमुख सचिव, जल संसाधन विभाग – सदस्य
- अपर मुख्य सचिव/प्रमुख सचिव, नर्मदा घाटी विकास विभाग – सदस्य
- प्रमुख सचिव, किसान कल्याण एवं कृषि विकास विभाग – सदस्य
- प्रमुख सचिव, उद्यानिकी विभाग – सदस्य
- प्रमुख सचिव, मत्स्य पालन विभाग – सदस्य
- संचालक, वाल्मी – सदस्य सचिव

2. कार्यकारिणी समिति (Executive Committee) :

- अपर मुख्य सचिव/प्रमुख सचिव, पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग – अध्यक्ष
- प्रमुख सचिव, जल संसाधन विभाग – सदस्य
- सचिव, वित्त विभाग – सदस्य
- प्रमुख सचिव/सचिव, किसान कल्याण एवं कृषि विकास विभाग – सदस्य
- मुख्य कार्यपालन अधिकारी, म.प्र. ग्रामीण सड़क विकास प्राधिकरण – सदस्य
- संचालक, राजीव गांधी जलग्रहण क्षेत्र प्रबंधन मिशन / मुख्य कार्यपालन अधिकारी– एस.एल.एन.ए.– एकीकृत जलग्रहण क्षेत्र प्रबंधन कार्यक्रम – सदस्य
- मुख्य कार्यपालन, राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन – सदस्य
- परियोजना संचालक, विश्व बैंक परियोजनायें जल संसाधन विभाग – सदस्य
- प्रमुख अभियंता, ग्रामीण यांत्रिकी सेवा – सदस्य
- आयुक्त, सैंच्य क्षेत्र विकास, जल संसाधन विभाग – सदस्य
- संचालक, उद्यानिकी – सदस्य
- संचालक, मत्स्य पालन – सदस्य
- संचालक, वाल्मी – सदस्य सचिव

मानव संसाधन संरचना

पदनाम	स्वीकृत पद	भरे पद
संचालक	01	01
प्रशासकीय अधिकारी	01	01
उपायुक्त	01	01
लायब्रेरियन	01	–
लेखाधिकारी	01	01
सहायक यंत्री	01	01
अनुभाग अधिकारी	01	–
उपयंत्री	08	06
सहायक मानचित्रकार	01	–
कम्प्यूटर ऑप./प्रोग्राम असिस्टेंट	03	02
प्रेक्षक	01	01
केटरिंग मैनेजर	01	01
तकनीकी सहायक	04	03
कनिष्ठ वैज्ञानिक सहायक	01	01
ग्राफिक आर्टिस्ट	01	01
प्रयोगशाला तकनीशियन	02	02
समयपाल	02	02
कुक	02	02
वाहन चालक	06	05
वरिष्ठ कार्यालय सहायक	02	02
कार्यालय सहायक वर्ग–2	06	06
वरिष्ठ लेखा लिपिक	01	–
शीघ्रलेखक–2	01	01
शीघ्रलेखक–3	01	–
सहायक वर्ग–3	12	01
केटलॉग इन्डेक्स क्लासीफायर	01	01
इलेक्ट्रिकल वायरमेन	01	–
पंप अटेण्डेंट	01	–
दतरी	01	01
वाटरमेन	01	01
भृत्य	17	16
सफाईकर्मी	04	03
योग	**88**	**63**
स्थाईकर्मी	–	34

वाल्मी जलग्रहण क्षेत्र प्रबंधन एवं ग्रामीण विकास स्कूल

पदनाम	स्वीकृत पद	भरे पद
डीन	01	–
प्राध्यापक	04	–
सह–प्राध्यापक	08	01+03*
सहायक प्राध्यापक	08	04*
शोध सहभागी	08	–
इंटर्न	08	08*

वाल्मी सैंच्य क्षेत्र विकास स्कूल

पदनाम	स्वीकृत पद	भरे पद
डीन	01	–
प्राध्यापक	03	–
सह–प्राध्यापक	10	01+04*
सहायक प्राध्यापक	10	04*
शोध सहभागी	06	02*
इंटर्न	06	06*

अधोसंरचनात्मक सुविधाएं

क्र.	विवरण	संख्या / आकार
1	जल, भूमि, जैव विविधता, वन संरक्षण एवं प्रबंधन प्रक्षेत्र	30 हेक्टेयर
2	प्रशिक्षण, प्रशासनिक, छात्रावास तथा आवासीय खण्ड	5 हेक्टेयर
3	कुल वन एवं जैव विविधता युक्त क्षेत्र (पहाड़ी सहित)	54 हेक्टेयर
4	प्रशिक्षण कक्ष	8 कक्ष 24 से 45 व्यक्तियों की क्षमता
5	कॉन्फ्रेन्स हॉल	60 व्यक्तियों की क्षमता
6	ऑडीटोरियम	165 व्यक्तियों की क्षमता
7	प्रयोगशालाऐं	वाटर एण्ड लेंड मेनेजमेंट लेब, जीआईएस एण्ड आरएस यूनिट, जीओपीपी यूनिट, हाईड्रोलिक लेब (निर्माणाधीन)
8	कम्प्यूटर लैब	30 व्यक्तियों की क्षमता
9	वाटर एण्ड सेनिटेशन टेक्नोलॉजी पार्क विभिन्न प्रकार की ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबंधन तकनीकों का प्रदर्शन	
10	भोज परिसर	3 वातानुकूलित छात्रावास (148 बेडयुक्त)
11	मैस	200 व्यक्तियों हेतु उत्तम व्यवस्था
12	आवासीय परिसर	विभिन्न श्रेणी के 86 आवासगृह
13	पुस्तकालय	पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकों की सुविधा
14	कलाकाश (OPEN AIR THEATER)	ओपन एयर थियेटर का निर्माण कार्य गैर पारंपरिक निर्माण तकनीक द्वारा किया गया। यह कार्य यथासंभव वेस्ट मटेरियल जैसे कांच की बोतल, प्लास्टिक बोतल, मलबा, मेटल एवं क्रेशर डस्ट आदि से किया गया। निर्माण कार्य का क्षेत्रफल 4200 वर्गफीट है। इस मंच पर 75-100 कलाकार प्रस्तुति दे सकते हैं। इसकी बैठक क्षमता 250 दर्शक है।

प्रमुख प्रशिक्षण विषय एवं विशेषज्ञता के क्षेत्र

1. जल संसाधन नियोजन।
2. सिंचाई प्रणाली का परिचालन एवं रखरखाव।
3. जल विकास प्रणाली।
4. भूमि प्रबंधन।
5. आधुनिक सिंचाई प्रणाली।
6. कृषि विस्तार।
7. भू-जल प्रबंधन।
8. पेय जल प्रबंधन।
9. शहरी जल प्रबंधन।
10. ग्रामीण विकास।
11. ग्रामस्तरीय संस्थायें - स्व सहायता समूह।
12. जलग्रहण क्षेत्र प्रबंधन।
13. जलग्रहण प्रबंधन में सामुदायिक भागीदारी।
14. मृदा-जल-पौध संबंध।
15. स्वच्छता एवं स्वास्थ्य।
16. मृदा विज्ञान।
17. सिंचित एवं वर्षा आधारित फसलें।
18. एग्रीक्लीनिक एवं एग्रीबिजनेस।
19. जलबहाव मापन।
20. कम्प्यूटर एप्लीकेशन।
21. जियोग्राफिकल इंफारमेशन सिस्टम।
22. सिंचाई प्रबंधन।

23. पंचायती राज संस्थाएं।
24. उद्यानिकी एवं वानिकी।
25. आजीविका मूलक गतिविधियाँ।
26. पर्यावरण एवं परिस्थितिकीय विज्ञान।
27. अपशिष्ट प्रबंधन।
28. प्रदूषण नियंत्रण।
29. कार्यालयीन प्रबंधन।
30. सॉफ्ट स्किल विकास एवं उन्नयन इत्यादि।

सम्पादित परियोजनाएं

- मध्यप्रदेश के 1864770 हेक्टेयर क्षेत्रफल में 331 जलग्रहण (आईडब्ल्यूएमपी) परियोजनाओं का मूल्यांकन कार्य
- सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर माइनिंग अफेक्टेड एरियाज अंतर्गत बैतूल जिले में विकास योजना तैयार करने का कार्य
- 10 केडवम परियोजनाओं का थर्ड पार्टी कंकरेन्ट मूल्यांकन
- मध्यप्रदेश हेतु स्टेट स्पेसिफिक एक्शन प्लान फॉर वाटर सेक्टर
- एमपीडब्ल्यूएसआरपी परियोजना के तुलनात्मक प्रभावों हेतु जल उपभोक्ता संथाओं/कृषकों का सर्वेक्षण (2015-16)
- एमपीडब्ल्यूएसआरपी परियोजना के अन्तर्गत जल संसाधन विभाग की जल उपभोक्ता संथाओं का क्षेत्रीय प्रशिक्षण तथा क्षमतावर्धन (2014-15)
- ओंकारेश्वर सागर परियोजना मध्यप्रदेश के सैंच्य क्षेत्र विकास योजना की तैयारी (2010)
- मध्यप्रदेश के चार शहरों का जीआईएस आधारित अर्बन रनऑफ मॉडल का विकास
- भारत सरकार, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा संस्थान को ओम घाटी बेतवा कछार में स्थित प्राचीन जल संग्राहकों एवं सहायक धाराओं की संभावनाओं की खोज के लिये भू-जल पर्यावरणीय अन्वेषण (2008)
- कृषक सहभागिता क्रियात्मक अनुसंधान कार्यक्रम (2007-2012)
- जल संसाधन विभाग की प्रशिक्षण आवश्यकताओं का सर्वेक्षण (2007)
- एनआरईजीएस मध्यप्रदेश के अन्तर्गत होशंगाबाद तथा जबलपुर जिलों का पर्सपेक्टिव प्लान(2006-2007)
- सम्राट अशोक सागर परियोजना का परियोजनोत्तर अध्ययन (2006)
- राष्ट्रीय काम के बदले अनाज योजना अंतर्गत बड़वानी जिले का पर्सपेक्टिव प्लान (2005)
- डेनिडा अथोरिटी डेनिस एम्बेसी के अन्तर्गत म.प्र. के रतलाम धार एवं झाबुआ जिलों में ग्राम स्तरीय संस्थानों का प्रभावी मूल्यांकन (2004)
- मध्यप्रदेश के चयनित जिलों में पानी रोको अभियान का मूल्यांकन (2003)
- धवोटी माईक्रोवाटरशेड जिला सीहोर का पार्ट डेव्हलपमेन्ट (1998)
- सेमी माईक्रोवाटरशेड जिला सीहोर का विकास (1997-2002)
- बारना परियोजना में कम्युनिटी बेस्ड स्प्रिंकलर सिंचाई योजना की स्थापना (1997)
- वाधेला वाटरशेड जिला राजगढ़ के लिए कार्ययोजना का विकास (1996)
- चम्बल कमाण्ड में सॉयल सेलिनिटी एवं अल्कालिनिटी का अध्ययन (1996)
- बारना सिंचाई परियोजना का कम्प्यूटराईज्ड ऑपरेशन प्लान तैयार करना (1995-1997)
- सम्राट अशोक सागर परियोजना का सॉशियोइकोनोमिक बेन्च मार्क अध्ययन (1993)
- चम्बल परियोजना फेज-2 का प्रबंध एवं अनुरक्षण अध्ययन (1993)
- पलेवा (प्री-सोयिंग) सिंचाई पर अध्ययन (1992)
- पिटकुही गांव में एलआईएस में कृषक संगठनों की आर्थिकी (1992)
- सिस्टम ऑपरेशन एवं वॉटररिलीज हेतु मार्गदर्शिका (1990)
- जल संसाधन विभाग का मेनपावर असिस्मेंट अध्ययन (1989)
- सिंचाई परियोजनाओं में कृषक संगठन का अध्ययन (1988-1993)
- मध्यप्रदेश की चयनित सिंचाई परियोजनाओं में क्रियात्मक अनुसंधान कार्यक्रम (1987-1993)

आत्म विश्लेषण

प्रदेश के प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, संवर्धन एवं प्रबंधन जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्र में कार्य किये जाने हेतु विकसित किया गया। वाल्मी संस्थान विगत वर्षो में प्रशासकीय, प्रबंधकीय, वित्तीय एवं तकनीकी कारणों से लक्ष्यों एवं उद्देश्यों की प्राप्ति में लगातार पिछड़ता जा रहा था। इस असंतोषजनक प्रगति के कारणों एवं कमियों को ज्ञात करने हेतु आत्म विश्लेषण किया गया। जिसमें संस्थान की क्षमताओं के अनुकूल परिणाम न मिल पाने के मुख्य कारकों को चिन्हांकित कर संस्थान के सतत् विकास एवं लक्ष्यों की प्राप्त हेतु किये जाने वाले आवश्यक कार्यो के चरणबद्ध क्रियान्वयन की रणीनीति तैयार कर लागू की गई।

महत्वपूर्ण चिन्हांकित कारक

- प्रशिक्षण एवं कार्यालयीन अधोसंरचना के विकास एवं रखरखाव में कमी।
- संबंधित विभागों द्वारा सीमित प्रशिक्षणों का आवंटन।
- तकनीकी स्टॉफ की कमी के कारण प्रशिक्षण गुणवत्ता में गिरावट।
- प्रशिक्षणों से होने वाली आय में निरंतर कमी।
- सीमित बजट एवं असुरक्षित क्षेत्र होने के कारण प्रदर्शन प्रक्षेत्र विकास गतिविधियों का लगभग समाप्त हो जाना।
- सीमित संसाधनों के कारण विभिन्न विभागीय परियोजनाओं का आवंटन प्राप्त न होना।
- कलियासोत तालाब के निकट सुंदर पहाड़ी पर स्थित होने के उपरांत भी प्रशिक्षण वातावरण (Ambience) का न होना।
- उपलब्ध सीमित संसाधनों की क्षमताओं का भी दक्षता पूर्ण उपयोग न हो पाना।
- कुशल एवं पूर्णकालिक नेतृत्व न मिल पाना।
- संस्थान के स्टॉफ को नियमानुसार प्रचलित स्वत्वों का भुगतान न हो पाना।
- शासन द्वारा सीमित वित्त पोषण इत्यादि।

इन सबके कारण संस्थान की स्थिति अत्यंत ही चिंतनीय हो गई थी एवं जब आय से ज्यादा व्यय परिलक्षित होने लगे तब संस्थान शासन के लिए एक बोझ बन गया। इसे अन्यत्र स्थानांतरित किये जाने के प्रस्ताव भी आने लगे थे।

आत्मनिर्भर वाल्मी
चरणबद्ध नियोजन एवं क्रियान्वयन

आत्मनिर्भर वाल्मी की परिकल्पना को साकार किये जाने हेतु सर्वप्रथम संस्थान की SWOT Analysis (Strengths, Weaknesses, Opportunities and Threats) की गई जिसमें संस्थान के मजबूत पक्षों, कमजोरियों, अवसर एवं आशंकाओं का सूक्ष्म स्तर पर विश्लेषण किया गया। परिणामस्वरूप यह स्पष्ट हुआ की अत्यंत सीमित वित्तीय संसाधनों (बजट/आय) के कारण संस्थान की समस्त कमियों को एक साथ दूर किया जाना संभव नहीं है। अत: वित्तीय स्थितियों को ध्यान में रखते हुए प्राथमिकता के आधार पर चरणबद्ध नियोजन एवं क्रियान्वयन किया जाना ही एकमात्र विकल्प है। तदानुसार इस रणनीति को निम्नानुसार अपनाया गया :

1. प्रशिक्षण गुणवत्ता :

सर्वप्रथम प्रशिक्षण कार्यक्रमों की गुणवत्ता सुधारने के प्रयास किये गए ताकि वाल्मी से प्रशिक्षित प्रतिभागी न सिर्फ तकनीकी एवं कौशल्य विकास की दृष्टि से परिपूर्ण होकर अपने कार्य स्थल जाकर आवंटित कार्यों को सफलतापूर्वक सम्पादित करें अपितु उनके द्वारा अन्य सहकर्मियों को भी वाल्मी में प्रशिक्षण प्राप्त किये जाने हेतु प्रोत्साहित किया जाए। प्रशिक्षणों की गुणवत्ता सुधारने हेतु किये गए कार्य निम्नानुसार हैं :

- योग्य मानव संसाधनों/व्याख्याताओं का इम्पेनलमेंट
- प्रशिक्षण आवश्यकता का विश्लेषण कर तदानुसार प्रशिक्षण मोड्यूल निर्मित किया जाना।
- प्रतिभागियों से प्राप्त फीडबेक के आधार पर सुधार कार्य।
- उच्च गुणवत्ता की पठन सामग्री तैयार करना।
- प्रतिभागियों हेतु प्रदेश एवं प्रदेश के बाहर तकनीकी दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थलों का भ्रमण आयोजित करना।
- प्रशिक्षण मॉड्यूल्स तैयार करने हेतु विभागीय अधिकारियों से विस्तृत चर्चा कर आवश्यकता अनुसार महत्वपूर्ण विषयों को समायोजित करना।
- प्रतिभागियों की आवश्यकता को ध्यान में रखकर सुझाए विषयों को समायोजित करना।
- दूरस्थ क्षेत्रों में भी प्रशिक्षण प्रदाय करना।
- प्रशिक्षण सत्रों में आवश्यक अनुशासन बनाये रखना।
- प्रतिभागियों से अनौपचारिक समूह चर्चा कर उनसे Bonding स्थापित करना।
- यथाआवश्यक प्रायोगिक/व्यवहारिक सत्र आयोजित किये जाना।

2. प्रशिक्षणों हेतु आवश्यक अधोसंरचनाओं एवं सुविधाओं का सुधार व विस्तार कार्य

प्रशिक्षण सत्रों के सफलतापूर्ण एवं प्रभावी निष्पादन हेतु आधुनिक प्रशिक्षण अधोसंरचना एवं आवश्यक सुविधाओं का होना अतिआवश्यक है क्योंकि स्वस्थ एवं स्वच्छ वातावरण मस्तिष्क की गाह्य क्षमता बढ़ाने में सहायक होता है। अत: संस्थान द्वारा उपलब्ध अधोसंरचना एवं सुविधाओं का उन्नयन किया गया :

- समस्त व्याख्यान कक्षों में आवश्यकता अनुसार फर्निशिंग कार्य जैसे पेंटिंग, फर्नीचर, आधुनिक दृश्य श्रृव्य उपकरण, सामग्री से सुसज्जित किया गया।
- व्याख्यान कक्षों को वातानुकूलित किया गया।
- संस्थान के सभागार (ऑडिटोरियम) का आधुनिकीकरण किया गया।
- 30 कम्प्यूटर की क्षमता युक्त आधुनिक लेब निर्मित की गई।
- प्रदर्शन प्रक्षेत्र पर मृदा जल संरक्षण एवं प्रबंधन, वन विकास जल गृहण क्षेत्र विकास, जैविक खेती, मधुमक्खी पालन, मशरूम उत्पादन, उद्यानिकी इत्यादि तकनीकों को प्रदर्शित किये जाने हेतु विकास कार्य किये गए।
- छात्रावास के कक्षों को वातानुकूलन।
- प्रतिभागियों हेतु विभिन्न क्रीड़ाओं जैसे बेडमिंटन, टेबल टेनिस, चेस, वॉलीवाल, क्रिकेट, रस्सा कशी की सुविधा साथ ही उनके शारीरिक विकास हेतु ओपन एयर जिम का निर्माण किया गया।
- पौष्टिक एवं स्वादिष्ट भोजन हेतु खान-पान सुविधा को आउटसोर्स किया गया एवं खाने की गुणवत्ता की सतत् मॉनिटरिंग की गई।
- शहर से दूर स्थित होने के कारण संस्थान के आस-पास रोजमर्रा की आवश्यकता पूर्ति का कोई साधन नहीं है। प्रतिभागियों को रोज उपयोग में लाई जाने वाली सामग्री जैसे साबुन, टूथपेस्ट, कंघा, तेल, शैम्पू, मॉसकिटो कॉइल इत्यादि का किट प्रदाय किया जाने लगा।
- छात्रावास में फर्स्ट एड किट एवं डॉक्टर की सुविधा प्रारंभ की गई।
- छात्रावास एवं भोजनालयों में साफ-सफाई पर विशेष रूप से ध्यान केन्द्रित किया गया।

- संस्थान के वाचनालय में नई पुस्तकों, जनरल्स, समाचार पत्र इत्यादि का समावेश कर, सुदृढ़ीकरण एवं फर्निशिंग कार्य किया गया।
- सामुदायिक स्तर के प्रशिक्षणों हेतु प्रशिक्षण शुल्क को कम करते हुये प्रतिभागियों के आवास हेतु डॉरमेट्री के रूप में भोज परिसर विकसित किया गया जहाँ लगभग 150 प्रतिभागियों हेतु आवासीय सुविधा विकसित की गई।
- संस्थान परिसर के छात्रावास के कमरों में ए.सी., वायफाय इंटरनेट की सुविधा, ओपन जिम, सेनेट्री नेपकिन वेडिंग मशीन, खेल सुविधायें, लाइब्रेरी में डिजिटलीकरण एवं नवीनीकरण, ओपन क्लास रूम, लघु तालाब, सोलर पेनल, रूफ वाटर हार्वेटिंग, गजीबों का निर्माण आदि सुविधाएं उपलब्ध कराई गई।

3. समन्वयन

- संस्थान द्वारा विभिन्न विभागों से प्रशिक्षण एवं परियोजनाओं हेतु उचित समन्वयन किया गया।
- विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारियों से संस्थान को आवश्यक मार्गदर्शन एवं सहयोग प्राप्त हुआ।
- संस्थान द्वारा अपनी निर्मित क्षमताओं जैसे छात्रावास, व्याख्यान कक्ष इत्यादि को पूर्ण रूप से उपयोग में लाने हेतु समस्त गतिविधियों को वर्ष के पूर्ण कार्यदिवसों में विभाजित कर वितरित किया गया है ताकि निर्मित क्षमता का पूर्ण उपयोग किया जा सके।
- संस्थान ने विभिन्न विभागों के अधिकारियों को समय-समय पर सम्मानित किया जिससे विभागों से प्राप्त होने वाले रिसोर्स में वृद्धि हुई।
- संस्थान द्वारा प्रसिद्ध एवं योग्य गैर शासकीय संस्थाओं जैसे Development Alternative, Water Aid, Club of Rome Oriental College and University इत्यादि को सहयोगी संस्थाओं के रूप में अधिकृत कर अपने कार्यक्षेत्र का विस्तार किया गया।

4. नवाचार

प्रतिभागियों को विभिन्न नवीन तकनीकों का अवलोकन कराने के उद्देश्य से संस्थान के परिसर में विभिन्न उपयोगी नवाचार किये गये जैसे:-

- क्लीन वाल्मी-ग्रीन वाल्मी की अवधारणा अन्तर्गत मेस, प्रक्षेत्र एवं परिसर से प्राप्त जैविक कचरे/अपशिष्ट पदार्थों को चार चक्रीय विधि, कम्पोस्ट मेंकिंग मशीन, नाडेप इत्यादि द्वारा खाद में परिवर्तित कर पौधों/वृक्षों में पोषक तत्वों किये जाने की तकनीक प्रतिभागियों के आवासीय परिसर के निकट प्रदर्शित की गई।
- छात्रावास में छतीय जल संग्रहण तकनीक द्वारा भूजल संवर्धन की विधि अपनाई गई।
- प्रक्षेत्र सुरक्षा हेतु कांक्रीट की दीवार के साथ-साथ बोगन वीलिया पौधों से जैविक बागड़ निर्मित की गई।
- प्रशासकीय भवन की दीवार को ग्रीन वॉल के रूप में विकसित किया गया।
- प्रशासकीय परिसर के आसपास Perforated (छिद्रदार) Pathway निर्मित किया गया ताकि अधिक से अधिक वर्षा जल भूमि में समाहित हो सके।
- जलग्रहण क्षेत्र विकास अवधारणा एव तकनीकी का लाभ हर कृषक तक पहुंचे एवं नदी पुनर्जीवन हेतु अधिक से अधिक मात्रा में अपवाहित जल भूमि में प्रवेश कर सके, इस उद्देश्य से संस्थान द्वारा **''नेनो वाटरशेड''** अवधारणा का विकास कर संस्थान के प्रदर्शन प्रक्षेत्र सफलतापूर्वक क्रियान्वयित किया गया।
- जैव विविधता को जानने, समझने, पहचानने एवं संरक्षित रखने के उद्देश्य से संस्थान में ईकोलोजिकल पार्क निर्मित किया गया।
- प्रदर्शन प्रक्षेत्र पर एवं संस्थान के हिल टॉप परिसर **''वाल्मी''** फॉरेस्ट सिर्फ एक वर्ष में घने जंगल की गांरटी पद्धति द्वारा वन विकास कार्य किया गया।

- संस्थान के दीर्घ अवधि के प्रशिक्षणों को प्रभावी एवं रूचिकर बनाने के उद्देश्य से संस्थान द्वारा ''तनाव रहित प्रशिक्षण'' की अवधारणा विकसित की गई।
- प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन के क्षेत्र में युवाओं को जागरूक एवं कार्य कुशल बनाने हेतु संस्थान में इंटर्नशिप के कई कार्यक्रम आयोजित किये गये।
- वृक्षारोपण, एडवेंचर स्पोर्टस, प्रतियोगिताओं का आयोजन।
- जल के उचित प्रबंधन, संरक्षण एवं संवर्धन हेतु ''जलमित्र'' बनाऐ गये।

5. प्रचार-प्रसार

- संस्थान के क्रियाकलापों एवं गतिविधियों का समाचार पत्रों एवं विभिन्न प्रकाशनों के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाने का महत्वपूर्ण कार्य किया गया। संस्थान की Branding की गई। इसके फलस्वरूप नवीन संस्थाओं द्वारा कार्यक्रम प्रस्तावित भी किये गए, जिससे अतिरिक्त आय प्राप्त हुई।
- राष्ट्रीय एवं प्रांतीय कार्यशालाओं एवं संगोष्ठियों का आयोजन किया गया।
- संस्थान द्वारा अपने सामाजिक दायित्वों का निर्वहन करते हुये प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन के क्षेत्र में सी.एस.आर. अन्तर्गत विभिन्न कार्यक्रम जैसे वैज्ञानिक विधि से वृक्षारोपण कार्य, जैविक खाद निर्माण, वाटरशेड ट्रेकिंग इंटर्नशिप **''प्रकृति के रंग वाल्मी के संग'', ''क्लीन इंडिया ग्रीन इंडिया'', ''वसंतनाद'', ''प्रकृति संरक्षण की क्रांति'', ''वाल्मी संक्रांति मीडिया संग मिलकर करें प्रकृति संरक्षण की क्रांति'', ''वाल्मी संक्रांति, वाल्मी मीडिया साथ मिलकर करे प्रकृति संरक्षण की क्रांति'' 2021, ''एक्सप्लोर नेचर एण्ड फन वाल्मी संग'' 2020, ''नेचर गाला वाल्मी वाला'', ''यहीं धूप यहीं छाँव'' 2020, ''वाल्मी वर्षोल्लास''** 2021 इत्यादि निःशुल्क आयोजित किये गये।

- संस्थान में समय-समय पर विभिन्न विशिष्ट जन जैसे वाटरमेन डॉ. राजेन्द्र सिंह, भूटान के डॉ. छेत्रीय, मानव अधिकार आयोग के अध्यक्ष माननीय एन.के. जैन, आई.आई.टी. मुंबई से डॉ. ए.के. दीक्षित इत्यादि के व्याख्यानों से प्राप्त जानकारी अनुसार नये कार्यक्षेत्र विकसित

6. आय के नए स्त्रोतों का सृजन

- संस्थान में उपलब्ध सुविधाओं एवं संसाधनों जैसे- कलाकाश (Open Air Theater) कम्युनिटी हॉल पर्यटक कॉटेज, छात्रावास इकोलॉजिकल पार्क को वाल्मी के अधिकारियों/कर्मचारियों के साथ-साथ जन सामान्य के लिए भी एक निश्चित शुल्क लेकर उपलब्ध कराया जा रहा है जिससे इस कोरोना काल में प्रशिक्षण आय कम होने से आय के अन्य साधन तैयार किये जा सकें।
- ईकोलॉजिकल ऑक्सीजन पार्क निर्मित किया गया। जहां युवाओं हेतु साहसिक क्रीड़ायें जैसे ट्रेकिंग, राइडिंग, सायक्लिंग, क्लाइम्बिंग इत्यादि को सशुल्क समायोजित किया गया।
- जैविक खाद एवं प्रक्षेत्र उत्पादों की विक्रय सेवाएँ प्रारंभ की गयी।

7. कर्मचारी कल्याण

- संस्थान के नवीन आत्मनिर्भर मॉडल को सफलतापूर्वक लागू करने में संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। इसके लिये टीम वर्क एवं टीम बोन्डिंग की भावना विकसित की गई।
- स्टाफ को प्रोत्साहित करने हेतु विभिन्न क्षेत्रों में समय-समय पर उनके द्वारा किये गये योगदान हेतु उन्हें पुरस्कृत किया गया।
- संस्थान के स्टाफ के वर्षो से लंबित स्वत्वों जैसे समयमान, छठा एवं सातवां वेतनमान, एरियर्स इत्यादि को एल.एफ.ए. से निराकरण के बाद स्वअर्जित आय से स्वीकृत किया गया।
- स्टाफ के साथ समय-समय पर आयोजित मीटिंग में खुलकर अपनी बात रखने के अवसर प्रदाय किये गये।
- सेवानिवृत्त होने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को सेवानिवृत्ति के दिन ही अंतिम स्वत्वों के भुगतान की परंपरा प्रारंभ की गई। जिसमें उनको मानवीय खुशी के साथ-साथ बिना किसी परेशानी के वित्तीय सहयोग भी मिलता है जिससे कर्मचारी मानसिक रूप से भी स्वस्थ रहता है।

- प्राय: देखा जाता है कि शासकीय नियमों में बंधे होने के कारण संस्थान में कार्यरत कर्मचारियों को आकस्मिक परिस्थितियों में भी तात्कालिक वित्तीय सहायता उपलब्ध नहीं कराई जा पाती है।/नहीं मिल पाती है जिसके कारण उनके मन में निराशा उत्पन्न होती है। इस परिस्थिति के निराकरण के लिये संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा अपनी स्वेच्छा से एक कर्मचारी कल्याण निधि का संधारण (कार्यालय के अधीन) किया गया है। इस निधि में संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों को प्राप्त होने वाले भुगतानों (जैसे इंसेटिव/विशेष वेतन, समयमान वेतनमान एरियर्स आदि) एवं अन्य अवसरों पर स्वेच्छा से कुछ अंश जमा किया जा रहा है जिसके परिणाम सुखद दिख रहे हैं। इसका उपयोग संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों के मेधावी बच्चों को उच्च शिक्षा हेतु अनुदान देने में, संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों को अति गंभीर बीमारी एवं दुर्घटना से संबंधित सहायता में, संस्थान के अधिकारियों/ कर्मचारियों को कौशल विकास में, संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों को परिस्थिति अनुसार तात्कालिक सहायता हेतु किया जा रहा है।
- वर्तमान में इस निधि से श्री रमेश चंद्र बुंदेला, (गंभीर बीमारी के इलाज-10000.00 रूपए) श्रीमती स्व. लिम्बाबाई (अकस्मात मृत्यु-10000.00) एवं श्री घनश्याम चौकसे एवं श्री लखन चौकसे (संतान की शादी के अवसर-5000.00 रूपए) पर रू. की आर्थिक सहायता प्रदान की जा चुकी है। इस निधि से सहायता हेतु मापदंड एवं स्वीकृत कर्ता अधिकारी के निर्देश आदि पृथक से निर्धारित किये गये हैं।
- संस्थान के कर्मचारियों को दो राज्यों कर्नाटक एवं गुजरात के वाल्मी में स्टडी टूर पर भेजा गया जिससे नवीन ज्ञान, अनुभव के साथ-साथ उनकी नैतिकता एवं कार्य के प्रति समर्पण में वृद्धि हुई। विगत वर्षो से लगातार कोविड-19 के कारण वर्तमान में यह गतिविधि स्थगित है।
- **संस्थान के अमले का** Multi Tasking **उपयोग किया गया।** उनकी सेवायें ट्रेनिंग कॉर्डिनेटर के रूप में ली जाने लगी। इससे दो वर्षो में रू 9,90,000 की बचत हुई एवं इससे कर्मचारियों में नई ऊर्जा का संचार, उत्साह में वृद्धि एवं संस्थान के प्रति लगन एवं निष्ठा बढ़ी है।

परिणाम

1 कार्यक्रम –

संस्थान द्वारा आत्मनिर्भरता प्राप्त किये जाने हेतु किये गए प्रयासों के परिणामस्वरूप विभिन्न विभागों हेतु सम्पादित किये जाने वाले भिन्न-भिन्न विषयों के कार्यक्रमों एवं उनसे प्राप्त होने वाली आय में उत्साहजनक वृद्धि प्राप्त हुई। प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन एवं अन्य विषयक प्रशिक्षणों जैसे: जल संरक्षण एवं संवर्धन, सैंच्य क्षेत्र विकास, जल गृहण क्षेत्र विकास, आजीविका, जल जंगल जमीन, ईकोलाजी ऑक्सीजन एवं एडवेन्चर स्पोटर्स, जीआईएस एवं रिमोट सेंसिंग, जैविक अपशिष्ट प्रबंधन, नैनो वाटरशेड, वाल्मी फॉरेस्ट से सघन वन विकास, हॉर्टीकल्चर, पंचायत एवं ग्रामीण विकास की योजनाओं इत्यादि विषयों पर सफलतापूर्वक प्रभावी प्रशिक्षणों को सम्पादित किया गया।

विवरण	वर्ष 2014-15 से वर्ष 2017-18 (औसतन)	वर्ष 2018-19 से वर्ष 2021-22 (जुलाई) (औसतन)	रिमार्क
विभाग	12	14	कोरोना महामारी के कारण वर्ष 2020-21 एवं 2021-22 के आवासीय प्रशिक्षण विपरीत रूप से प्रभावित हुए। इन दशाओं में संस्थान द्वारा Online प्रशिक्षणों का आयोजन कर Training Targets प्राप्त किये जाने के पूर्ण प्रयास किये गए।
कार्यक्रम	76	109	
प्रतिभागी	3520	10209	
प्रतिभागी दिवस	20661	25563	
अधोसंरचना उपयोग दिवस	57	153	
आय	**194 लाख**	**649 लाख**	

2 कार्यशालाएं एवं संगोष्ठियां

मानव संसाधन विकास हेतु सम्पादित किये जाने वाली विभिन्न कार्यशालाओं एवं संगोष्ठियों में भी संतोषप्रद वृद्धि दृष्टि-गोचर हुई।

विवरण	वर्ष 2014-15 से वर्ष 2017-18	वर्ष 2018-19 से वर्ष 2021-22 (जुलाई)	रिमार्क
विभाग	2	3	कोरोना महामारी के कारण वर्ष 2020-21 एवं 2021-22 के आवासीय कार्यक्रम विपरीत रूप से प्रभावित हुए। इन दशाओं में संस्थान द्वारा Online कार्यक्रमों का आयोजन कर लक्ष्य प्राप्त किये जाने के पूर्ण प्रयास किये गए।
कार्यक्रम	5	10	
प्रतिभागी	499	675	
प्रतिभागी दिवस	608	872	
अधोसंरचना उपयोग दिवस	2	3	
आय			

3 नवाचार एवं सलाहकारिता सेवाएँ

संस्थान द्वारा अपने परिसर एवं प्रक्षेत्र पर सम्पादित किये गए विभिन्न नवाचारों का आगुंतक अधिकारियों एवं प्रतिभागियों द्वारा अवलोकन किया गया एवं सराहा गया, जिसके परिणामस्वरूप संस्थान को भिन्न-भिन्न विषयों पर सलाहकारिता सेवाएँ प्राप्त हुई एवं आय अर्जन के नवीन स्त्रोत सामने आने लगे। कुछ प्रमुख सलाहकारिता सेवाएँ निम्नानुसार उल्लेखित हैं:

- **वाल्मी पद्धति से सघन वन विकास :**
  वाल्मी फारेस्ट-एक वर्ष में घने जंगल की गारंटी

मध्यप्रदेश जल एवं भूमि प्रबंध संस्थान, भोपाल प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन के क्षेत्र में राज्य का अग्रणी संस्थान है। पर्यावरण सुरक्षा, संरक्षण, संवर्धन एवं विकास हेतु संस्थान द्वारा इस दिशा में विभिन्न नवीन प्रयास किए गए हैं। सघन वनीकरण विधि से कम लागत, कम समय में कम स्थान पर जंगल का विकास एक अभिनव प्रयास सिद्ध हुआ है। संस्थान द्वारा 1 वर्ष के अंदर सघन वन विकास की जापान की मियावाकी पद्धति की तकनीकी जानकारी प्राप्त कर प्रायोगिक परियोजना प्रारम्भ की गयी एवं तदोपरांत स्थानीय दशाओं एवं उपलब्ध संसाधनों के अनुकूल आवश्यक परिवर्तन कर उसका निष्पादन बड़े क्षेत्र में स्थानीय स्तर के संसाधनों का उपयोग कर सघन वनीकरण मॉडल के रूप में किया जा रहा है, जिसे वाल्मी फारेस्ट: एक वर्ष में घने जंगल की गारंटी नाम दिया गया है।

तकनीक :

यह विधि पूर्ण रूप से जैविक है, जिसमें 1 मीटर गहराई के बेड विभिन्न किस्म के कार्बनिक पदार्थों जैसे धान का भूसा, गोबर की खाद, जीवामृत, घानामृत, वर्मीकम्पोस्ट इत्यादि मिट्टी के साथ मिलाकर तैयार किये गये। इन बेड्स में प्रजाति के पौधों का सघन रोपण रैनडम आधार पर किया जाता है। इन रोपित पौधों में केनोपी, वृक्ष, उपवृक्ष एवं झाड़ीदार श्रेणी के पौधों को एक निश्चित अनुपात में लगाया जाता है ताकि जल, सूर्य प्रकाश व पोषक तत्वों के लिए आपसी प्रतिस्पर्धा न होकर मित्रवत व्यवहार रहे। पौध रोपण के बाद वाष्पीकरण द्वारा पानी का नुकसान न हो इसलिए जैविक पलवार का उपयोग किया जाता है।

विस्तार के क्षेत्र:

साधारणतया शासकीय/निजी संस्थानों, विभागों एवं औद्योगिक क्षेत्रों में खुली भूमि की उपलब्धता रहती है एवं उसका उपयोग शनै: शनै: Dumping Yard के रूप में किया जाने लगता है। ऐसे छोटे-छोटे खुले स्थानों/जमीनों पर यदि सघन वनीकरण की यह तकनीक अपनाई जाती है तो पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन के क्षेत्र में यह एक अनूठा प्रयास होगा। साथ ही वर्षा का अपवाहित जल जो उस क्षेत्र से तीव्र गति से निकल जाता है एवं मृदा क्षरण भी करता है उसे भूमि में समाने का अवसर एवं समय मिलेगा जिसका दूरगामी परिणाम भूजल वृद्धि के रूप में दृष्टिगोचर होगा। विभिन्न प्रजातियों एवं किस्मों के इस लघु सघन वन से विभिन्न औषधीय व अन्य उत्पादों की प्राप्ति लाभ का एक स्त्रोत होना भी संभव है। परिसर की सुंदरता में बढ़ोत्तरी एवं शासन द्वारा 30 प्रतिशत क्षेत्र वनाच्छादित रखने की मंशा भी सघन वनीकरण तकनीक से पूर्ण किया जाना संभव है। यदि इस तकनीक को व्यापक स्तर पर अपनाया जाता है तो पर्यावरण संरक्षण, संवर्धन एवं सुरक्षा की दृष्टि से यह एक अत्यन्त प्रभावी पहल होगी।

संस्थान द्वारा वाल्मी पद्धति से किये गए सघन वन विकास का विवरण निम्नानुसार है :

प्रदर्शन प्रक्षेत्र वाल्मी 420 वर्गमीटर 1400 पौधे,
हिल परिसर वाल्मी 250 वर्गमीटर 800 पौधे,
प्रदर्शन प्रक्षेत्र स्वस्तिक वाल्मी 500 वर्गमीटर 1650 पौधे,
हिल क्रिकेट ग्राउंड वाल्मी 2000 वर्गमीटर 6400 पौधे,
खजूरी सड़क, फंदा 90 वर्गमीटर 300 पौधे,
पॉलीटेकनिक कॉलेज, भोपाल 250 वर्गमीटर 800 पौधे,
रविन्द्र भवन, भोपाल 180 वर्गमीटर 600 पौधे,
स्मार्ट सिटी, सतना 500 वर्गमीटर 1650 पौधे,
वल्लभ भवन मंत्रालय के चतुर्थ तल के टेरेस सौंदर्यीकरण 50 वर्गमीटर, 200 पौधे

संस्थान के क्रिकेट ग्राउण्ड के आसपास लगभग 2000 वर्ग मीटर में सघन वनीकरण का कार्य कराया गया है। इस कार्य के सम्पन्न होने से क्रिकेट ग्राउण्ड की सुन्दरता में बढ़ोत्तरी हुई है एवं संस्थान परिसर व शहर में आक्सीजन का स्तर सुधारने में मदद मिलेगी।

इस प्रकार अब तक संस्थान द्वारा कुल 4240 वर्गमीटर क्षेत्र में 14000 पौधे रोपित किये जाकर सफल सघन वन विकास किया जा चुका है एवं बाह्य एजेंसियों हेतु किये गए इस कार्य से संस्थान ने लगभग 26 लाख रूपये की आय अर्जित की है। वर्तमान में संस्थान के पास इस कार्य हेतु कई बाह्य एजेंसियों का निरंतर प्रस्ताव प्राप्त हो रहे हैं एवं संस्थान द्वारा सलाहकारिता सेवाएँ प्रदाय की जा रही है।

महात्मा गांधी राष्ट्रीय रोजगार गारंटी (मनरेगा), मध्यप्रदेश द्वारा जारी किये गए Circulars में इस विधि का संपूर्ण प्रदेश में क्रियान्वयन किये जाने हेतु निर्देश पारित किये गए हैं।

- **मंत्रालय की छत पर ईको फ्रेंडली सौन्दर्यीकरण - प्राकृतिका**

वर्तमान में मानव समाज अपने विकास हेतु प्राकृतिक रूप से विकसित हुए वनों को धीरे-धीरे समाप्त कर, वन क्षेत्रों में अतिक्रमण कर, कांक्रीट जंगलों में परिवर्तित करता जा रहा है, जिसके प्रतिकूल प्रभाव ग्लोबल वार्मिंग, ग्रीन हाउस गैसेस में वृद्धि, प्रदूषण इत्यादि रूप में दृष्टिगोचर होने लगे हैं। ऐसे समय में आवश्यक है कि हम हमारे विकास के साथ-साथ प्रकृति के विकास को भी हमारे बीच स्थान देना सुनिश्चित करें, इससे न सिर्फ पर्यावरण सुधारने में सहायता प्राप्त होगी अपितु प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण एक स्वच्छ एवं स्वस्थ वातावरण निर्मित होगा जो विभिन्न कार्यों के निष्पादन में कार्यक्षमता एवं कार्यदक्षता में वृद्धि करेगा।

वल्लभ भवन एनेक्सी क्रमांक 2 के पांचवे तल पर माननीय मुख्यमंत्री जी का सचिवालय है। चतुर्थ तल पर माननीय मंत्रीजी, स्कूल शिक्षा एवं सामान्य प्रशासन विभाग तथा मुख्य सचिव महोदय, म.प्र. शासन का कार्यालय है। यहां के टैरेस पर विभिन्न आयोजन होते रहते है। माननीय मंत्री महोदय, म.प्र. शासन, स्कूल शिक्षा एवं सामान्य प्रशासन विभाग श्री इन्दर सिंहजी परमार द्वारा यह अनुभव किया गया कि यहाँ स्थित टैरेस का ईको फ्रेंडली पद्धति से प्राकृतिक सौन्दर्यीकरण किया जाये। इस महत्वपूर्ण कार्य का निष्पादन वाल्मी, भोपाल द्वारा किया जाना प्रस्तावित किया गया।

संस्थान के लिए ''वाल्मी शीघ्र सघन वन विकास पद्धति-वाल्मी फॉरेस्ट'' का उपयोग कर सीमित बजट में मंत्रालय के चतुर्थ तल के टैरेस का सौन्दर्यीकरण किया जाना निश्चित रूप से एक चुनौतीपूर्ण कार्य था क्यूंकि, कांक्रीट के धरातल पर न तो विधि अनुसार क्यारियां बनाई जा सकती थी और न ही बड़ी मशीनों का उपयोग कर अन्य कार्य निष्पादित किये जा सकते थे। इन दशाओं में संस्थान द्वारा प्रस्तावित कार्य निम्नानुसार सम्पादित किया गया :-

- पौध रोपण हेतु विशेष प्रकार की बांस की क्यारियां निर्मित की गयी।
- इन क्यारियों में परा बैंगनी किरणें प्रतिरोधी वर्मी बैग्स को स्थापित किया गया।
- तदोपरांत ''वाल्मी शीघ्र वन विकास पद्धति-वाल्मी फॉरेस्ट'' में उपयोग में लाये जाने वाले जैविक सम्मिश्रण से बैग्स को भरा जाकर आधार तैयार किया गया।
- ईको फ्रेंडली सौन्दर्यीकरण हेतु विभिन्न औषधीय, सुगन्धित एवं वन प्रजातियों का चयन कर रोपित किया गया।
- सांस्कृतिक परिवेश की पृष्ठभूमि निर्मित किये जाने हेतु मांडना एवं लाइन आर्ट द्वारा चित्रण किया गया।
- वातावरण को और अधिक सुन्दर बनाने के उद्देश्य से हैंगिंग प्लांटस लगाये गये।

- टैरेस गार्डन में आम, कचनार, मोगरा, अर्जुन, पीपल, बेलिया, चमेली, सीता अशोक, हैंगिंग ग्रास, रूद्राक्ष, हर्रा, गूलर, शीशम, आँवला, गरूड़ आदि के पौधे रोपित किये गये।
- टैरेस पर किये गये इस ईको फ्रेंडली सौन्दर्यीकरण को ''प्राकृतिका'' नाम दिया गया।

दिनांक 31 जुलाई, 2021 को माननीय राज्य मंत्रीजी, म.प्र. शासन, सामान्य प्रशासन एवं स्कूल शिक्षा विभाग (स्वंतत्र प्रभार) श्री इन्दर सिंह परमारजी द्वारा ''प्राकृतिका'' का लोकार्पण किया गया।

इस अवसर पर प्रमुख सचिव, स्कूल शिक्षा श्रीमती रश्मि अरूण शमी, आयुक्त लोक शिक्षण श्रीमती जयश्री कियावत, आयुक्त राज्य शिक्षा केन्द्र श्री धनराजू एस., संचालक वाल्मी संस्थान श्रीमती उर्मिला शुक्ला, उप सचिव श्रीमती अनुभा श्रीवास्तव, उप सचिव सामान्य प्रशासन श्री डी.के. नागेन्द्र सहित स्कूल शिक्षा, सामान्य प्रशासन एवं पंचायत एवं ग्रामीण विभाग के अधिकारी और कर्मचारी उपस्थित रहे।

● नेनो वाटरशेड – नवीन अभिकल्पना, अवधारणा एवं क्रियान्वयन

वर्तमान में देश में प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजनान्तर्गत जलग्रहण क्षेत्र विकास योजनाऐं संपादित की जा रही है जिनका मूल उद्देश्य जल एवं भूमि जैसे प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित रखकर क्षेत्र का सामाजिक एवं आर्थिक विकास किया जाना है ताकि पर्यावरणीय संतुलन को भविष्य के लिये सुरक्षित रखा जा सके। जलग्रहण क्षेत्र वह क्षेत्र होता है, जिसका अपवाहित जल किसी एक उभयनिष्ठ बिंदु से प्रवाहित होता है। इस आधार पर क्षेत्रफल के अनुसार जलग्रहण क्षेत्रों को अलग–अलग नामों से वर्गीकृत किया गया है, जैसे रीजन, बेसिन, केचमेंट, सबकेचमेंट, वाटरशेड, मिली वाटरशेड एवं माइक्रो वाटरशेड। जलग्रहण क्षेत्र विकास के कार्यो को क्रियान्वित किये जाने हेतु माइक्रो वाटरशेड सबसे छोटी इकाई है, जिसका विकास विभिन्न उपचार कार्यो के माध्यम से ग्राम स्तर पर जलग्रहण समितियां निर्मित कर किया जाता है। समुदाय की आवश्यकता एवं जल एवं भूमि संरक्षण के कार्यो पर आधारित प्रत्येक चयनित माइक्रो वाटरशेड की कार्य योजना निर्मित की जाती है जिसे ग्राम सभा के अनुमोदन उपरान्त जलग्रहण क्षेत्र विकास योजनाओं के दिशा निर्देशों अनुसार क्रियान्वित किया जाता है।

नेनो वाटरशेड आधारित योजना की आवश्यकता क्यों है?

संस्थान द्वारा विगत कई वर्षो से जलग्रहण क्षेत्र विकास की तकनीक एवं उपचार कार्यो पर प्रशिक्षण आयोजित किये जा रहे हैं साथ ही सम्पूर्ण प्रदेश की आई.डब्ल्यू.एम.पी. परियोजनाओं का मूल्यांकन कार्य भी किया जा रहा है। इन प्रशिक्षणों से प्राप्त फीड बेक एवं मूल्यांकन कार्यो के परिणाम इंगित करते हैं कि :–

1. माइक्रो वाटरशेड की कार्य योजना सम्पूर्ण माइक्रो वाटरशेड के क्षेत्र की टोपोग्राफी पर आधारित होती है एवं अधिकांश कार्य समुदाय केन्द्रित होते हैं। इस कारण माइक्रो वाटरशेड के प्रत्येक कृषक को सम्पूर्ण लाभ प्राप्त हो पाना कई बार संभव नहीं होता है।
2. अधिकांश जलग्रहण क्षेत्रों में विकास कार्य बड़ी संरचनाओं जैसे चेक डेम, स्टॉप डेम इत्यादि के निर्माण पर केन्द्रित रहा एवं इन संरचनाओं का लाभ कुछ चुनिंदा कृषकों को ही प्राप्त हुआ।
3. सम्पूर्ण जलग्रहण क्षेत्र में उपचार कार्य किये जाने की बजाय चंद बड़ी संरचनाऐं ही निर्मित किये जाने के कारण वर्षा जल की एक छोटी मात्रा ही भूमि में प्रवेश कर पा रही है एवं अधिकांश वर्षा जल अपवाहित (Runoff) हो जाता है। इस कारण भूजल स्तर में बढ़ोत्तरी के आशातीत परिणाम नहीं मिल पा रहे हैं।
4. बड़ी संरचनाओं का रखरखाव समुदाय आधारित होने के कारण संतोषप्रद नहीं रहा है क्योंकि संरचना के प्रति अपनत्व की कमी पाई गई है।

नेनो वाटरशेड कार्य योजना का स्वरूप :

माइक्रो वाटरशेड के समस्त कृषकों को जलग्रहण क्षेत्र विकास की तकनीकों एवं परिणामों का पूर्ण लाभ प्राप्त हो सके इस हेतु संस्थान (वाल्मी), भोपाल द्वारा नेनो वाटरशेड (Nano Watershed) विकास की अभिकल्पना कर योजना बनाई गई है जिसे संस्थान के प्रदर्शन प्रक्षेत्र पर सफलतापूर्वक क्रियान्वित किया जा रहा है। नेनो वाटरशेड जलग्रहण क्षेत्र की सबसे छोटी इकाई मानी गई है, जिसका क्षेत्र कृषक की सम्पूर्ण भूमि रहेगी एवं इस भूमि पर सम्पूर्ण विकास एवं उपचार कार्य जलग्रहण क्षेत्र विकास की अवधारणा के अन्तर्गत किया जावेगा तथा इसका सम्पूर्ण लाभ भी भूमि स्वामी को ही प्राप्त होगा। नेनो वाटरशेड का क्षेत्र न्यूनतम 1 हेक्टेयर भी हो सकता है। इस तरह माइक्रो वाटरशेड के समस्त कृषकों की भूमियों को नेनो वाटरशेड्स के रूप में विभक्त किया जाकर विकास कार्य किया जावेगा।

- इस योजना में एक हेक्टे. भूमि यूनिट के रूप में मानी जाकर उसपर समग्र भूमि विकास योजना का मॉडल तैयार किया जाता है।
- सर्वप्रथम भूमि को उसके सामर्थ्य अनुसार तीन भागों में विभक्त किया जाता है।
- भूमि का चयन इस प्रकार से किया जाता है कि जिसमें सबसे ऊपरी हिस्से में मिट्टी एवं जल संरक्षण के कार्य होते हैं। इस क्षेत्र से बह कर आने वाले पानी को भूमि के दूसरे निचले हिस्से में संग्रहित किया जाता है। सबसे निचले हिस्से में संग्रहित जल का उपयोग करते हुए उद्यानिकी एवं अन्य आय मूलक गतिविधियों ली जाती है। सामान्य रूप से भूमि का तीन हिस्सों में विभाजन अनुपात क्रमशः 30 प्रतिशत, 20 प्रतिशत एवं 50 प्रतिशत रहता है।
- सबसे ऊपरी प्रथम भाग का भूमि उपयोग जल के संवर्धन एवं संरक्षण हेतु सुनिश्चित किया जाता है। इस भाग में जल संवर्धन की विभिन्न संरचनाएं जैसे – कंटूर खंतियां, गली प्लॅग जैसे अवरोधक निर्मित किये जाते है, जिससे पानी की बहाव दर कम हो उसे भूमि में समाहित होने का अधिक समय मिले। इस क्षेत्र में सघन वनीकरण जो समोच्य रेखा पर अर्थात ढाल के विपरीत किया जाता है भी पानी की गति कम कर उसे भूमि में अधिक मात्रा में प्रवेश करने में सहायक सिद्ध होता है।
- दूसरे हिस्से का उपयोग जल संग्रहण हेतु किया जाता है। इससें एक तालाब निर्मित किया जाता है जिसमें भूमि के ऊंचे भाग पर से आने वाले समस्त जल निकास को एकत्रित किया जाता है। इस तालाब में मत्स्य पालन किया जा सकता है। इस तालाब में प्रक्षेत्र के प्रथम दो तिहाई भाग का वर्षा जल जिसका व्यर्थ निकास होता है, संग्रहित किया जाता है। अन्य ऋतुओं में भूमिगत जल स्त्रोतों से, जहां उपचार कार्य से भूमिगत जल संरक्षित किया गया है, तालाब को कृत्रिम रूप से भी भरा जा सकता है।
- जल संग्रहण क्षेत्र में मत्स्य पालन के साथ–साथ मुर्गी पालन सफलता पूर्वक किया जा सकता है। मुर्गी पालन का शेड इस संग्रहण क्षेत्र के ऊपर निर्मित किया जा सकता है। मुर्गियों का बीट मछलियों के आहार के रूप में प्रयोग होता है।
- भूमि के सबसे नीचे के एक तिहाई भाग का उपयोग कृषि, उद्यानिकी व अन्य आय मूलक गतिविधियों हेतु सुनिश्चित किया जाता है। इस क्षेत्र में अधिक लाभ देने वाली उद्यानिकी की फसलों जैसे – सब्जियां, फूल वाली फसले इत्यादि लगाई जाती है। इस क्षेत्र में उद्यानिकी एवं वानिकी का सम्मिश्रण किया जाकर अनुरूप रोपण किया जाता है। ध्यान रखने योग्य बात यह है कि समस्त रोपण कार्य ढाल के विपरीत दिशा में किया जाता है।

- वन विकास हेतु औषधीय एवं अन्य घरेलू उपयोग में आने वाली प्रजातियों का चयन कर लगाया जाता है।
- फूलों एवं सब्जियों के परागकणों का व्यवसायिक एवं व्यवहारिक उपयोग हेतु इस क्षेत्र में मधुमक्खी पालन केन्द्र स्थापित किया जाता है एवं प्राप्त शहद का प्रसंस्करण संयंत्र स्थापित कर विपणन किया जाता है।
- इस क्षेत्र में जैविक कृषि को प्रोत्साहित करने की दृष्टि से क्षेत्र के खरपतवार एवं अन्य कूड़ा–करकट को नाडेप, वर्मी कम्पोस्ट इत्यादि तकनीक के माध्यम से जैविक खाद में परिणीत किया जाता है।
- इसी भूमि के एक छोटे क्षेत्र में बटन/आईस्टिर मशरूम की भी पैदावार ली जाती है।

संस्थान के प्रदर्शन प्रक्षेत्र का नेनो वाटरशेड आधारित विकास :

संपूर्ण योजना जल एवं भूमि प्रबंधन संस्थान, भोपाल (वाल्मी) द्वारा उसके 30 हेक्टे. प्रदर्शन प्रक्षेत्र, जो बंजर भूमि की श्रेणी में आता है, में एक मॉडल प्रोजेक्ट विकसित की गई है।

इस योजना के क्रियान्वयन में बंजर भूमि के विकास हेतु जल ग्रहण क्षेत्र विकास तकनीकी के आधार पर विभिन्न मिट्टी व जल संरक्षण, संवर्धन, प्रबंधन एव उपयोग की विभिन्न वैज्ञानिक विधियों का उपयोग किया जाकर भूमि को उत्पादन योग्य बनाया गया है। प्रक्षेत्र के आसपास की पहाड़ियों से आने वाले अपवाहित जल जो अन्यथा मिट्टी का क्षरण करता था, को सुरक्षित निकासी प्रदाय करते हुए विभिन्न मृदा एवं जल संरक्षण संरचनाएं जैसे – कंटूर ट्रेंचस्, लूज बोल्डर स्ट्रक्चर, सैंड बैग स्ट्रक्चर, गली प्लॅग, गेबियन संरचना, वाटर हारवेस्टिंग टैंक इत्यादि निर्मित की गई है। साथ ही भूमि क्षमता के आधार पर भूमि का उपयोग वनीकरण, उद्यानिकी विकास फसलोत्पादन, मछली पालन, मधुमक्खी पालन इत्यादि हेतु किया जा रहा है। समन्वित रूप से की जा रही इन गतिविधियों के क्रियान्वयन से संस्थान का प्रदर्शन प्रक्षेत्र का विकास न सिर्फ पर्यावरण में मैत्रीय है अपितु बंजर पड़ी हुई भूमि का उपयोग किया जाकर आर्थिक दृष्टि से लाभप्रद सिद्ध हुआ है। मंहगे उर्वरकों के उपयोग में कमी लाई जाकर ऑर्गेनिक तरीको को नित्य प्रति व्यवहार में लाया गया है। उद्यानिकी एवं वानिकी फसलों के साथ–साथ मधुमक्खी पालन, मत्स्य पालन, मुर्गी पालन इत्यादि के कार्य किये जाते हैं।

योजना का मूल्यांकन एवं परिणाम

National Institute of Hydrology रूडकी द्वारा संस्थान के प्रदर्शन प्रक्षेत्र पर नेनो वाटरशेड विकास आधारित किये गए। जल संवर्धन एवं जल संरक्षण कार्यो के प्रभावों का विशेष अध्ययन किया गया तथा पाया गया कि संस्थान के प्रदर्शन प्रक्षेत्र पर विकसित की गई विभिन्न मृदा संरक्षण संरचनाओं से मृदा क्षरण जो लगभग 45.6 टन प्रति हेक्टर प्रति वर्ष हुआ करता था वर्तमान में 16.1 टन प्रति हेक्टर प्रति वर्ष हो गया

है। इसी तरह SCS CN मॉडल से ज्ञात किया गया कि संस्थान के प्रदर्शन प्रक्षेत्र परिसर से वर्षा ऋतु में 2.301 लाख घन मीटर जल सतही अपवाहित जल (Surface Runoff) के रूप में प्राप्त होता है एवं प्रक्षेत्र में विकसित की गई विभिन्न जल संरक्षण/संवर्धन संरचनाओं के कारण इस जल का 80 प्रतिशत भाग (1.86 लाख घन मीटर) भू–जल में समाहित हुआ जो लगभाग 6000 व्यक्तियों की जल आवश्यकता आपूर्ति हेतु पर्याप्त है। वाल्मी विधि एवं अन्य विधियों से किये गए वन विकास एवं संरक्षण के कारण प्रक्षेत्र पर एक अनूठी वानस्पतिक जैव विविधता विकसित हुई है एवं इस वन सम्पदा से उत्सर्जित होने वाली ऑक्सीजन न सिर्फ वातावरण के शुद्धिकरण में सहायक है अपितु यह क्षेत्र ऑक्सीजन बैंक के रूप में निर्मित हुआ। यह क्षेत्र भोपालवासियों की ऑक्सीजन आवश्यकता को भी पूर्ण करने में सहायक सिद्ध हो रहा है।

NABARD, Bhopal एवं मनरेगा द्वारा संस्थान को Pilot Project के रूप में नेनो वाटरशेड आधारित विकास कार्यो के प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं जिन पर संस्थान द्वारा कार्य किया जा रहा है।

● रूफ वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम

जल और भूमि प्रबंधन संस्थान (वाल्मी) में स्थित प्रशासनिक ब्लॉक, आवासीय परिसर, मेस और छात्रावासों में पानी के लिए कई नलकूप हैं। छात्रावास सुविधा के विस्तार और पानी की बढ़ती मांग को देखते हुए और हॉस्टल के चारों ओर बगीचों का विकास करने के लिए रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम स्थापित करने की योजना बनाई गई जिसका मुख्य उद्देश्य पानी के मुख्य स्रोत नलकूप को रिचार्ज करना है। छात्रावास परिसर में आर डब्ल्यू एच एस का उपयोग प्रशिक्षुओं के बीच प्रदर्शन से कृत्रिम जल पुनर्भरण के प्रति जागरूकता बनाने के लिए भी किया जा रहा है।

रूफ वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम वह तकनीक है जिसके माध्यम से बारिश के पानी को संरक्षित किया जाता है इस तकनीकी के द्वारा वर्षा जल को छत से एकत्रित कर जलाशयों, भूमिगत टैंक में या सीधे उथले या गहरे एक्वीफर में संग्रहित किया जाता है, छत पर वर्षा जल संचयन का मुख्य उद्देश्य भविष्य के उपयोग के लिए पानी की उपलब्धता है। वाल्मी परिसर में रेन वाटर हार्वेस्टिंग की योजना को राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान के परामर्श से चलाया गया एवं अम्बर फर्म की मदद से कैप्सूल फिल्टर को स्थापित किया गया। बरसाती पानी को वाल्मी की एक हॉस्टल की 250 वर्ग मीटर छत के ऊपर इकट्ठा कर, परिसर के पास स्थित नलकूप की ओर मोड़ दिया गया है। भोपाल में सालाना औसत बारिश 1100 मिमी. होती है। संग्रहण क्षमता को साधारणतया 0.8 लिया जाता है। मात्र एक छत के क्षेत्रफल को औसत बारिश और संग्रहण क्षमता से गुणा करने पर ऐसा अनुमान है कि कुल 2.2 लाख लीटर पानी को सालाना संग्रह कर नलकूप को रिचार्ज किया जा सकेगा।

वाल्मी के सफलतापूर्वक सम्पादित इस नवाचार प्रेरित होकर भोपाल के कई संस्थाओं द्वारा इस तकनीक की सलाहकारिता सेवाएँ प्राप्त किये जाने की मांग प्राप्त हुई है। वर्तमान में संस्थान द्वारा कृषि विभाग के प्रशिक्षण केन्द्र SIAET भोपाल में यह कार्य किया जा रहा है, जिसकी परियोजना लागत लगभग 25.75 लाख रूपए है।

● मिट्टी रहित ग्रीन वाल (Green Wall)

म.प्र. जल एवं भूमि प्रबंध संस्थान (वाल्मी), भोपाल के अधिकारियों द्वारा मिट्टी रहित हरित दीवार विकसित की गई। इस हरित दीवार को बनाने हेतु समतल दीवार पानी की व्यवस्था आवश्यक है। इस तकनीक में मॉस ग्रास का आधार बनाते हुए हेगिंग प्रजाति के पौधों का कम्बीनेशन लगाया जाता है। इस तकनीक द्वारा संस्थान में निर्मित हरित दीवार लगभग एक वर्ष पूर्व तैयार की गई थी, जिसके परिणाम आशा अनुरूप रहें। तकनीक में किसी भी प्रकार के रासायनिक खाद व दवाओं का उपयोग नहीं किया जाता है। इस तकनीक से पौधों में वृद्धि सामान्य पाई गई है। इस दीवार की देखरेख प्रतिदिवस आवश्यक है। इस तकनीक के माध्यम से लगभग 3 मी. x 3 मी. की दीवार में 560 पौधों का पौधारोपण किया गया है, जिसमें देशी मनीप्लांट, सिंगोनियम, क्लोरोफाइटस, रसुलिया, मिल्की, कोलियस, हेगिंग इत्यादि पौधों को रोपित किया गया है। इस हरित दीवार (Green Wall) बनाने पर लगभग रू. 6200/– प्रति वर्ग मी. का व्यय संभावित है। विभिन्न शासकीय एवं अशासकीय कार्यालयों में इस तरह की ग्रीन वाल निर्मित किये जाने हेतु संस्थान को प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं।

● कलाकाश रंगमंच (ओपन एयर थिएटर)

संस्थान में 250 क्षमता का एक खुले रंगमंच का निर्माण किया गया है। यह ओपन एयर थियेटर (कलाकाश) गैर–पारंपरिक निर्माण तकनीक यथा संभव वेस्ट (अनुपयोगी) सामग्री का उपयोग कर बनाया गया है। अनुपयोगी सामग्री में मुख्यत: बिल्डिंग वेस्ट, मेटल, कबाड़, मारबल के टुकडे, कांच एवं प्लास्टिक बाटल आदि का उपयोग किया गया है। इस रंगमंच का 4200 वर्ग फिट में निर्माण किया गया है। निर्मित क्षेत्र 2400 वर्ग फिट है। इस मंच पर 75 से 100 कलाकार एक साथ प्रस्तुति दे सकते है।

अब यह रंगमंच संस्थान के उपयोग के साथ ही बाह्य उपयोगकर्ताओं हेतु भी वाल्मी की कार्यकारिणी समिति द्वारा निर्धारित दरों पर उपलब्ध है जो निम्नानुसार है :–

1. 03 घंटे हेतु रू. 3000 2. 06 घंटे हेतु रू. 6000 3. 12 घंटे हेतु रू. 13000

कलाकाश रंगमंच (ओपन एयर थियेटर)

- **ज्ञान अर्जन संग आय अर्जन (Learning With Earning)**

संस्थान में विगत कई वर्षों से प्रदेश के विभिन्न महाविद्यालयों विशेषकर कृषि अभियांत्रिकी एवं कृषि महाविद्यालयों, बी.एस.एस. महाविद्यालय, करियर महाविद्यालय, एल.एन.सी.टी महाविद्यालय, ओरियन्टल महाविद्यालय, एक्सीलेंस महाविद्यालय इत्यादि से स्नातक एवं स्नाकोत्तर के छात्र-छात्राऐं प्रशिक्षु कार्यक्रम (Internship Programme) अन्तर्गत आते रहे हैं। इन प्रशिक्षुओं से नाममात्र शुल्क प्रभारित कर संस्थान द्वारा इन्हें विभिन्न कार्यों में संलग्न किया जाकर उनके व्यावहारिक कौशल्य का विकास किया जाता रहा है। चूंकि इन प्रशिक्षुओं को संबंधित महाविद्यालयों द्वारा कोई Stipend, Subsidised सुविधा अथवा अन्य आर्थिक सहायता प्राप्त नहीं होती थी। अत: वाल्मी संस्थान में इन प्रशिक्षुओं को अपना खान-पान, रहवास इत्यादि संबंधित व्यय स्वयं ही वहन करना पड़ता था इसलिये सस्ते किराये के मकानों में सामूहिक रूप से इंटर्नशिप अवधि गुजारते थे। संस्थान द्वारा अपने मानदंडों के अनुकूल उन्हें श्रेष्ठ संभव सहायता प्रदाय किये जाने का प्रयत्न किया जाता था।

वर्ष 2019-20 में भी हर वर्ष की तरह कृषि अभियांत्रिकी महाविद्यालय, जबलपुर से बी.टेक अंतिम वर्ष के 30 छात्र-छात्राओं की सूची संस्थान को 4 माही इंटर्नशिप कार्यक्रम (जनवरी-अप्रैल, 2019) संपादित किये जाने हेतु प्राप्त हुई। उसी अवधि में प्रदेश के ग्रामीण विकास विभाग अन्तर्गत कार्यरत राजीव गांधी जलग्रहण क्षेत्र प्रबंधन मिशन द्वारा प्रदेश के समस्त 51 जिलों में जलग्रहण आधारित क्षेत्र विकास की आई.डब्ल्यू.एम.पी. परियोजनाओं (वर्ष 2010-11, 2011-12, 2012-13, 2013-14 एवं 2014-15) के विभिन्न चरणों में किये गये कार्यों एवं प्रक्रियाओं के मूल्यांकन किये जाने का प्रस्ताव संस्थान को प्राप्त हुआ। यह कार्य 331 परियोजनाओं के 18.64 लाख हे. क्षेत्र के 30 प्रतिशत Randomly चयनित क्षेत्र 5.59 लाख हेक्टर में संपादित किया जाना था। संस्थान द्वारा यह कार्य रू. 65/- प्रति हेक्टर की दर से किया जाना स्वीकार किया गया।

संस्थान द्वारा इस मूल्यांकन कार्य में किया जाने वाला भौतिक सत्यापन कार्य, दस्तावेज एवं प्रक्रिया सत्यापन एवं Onsite स्तर जुड़े कार्य Interns से संपादित किये जाने की संभावनाओं पर विस्तृत चर्चा की गई एवं यह पाया गया कि इन Interns द्वारा तकनीकी दृष्टि से महाविद्यालय में Watershed Projects के सभी पहलुओं का अध्ययन किया गया है किन्तु उनका व्यावहारिक रूप से मैदानी क्षेत्रों में पूर्ण Exposure नहीं हो पाया है। अत: इन Interns मूल्यांकन कार्यों में संलग्न किये जाने हेतु विस्तृत कक्षागत एवं व्यावहारिक प्रशिक्षण अति आवश्यक है।

संस्थान द्वारा इन Interns को 15 दिवसीय प्रशिक्षण नि:शुल्क प्रदत्त किया गया, जिसमें जलग्रहण क्षेत्रों के मूल्यांकन से संबंधित समस्त तकनीकी एवं व्यवहारिक जानकारी Field Visits के माध्यम से प्रदाय की गई। तत्पश्चात् Interns को मानदेय आधार पर समस्त परियोजनाओं के मूल्यांकन का कार्य सौंपा गया। प्रारंभिक मूल्यांकन में इन्हें आवश्यक Technical Backup प्रदाय किया गया। संस्थान का यह प्रयोग अत्यंत सफल सिद्ध हुआ एवं अब तक Interns द्वारा प्रदेश की समस्त आवंटित 51 जिलों की 331 IWMP परियोजनाओं के कार्यों का Field Evaluation कर डेटा प्रस्तुत किया जा चुका है। इस कार्य से प्रत्येक Intern को लगभग 1.5 से 2.0 लाख रूपए की आय प्राप्त हुई एवं संस्थान को भी कम लागत में निष्पक्ष परिणाम प्राप्त हुए। इस कार्यक्रम में कुल 37 प्रशिक्षुओं द्वारा 140 दिवस कार्य किया गया, जिसमें मानदेय के रूप में रू.64,75,000/- दिये गए यदि इनके स्थान पर नियमित कर्मचारियों से यह कार्य करवाया जाता तो 1,50,22,000 खर्च होता। इस प्रकार प्रशिक्षुओं के मानदेय पर 85,47,000 रूपये की बचत हुई।

उपरोक्तानुसार कार्य की सफलता के दृष्टिगत संस्थान द्वारा Interns को निरंतर रूप से Empanell किया जाकर इस अवधारणा अंतर्गत विभिन्न परियोजनाओं में सम्बद्ध किया जाना प्रावधानित किया गया है।

हाल ही में नियमित छात्र-छात्राओं के अतिरिक्त अन्य युवाओं एवं इच्छुक व्यक्तियों को भी इंटर्नशिप प्रशिक्षणों से जोडा गया है। कोविड-19 की चुनौतियों को देखते हुये एवं युवाओं को रोजगार प्रदान करने के उद्देश्य से 09 विषयों पर 01 से 05 दिवसीय नि:शुल्क ऑनलाइन इंटर्नशिप कार्यक्रम प्रारम्भ किये गये। इन कार्यक्रमों में निम्न विषय सम्मिलित थे :-

1. जल संरक्षण एवं संवर्धन
2. ईकोलाजी ऑक्सीजन एवं एडवेन्चर स्पोटर्स
3. जलवायु परिवर्तन एवं आपदा प्रबंधन
4. जीआईएस एवं रिमोट सेंसिंग
5. जैविक अपशिष्ट प्रबंधन
6. नैनो वाटरशेड
7. वाल्मीकी पद्धति से सघन वन विकास
8. होर्टीकल्चर
9. ग्रीन वॉल

इसके अतिरिक्त मोतीलाल विज्ञान महाविद्यालय के एमएससी भूगर्भ शास्त्र के छात्रों हेतु भी 02 सप्ताह का इंटर्नशिप कार्यक्रम आयोजित किया गया। विभिन्न इंटर्नस को संस्थान के आगामी गतिविधियों में अर्निंग विथ लर्निंग अवधारणा पर जोडा जायेगा।

- **इकोलोजिकल ऑक्सीजन पार्क**

म.प्र. जल एवं भूमि प्रबंध संस्थान (वाल्मी), भोपाल प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण एवं प्रबंधन हेतु वर्ष 1986 से कार्यरत, प्रदेश के पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग अन्तर्गत, प्रदेश का अग्रणीय प्रशिक्षण संस्थान है। संस्थान द्वारा जलग्रहण क्षेत्र विकास, सैंच्य क्षेत्र विकास, वन क्षेत्र विकास इत्यादि महत्वपूर्ण विषयों पर प्रशिक्षण एवं क्रियात्मक अनुसंधान कार्य सतत् रूप से संपादित किये जाते हैं। प्रशिक्षणों को अधिक व्यावहारिक एवं उपयोगी बनाने के उद्देश्य से संस्थान द्वारा विभिन्न जल एवं भूमि संरक्षण, उपचार एवं प्रबंधन कार्यों को प्रदर्शित किये जाने हेतु प्रक्षेत्र विकास किया गया है।

प्राकृतिक संसाधनों के महत्व, उनके संरक्षण एवं प्रबंधन की तकनीक को आमजन हेतु उपलब्ध कराने हेतु संस्थान द्वारा केम्पस का विकास प्राकृतिक ईकोलॉजिकल ऑक्सीजन पार्क के रूप में निम्न उद्देश्यों हेतु किया गया है :-

उद्देश्य :

1. प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, संवर्धन एवं प्रबंधन की विभिन्न तकनीकों का प्रदर्शन।
2. भिन्न-भिन्न प्रकार एवं ढाल की भूमियों में जल एवं मृदा संरक्षण के उपचार कार्यों का प्रदर्शन।
3. सामान्य जन हेतु प्रदर्शित तकनीकों के अवलोकन के लिये सुलभ पहुंच मार्ग एवं ई-रिक्शा व सायकल सुविधा प्रदाय की जाना।
4. वानस्पतिक जैव विविधता की पहचान, महत्व एवं संरक्षण की विधियां।
5. स्थानीय वानस्पतिक प्रजातियों हेतु जीन बैंक का निर्माण।

6. प्राकृतिक संसाधन संरक्षण, संवर्धन एवं प्रबंधन की तकनीकों का डिस्प्ले बोर्ड पर विवरण।
7. विभिन्न विषयवस्तु विशेषज्ञों द्वारा समय-समय पर व्याख्यानों का आयोजन।
8. भोपाल एवं प्रदेश के विद्यालयों/महाविद्यालयों के विद्यार्थियों में प्राकृतिक संसाधनों की महत्ता के प्रति जागरूकता एवं संवर्धन तकनीकों की जानकारी प्रदाय किये जाने हेतु रियायती दरों पर भ्रमण सुविधा एवं शिविरों का आयोजन।
9. यह ईकोलॉजिकल पार्क एक ऑक्सीजन बैंक के रूप में स्थापित होगा ताकि भोपाल एवं अन्य जगहों से भ्रमण करने वाले प्रतिभागी शुद्ध वायु प्राप्त कर सकें।

प्रदर्शनीय तकनीक/स्थल

- जलवायु परिवर्तन रोधक केन्द्र
- जल प्रबंधन उत्कृष्टता केन्द्र
- प्रदूषण मुक्त केम्पस
- स्वस्थाने (In-situ) एवं परस्थाने (Ex-situ) जैव विविधता संवरक्षण
- कार्बन भंडार क्षेत्र
- सिंचाई विधियाँ
- जैविक खेती / बायोफर्टिलाइजर
- मियावाकी एवं वाल्मीयाकी तकनीक - सघन वन निर्माण
- मृदा संरक्षण तकनीकें
- जल संरक्षण एवं भूजल पुन:भर्रण
- गैर पारंपरिक उर्जा उपयोग (वायु, सूर्य प्रकाश आदि)
- शिक्षा के मॉडल
- वानस्पतिक प्रजातियों का प्रदर्शन
- जैव विविधता से आजीविका
- एग्रो-फॉरेस्ट्री के विभिन्न मॉडल
- वर्टिकल गार्डन
- चिल्ड्रन गार्डन
- ईको सिस्टम इंटरप्रिटेशन केन्द्र
- बर्ड वाचिंग
- मधुमक्खी पालन

- उद्यानिकी
- भूले बिसरे खाद्यान्न
- जीन बैंक
- वन-चर भूमि
- केंटीन-आर्गेनिक फूड
- मशरूम उत्पादन केन्द्र
- मछली पालन
- ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबंधन
- कुक्कुट पालन
- गौशाला
- कम्पोस्ट निर्माण
- जलग्रहण अवधारणा एवं विकास

प्रतिबंधन :

- ज्वलनशील वस्तुऐं साथ लाना
- हानिकारक पदार्थ साथ लाना
- धूम्रपालन/मदिरा या अन्य नशीलों पदार्थ
- पालतू जानवर
- प्रजातियों को संग्रह करना
- प्लास्टिक का उपयोग
- तीव्र ध्वनि
- अपशिष्ट फैलाना

भ्रमण समय एवं प्रवेश शुल्क

प्रात: 10.00 बजे से अपरान्ह 1.00 बजे तक एवं अपरान्ह 2.00 बजे से सायं 5.30 बजे तक (बुधवार अवकाश)

प्रवेश शुल्क :

सुविधा	सामान्य जन हेतु	छात्र/छात्राओं हेतु (पहचान पत्र बताने पर)
प्रवेश	रू. 20/-	रू. 10/-
वीडियो कैमरा	रू. 50/-	रू. 25/-
ई-रिक्शा	रू. 25/- प्रति व्यक्ति	रू. 10/-प्रति छात्र/छात्रा
सायकिल	रू. 10/- प्रति सायकिल	रू. 5/- प्रति सायकिल

**(उपरोक्त दरें 2 घंटे हेतु निर्धारित की गई हैं
तत्पश्चात् भ्रमण जारी रखने पर शुल्क पुन: प्रभारित किया जाएगा)**

लाभ :

1. प्राकृतिक संसाधनों के वैज्ञानिक विधियों से संरक्षण, संवर्धन एवं प्रबंधन को सामान्य जन समझ पायेंगे।
2. जल, जंगल एवं जमीन के महत्व के प्रति जागरूकता विकसित होगी तथा इस क्षेत्र में योगदान देने का कौशल्य विकसित होगा।
3. जैव विविधता को समझना एवं उसके महत्व को जानना सामान्य जन के लिये संभव हो पावेगा।
4. प्राकृतिक संसाधनों के वैज्ञानिक विधियों से संरक्षण, संवर्धन एवं प्रबंधन को सामान्य जन समझ पायेंगे।
5. जल, जंगल एवं जमीन के महत्व के प्रति जागरूकता विकसित होगी तथा इस क्षेत्र में योगदान देने का कौशल्य विकसित होगा।
6. जैव विविधता को समझना एवं उसके महत्व को जानना सामान्य जन के लिये संभव हो पावेगा।
7. विद्यालयों/महाविद्यालयों के युवाओं हेतु प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन जानने/समझने हेतु अध्ययन केन्द्र विकसित होगा।
8. ईकोलॉजिकल पार्क भोपाल शहर के नजदीक होने से जन साधारण के लिये सुगम होगा।
9. मृदा एवं जल संरक्षण के विभिन्न उपचार कार्य / संरचनाऐं देखने हेतु अलग-अलग स्थानों का भ्रमण करना होता है। अधिकांश संरचनाओं को इस 30 हेक्टर क्षेत्र में ही देखा जा सकेगा।
10. कच्ची सड़क, पाथवेज एवं परिवहन की सुविधा होने से विभिन्न गतिविधियों तक की पहुँच आसान होगी एवं अल्प समय में ही अधिकांश जानकारी प्राप्त करना संभव होगा।
11. वानस्पतिक जीन बैंक का लाभ सामान्य जन ले सकेंगे।
12. आगन्तुकों हेतु यह स्थल शुद्ध ऑक्सीजन के बैंक के रूप में कार्य करेगा जहाँ वे शुद्ध प्राण वायु प्राप्त कर सकेंगे।
13. भोपाल शहर की ग्रीन हाउस गैसेस (कार्बन डाइ ऑक्साइड, मीथेन इत्यादि) वृक्षों द्वारा ऑक्सीजन में परिवर्तित होगी एवं शहर का प्रदूषण (एयर पोल्यूशन इंडेक्स) नियंत्रित होगा।

- **एडवेंचर स्पोर्ट्स**

युवाओं में पर्यावरण के प्रति जागरूकता विकसित करने एवं ईकोलोजिकल ऑक्सीजन पार्क के भ्रमण को मनोरंजक बनाने तथा टीम बॉन्डिंग, शारीरिक एवं मानसिक विकास किये जाने के उद्देश्य से पार्क में एडवेंचर स्पोर्ट्स की गतिविधियां विकसित की गई हैं जैसे ट्रेकिंग, साईकिलिंग, जंगल सफारी, क्लाइंबिंग वॉल एवं इंडोर खेल जैसे टेबल टेनिस, कैरम, शतरंज इत्यादि।

यहां सर्व-सुविधायुक्त कैफेटेरिया स्थापित किया गया है।

भ्रमण समय:-

प्रात: 10:30 बजे से अपरान्ह 1:00 बजे तक एवं अपरान्ह 2:30 बजे से सायं 5:00 बजे तक (बुधवार अवकाश)

प्रवेश शुल्क:-

सामान्य जन हेतु प्रवेश रु. 50/-, छात्र-छात्राओं हेतु रु. 30/- (पहचान पत्र बताने पर), (दरें 2 घंटे हेतु)

अब तक संस्थान द्वारा प्रकृति प्रेमियों एवं साहसिक गतिविधियों में रूचि रखने वालों के लिए निम्नानुसार ऐडवेन्चर स्पोर्ट्स कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

- ''वाल्मी नेचर फेस्ट'' 2020
- ''एक्सप्लोर नेचर एण्ड फन वाल्मी संग'' 2020
- ''नेचर गाला वाल्मी वाला'', ''यहीं धूंप यहीं छाँव'' 2020
- ''वाल्मी वर्षोल्लास'' 2021
- ''वाल्मी संक्रांति, वाल्मी मीडिया साथ मिलकर करे प्रकृति संरक्षण की क्रांति'' 2021

इन कार्यक्रमों में प्रतिभागियों को ट्रेकिंग, साईकिलिंग, केम्पिंग, हार्सरायडिंग, केमलरायडिंग आदि का अवसर प्रदान किया गया साथ ही संस्थान के ई-रिक्शॉ के माध्यम से ईकोलोजिकल ऑक्सीजन पार्क का भ्रमण कराया गया। इस कार्यक्रम में शहर के नागरिकों, युवाओं एवं विद्यालयीन व महाविद्यालयीन विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया जिससे संस्थान को रू. 66,320/- की आय अर्जित हुई।

- **स्वच्छ वाल्मी – हरित वाल्मी (Clean Walmi – Green Walmi)**

सुरक्षित पर्यावरण में ही सुरक्षित जीवन की कल्पना की जा सकती है एवं आगामी वर्षो में पर्यावरण सुरक्षा ही जीवन का आधार होगी। म.प्र. जल एवं भूमि प्रबंध संस्थान (वाल्मी), भोपाल द्वारा इसी सिद्धांत के परिपालन में नवाचार के रूप में Clean Walmi – Green Walmi (स्वच्छ वाल्मी – हरित वाल्मी) की अवधारणा को अंगीकृत कर चहुँमुखी प्रयास किये गए। इन प्रयासों से न सिर्फ संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों में पर्यावरण के प्रति चेतना जागृत हुई अपितु संस्थान द्वारा आयोजित किये जा रहे विभिन्न प्रशिक्षणों के प्रतिभागियों के लिये भी वे अत्यन्त लाभप्रद व सार्थक सिद्ध हुये हैं। प्रदेश व देश के विभिन्न क्षेत्रों से आने वाले प्रतिभागी पर्यावरण के प्रति अपने दायित्व को समझ कर इसकी सुरक्षा की सोच को अपने–अपने क्षेत्रों में एक में Environment Ambassador (पर्यावरण दूत) के रूप में प्रसारित कर रहे हैं।

संस्थान के उत्तरोत्तर बढ़ते प्रशिक्षणों के प्रतिभागियों (लगभग 30000 प्रतिभागी प्रति वर्ष) की संख्या के कारण छात्रावास एवं मेस से प्राप्त होने वाले अपशिष्ट पदार्थो की बढ़ी हुई मात्रा, स्टॉफ क्वाटर्स से प्राप्त अपशिष्ट, संस्थान के खुले परिसर से प्राप्त नींदा एवं जगली घास, कार्यालय से प्राप्त अपशिष्ट इत्यादि का प्रबंधन अति आवश्यक हो गया था। अपशिष्ट पदार्थो का अव्यवस्थित निष्पादन अस्वच्छ वातावरण निर्मित कर पर्यावरण को प्रदूषित करने लगा था। वहीं दूसरी ओर संस्थान के प्रदर्शन प्रक्षेत्र एवं अन्य खुली जगहों में विकसित किये जा रहे पौधों/वृक्षों इत्यादि की बढ़ती पोषक तत्व आवश्यकता एवं सिंचाई जल की आपूर्ति किया जाना भी संस्थान के समक्ष एक चुनौती थी। इन समस्याओं का सामना संस्थान द्वारा Clean Walmi – Green Walmi रणनीति पर कार्य कर चरणबद्ध विधि से किया गया।

स्वच्छ वाल्मी (Clean Walmi) – अपशिष्ट पदार्थो का वैज्ञानिक निष्पादन :

संस्थान की अलग–अलग इकाइयों से प्राप्त होने वाले अपशिष्ट पदार्थो की मात्रा एवं इसके प्रकार का आंकलन किया गया एवं तदानुसार अपशिष्ट प्रबंधन की स्थिति अनुकूल तकनीक अपनाई गई।

1. भोजनालय से प्राप्त अपशिष्ट प्रबंधन :

संस्थान की मेस द्वारा प्रति वर्ष 30000 प्रशिक्षणार्थियों के भोजन व्यवस्था की जाती है, जिसके परिणामस्वरूप काफी मात्रा में जैविक अपशिष्ट जैसे फलों एवं सब्जियों के छिलके, बचा हुआ खाद्य पदार्थ इत्यादि प्राप्त होता है। इस जैविक अपशिष्ट के निष्पादन हेतु मेस परिसर में जैविक खाद निर्माण की 3 विधियाँ विकसित की गई।

- **केज वर्मीकम्पोस्ट :**

फलों एवं सब्जियों के छिलके तथा नमक विहीन अपशिष्ट पदार्थो से वर्मीकम्पोस्ट बनाने हेतु वर्मी केज लगाया गया, जिसमें Eisenia Foeteda प्रजाति के केंचुओं द्वारा वर्मीकम्पोस्ट का निर्माण किया जा रहा है।

- **चारचक्रीय विधि :**

मेस परिसर से प्राप्त होने वाला जैविक अपशिष्ट एक साथ प्राप्त न होकर प्रतिदिन अलग–अलग मात्रा में प्राप्त होता है। ऐसे अपशिष्ट से खाद बनाने हेतु मेस परिसर में ईंट/कांक्रीट की चार चक्रीय कम्पोस्ट मेकिंग यूनिट निर्मित की गई।

नॉडेप विधि :

मेस से प्राप्त होने वाले सूखे कचरे, नमक युक्त अपशिष्ट एवं आसपास के क्षेत्र से नींदा सफाई से प्राप्त जंगली घास इत्यादि से खाद प्राप्त करने हेतु मेस परिसर में ही नाडेप इकाई स्थापित की गई, जिसमें हर 4 महीने में लगभग 2 टन जैविक खाद प्राप्त हो रहा है।

- **कम्पोस्ट मेकिंग मशीन :**

संस्थान परिसर के अन्य क्षेत्रों एवं प्रदर्शन प्रक्षेत्र से प्राप्त होने वाले कचरे जिसमें मुख्य रूप से नींदा, जंगली घास, वृक्षों की कंटाई–छंटाई से प्राप्त कचरा इत्यादि सूखी प्रकृति का कचरा सम्मिलित रहता है के निष्पादन हेतु भोज परिसर में कम्पोस्ट मेकिंग मशीन (संयंत्र) स्थापित की गई है। इस मशीन से प्रति दिन 20 किलो जैविक खाद प्राप्त किया जा सकता है। इसी तरह वाल्मी आवासीय परिसर तथा अन्य स्थानों पर सूखे एवं गीले कचरे हेतु पृथक–पृथक डस्टबिन रखवाये गये हैं, जिन्हें साफ सफाई हेतु आउटसोर्स की गई एजेंसी द्वारा खाद निर्माण संयंत्रों पर लाकर पृथक्कीरण (Segregation) किया जाता है एवं खाद बनाई जाती है। कम्पोस्ट मेकिंग मशीन से खाद बनाने की सुविधा वाल्मी आवासीय परिसर में रहने वाले प्रत्येक रहवासी को प्रदत्त की गई है एवं मशीन द्वारा वह स्वयं के घर से निकले जैविक कचरों से खाद बना सकता है एवं उपयोग कर सकता है।

संयंत्र चलाने हेतु संस्थान के 2 सदस्यों के प्रशिक्षित किया गया है।

उपरोक्त वर्णित अपशिष्ट प्रबंधन रणनीति से वर्तमान में न सिर्फ वाल्मी परिसर की समस्त इकाइयों/शाखाओं से प्राप्त अपशिष्ट का वैज्ञानिक प्रबंधन संभव हो पाया है अपितु अपशिष्ट से प्राप्त जैविक खाद का उपयोग परिसर में विकसित किये जा रहे समस्त पेड़ पौधों में किया जाकर उनकी पोषक तत्वों की आवश्यकता की पूर्ति भी संभव हो पाई है। संस्थान द्वारा वर्तमान में **''रसायन रहित खेती''** पर कार्य किया जा रहा है। अपशिष्ट पदार्थो से निर्मित की गई जैविक खाद का विक्रय भी किया जाता है, जिससे संस्थान को अतिरिक्त आय प्राप्त होती है।

स्वच्छता पुरस्कार :

संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करने एवं प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से स्वच्छता पुरस्कार प्रदाय किये जाते है। इन पुरस्कारों को 3 श्रेणी में विभक्त किया गया है।

1. **स्व-स्वच्छता पुरस्कार :** स्वयं की स्वच्छता, रहन सहन एवं प्रस्तुतीकरण पर आधारित पुरस्कार।
2. **स्वस्थाने स्वच्छता पुरस्कार :** संस्थान के उस अधिकारी/कर्मचारी को पुरस्कृत किया जावेगा जो स्वयं के कार्यालय में बैठने के स्थल/कक्ष को स्वच्छ रखता है।
3. **सामूहिक स्वच्छता पुरस्कार :** संस्थान के विभिन्न प्रकोष्ठों/इकाइयों को पुरस्कृत किया जाना प्रावधानित है जिन्होंने अपने प्रकोष्ठ/इकाई को स्वच्छ रखा है एवं कुशल कार्यालयीन प्रबंधन कर रहे हैं।

2. जल मित्र परिकल्पना

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बढ़ रही जल संकट की समस्या को आम जनता से की गई चर्चा में वाल्मी के संज्ञान में यह आया कि कई हितग्राही अपने स्तर पर जल संरक्षण के कार्य करवाना चाहते हैं लेकिन उन्हें कोई तकनीकी मार्गदर्शन उपलब्ध नहीं है। जिसके अभाव में वह जल संरक्षण के कार्य चाहते हुए भी नहीं करा पा रहे हैं। इसी के दृष्टिगत मध्यप्रदेश म.प्र. जल एवं भूमि प्रबंध संस्थान (वाल्मी) द्वारा अपने नैतिक जिम्मेदारियों के निर्वहन के अंतर्गत जलमित्रों के पांच दिवसीय तकनीकी क्षमतावर्धन कार्यक्रम के माध्यम से म.प्र. के प्रदेश के युवाओं को जल मित्र के रूप में चिन्हांकित कर जल आपूर्ति के प्रति आत्मनिर्भरता बढ़ाने, वर्षा जल संग्रह को अधिक से अधिक संग्रहित करने, भविष्य में जल की पर्याप्त उपलब्धता बनाएं रखने तथा वर्षा जल संग्रहण की विभिन्न पद्धतियों को समझने के लिए तक पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं, जिसमें प्रतिभागियों को रेन वाटर हार्वेस्टिंग, रूफ वाटर हार्वेस्टिंग, सोख्ता गड्ढा सहित प्राचीन जल स्त्रोतों के संरक्षण के बारे में विस्तारपूर्वक तकनीकी ज्ञान एवं चिन्हित क्षेत्रों का भ्रमण कराया जाता है।

प्रशिक्षण उपरांत जल मित्रों को आवश्यकतानुसार विभिन्न हितग्राहियों को जल संरक्षण कार्यों के नियोजन क्रियान्वयन संबंधी मार्गदर्शन हेतु भेजा जाता है। यह कार्यक्रम संस्थान द्वारा नि:शुल्क आयोजित किया जाता है एवं जो हितग्राही अपने घरों अथवा परिसर में जल संरक्षण का कार्य कराना चाहते हैं वे नि:शुल्क तकनीकी मार्गदर्शन हेतु मध्य प्रदेश जल एवं भूमि प्रबंध संस्थान में संपर्क कर सकते हैं। जल मित्रों की सूची संस्थान की वेबसाइट www.mpwalmi.org पर भी उपलब्ध है।

3. जैविक बागड़

विगत कुछ वर्षो से संस्थान के प्रदर्शन प्रक्षेत्र के आसपास विभिन्न कॉलोनियों एवं झुग्गी बस्ती की बसाहट एवं मवेशियों की निर्बाध आवाजाही से प्रक्षेत्र में विकसित किये गये विभिन्न तकनीकी संसाधनों को क्षति पहुँच रही थी। ऐसे अवांछनीय प्रवेश को रोकने की दृष्टि से प्रक्षेत्र के चारों ओर बाउंड्री वाल का निर्माण कार्य किया जा रहा है, किन्तु कतिपय असामाजिक तत्वों द्वारा बाउंड्री वाल को क्षति पहुंचा कर प्रक्षेत्र में प्रवेश कर लिया जाता था एवं मवेशियों को भी प्रक्षेत्र में छोड़ दिया जाता था। जिससे प्रक्षेत्र संसाधनों को लगातार क्षति पहुंच रहीं थी। इन दशाओं में संस्थान द्वारा वैकल्पिक सुरक्षा व्यवस्था की दिशा में Live Fencing (जैविक बागड़) लगाये जाने की पहल की गई।

वर्ल्ड एग्रोफारेस्ट्री सेंटर नैरोबी केन्या के अनुसार लाइव ब्रांड प्रक्षेत्र की सीमाओं पर लगाए गए पेड़ों या झाड़ियों की कतारें हैं जो मवेशियों और वन्यजीवों से सुरक्षा प्रदान करती है। विलायती इमली, बांस, सुबबूल, ढेंचा, थोर, पत्थर चटा जैसी झबरीली जड़ों वाले पेड़ और झाड़ियां जैविक बागड़ के रूप में उपयोग की जाती है।

इनकी जड़ें ज्यादा गहरे में न जाकर मृदा की ऊपरी सतह को काफी मजबूती से पकड़ कर रखती हैं जिससे मृदा क्षरण बहुत कम होता है। बाइंडब्रेक के रूप में कार्य करती है, मिट्टी को समृद्ध करती है, मधुमक्खी को भोजन प्रदान करती है, छाया प्रदान करती है और धूल को नियंत्रित करती है, बायो मास में वृद्धि होती है।

इन प्रजातियों के पौधों की जल एवं पोषक तत्वों की आवश्यकता अत्यन्त अल्प होती है एवं इसे मवेशियों द्वारा भी चारे के रूप में उपयोग में नहीं लाया जाता। संस्थान द्वारा जैविक बागड़, हेतु बोगन वीलिया (Bougain Villea), प्रजाति का उपयोग कर 2.5 किलोमीटर की फेंसिंग का कार्य किया गया है।

संस्थान द्वारा की गई यह अनूठी पहल आर्थिक दृष्टि से लाभप्रद होने के साथ-साथ पर्यावरण के मैत्रीय (Eco Friendly) भी है। जहाँ कांक्रीट की बाउंड्री वाल बनाने हेतु फेंसिंग पर किया जाने वाला व्यय लगभग रू. 2500-3000/- प्रति मीटर अनुमानित था वहीं बोगन विलिया की जैविक बागड़ विकसित करने में यह व्यय लगभग रू. 500/- प्रति मीटर हुआ। इसकी लकड़ी/पत्ती/फूलों का कोई उपयोग न होने के कारण नुकसान की सम्भावना नगण्य है।

यदि शासकीय/निजी क्षेत्र में इस तकनीकी को अपनाया जाता है तो न सिर्फ सुरक्षा हेतु निर्मित किये जाने वाली कांक्रीट संरचना की तुलना में कम खर्च में सुरक्षा व्यवस्था की जाना संभव होगा अपितु अपवाहित जल (Runoff) को भूमि के अंदर जाने के अधिक अवसर प्राप्त होंगे एवं भूजल संवर्धन किया जा सकेगा।

- **संदर्भ साहित्य विकसित किया जाना**

संस्थान द्वारा आईडब्ल्यूएमपी परियोजनाओं में कार्यरत वाटरशेड डेव्हलपेंट टीम के सदस्यों हेतु **हाइड्रोलॉजी के सिद्धांत को ध्यान में रखते हुए संरचनाओं के चयन व डिजाइन''** विषय पर कृषि जलवायु, चयन, टोपोग्राफी, भू-आकृति को ध्यान में रखते हुए लिए जा सकने वाले वाटरशेड विकास कार्यों के विकल्प उनके चयन, डिजाइन, प्लानिंग इत्यादि के संबंध में संदर्भ साहित्य तैयार किया गया। संस्थान को उक्त कार्य राजीव गांधी वाटर शेड मिशन द्वारा सौंपा गया था। इस साहित्य को तैयार करने हेतु राजीव गांधी वाटरशेड मिशन द्वारा 2.22 लाख का भुगतान संस्थान को किया गया।

4. क्रियात्मक अनुसंधान एवं परियोजना

- **संस्थान द्वारा प्रदेश में वाटरशेड परियोजनाओं का मूल्यांकन कार्य**

मध्यप्रदेश में राजीव गांधी जलग्रहण क्षेत्र प्रबंधन मिशन द्वारा भारत सरकार द्वारा अप्रैल 2008 में जारी मार्गदर्शी सिद्धांत के आधार पर समेकित वाटरशेड प्रबंधन कार्यक्रम (IWMP) के अंतर्गत विभिन्न वाटरशेड विकास परियोजनाओं के विकास का महत्वाकांक्षी कार्यक्रम चरणबद्ध रूप से प्रारंभ किया गया। राजीव गांधी जलग्रहण क्षेत्र प्रबंधन मिशन द्वारा प्रदेश में सन् 2009-10 से सन् 2013-14 की अवधि में स्वीकृत 447 वाटरशेड परियोजनाओं को क्रियान्वनित किया गया। राजीव गांधी जलग्रहण क्षेत्र प्रबंधन मिशन ने उक्त परियोजनाओं के मूल्यांकन हेतु म. प्र. जल एवं भूमि प्रबंधन संस्थान (वॉल्मी) भोपाल से नबम्बर - 2018 में अनुरोध किया गया। प्रारंभिक विचार विमर्श के पश्चात RGMWM एवं WALMI के मध्य दिनांक 29 जनवरी 2019 को एक अनुबंध हस्ताक्षरित किया गया जिसके अंतर्गत मध्यप्रदेश के समस्त जिलों की कुल 331 परियोजनाओं के न्यूनतम 30% क्षेत्र का मूल्यांकन कर स्वीकृत समय सीमा में सभी परियोजनाओं की, प्रत्येक जिलों

की एवं सम्पूर्ण प्रदेश की मूल्यांकन रिपोर्ट प्रेषित किया जाना है। इस कार्य के लिए RGMWM द्वारा तय राशि वाल्मी को भुगतान की जाएगी। मूल्यांकन कार्यों के सफल निष्पादन हेतु दो वरिष्ठ सेवानिवृत्त अधिकारियों को परामर्शी के रूप में एवं अन्य कर्मचारियों को नियाजित किया गया। साक्षात्कार द्वारा चयनित 13 सिविल इंजीनियर/कृषि इंजीनियर एवं जवाहर नेहरू कृषि विश्व विद्यालय से 4 माह की इंटर्नशिप के लिए वॉल्मी में आए कृषि आभियांत्रिकी के अंतिम वर्ष के 30 विद्यार्थियों को 2 सप्ताह का वाटरशेड विशेषज्ञों द्वारा गहन प्रशिक्षण दिया जाकर मूल्यांकन कार्य के लिए योग्य बनाया गया। सभी जिलों के वाटरशेड नोडल अधिकारियों से वाटरशेड परियोजनाओं एवं माइक्रोवाटरशेड की जानकारी प्राप्त कर एवं प्रत्येक क्षेत्र का भौतिक सत्यापन कर जानकारी एकत्रित करने के लिए WORK PHASE एवं PREPARATORY PHASE के लिए प्रपत्रों की रचना की गई। परियोजनाओं एवं माइक्रोवाटरशेड का मूल्यांकन के लिए चयन पूर्णत: क्रमहीनत: विधि (Random Approach) द्वारा किया गया एवं 2 से 4 मूल्यांकन कर्ताओं के समूह बनाकर उन्हें 50 जिलों की 331 परियोजनाओं का भौतिक मूल्यांकन कार्य पूर्ण कर लिया गया है। साथ ही वर्ष 2010-11, 2011-12 की 196 ब्लॉक स्तर पर प्रतिवेदन एवं वर्ष 2012-13, 2013-14, 2014-15 के ब्लॉक स्तर के 135 प्रतिवेदन तैयार कर लिए गए है। वर्ष 2010-11, 2011-12 के राज्य स्तर प्रतिवेदन तैयार कर लिए गए है एवं जिनके अंतिम प्रतिवेदन राजीव गांधी मिशन (RGM) भोपाल भेजे जा चुके है। वर्ष 2009-10 के राज्य स्तरीय प्रतिवेदन की ड्राट रिपोर्ट राजीव गांधी मिशन (RGM) भोपाल भेजी जा चुकी है इसके उपरांत वर्ष 2012-13 की राज्य स्तरीय प्रतिवेदन को तैयार करने का कार्य प्रक्रिया में है। समय समय पर बैठकों में विचार विमर्श कर मूल्यांकन कार्य को सम्पन्न करने के लिए आवशयक कदम उठाए गए हैं।

इस कार्य हेतु राशि रू. 3.6 करोड़ का बजट स्वीकृत किया गया है एवं संस्थान को अब तक रू. 1.8 करोड़ प्राप्त हो चुकी है।

- **थर्ड पार्टी कॉन्करंट मूल्यांकन कार्य**

संस्थान द्वारा जल संसाधन विभाग की 10 कैडवम परियोजनाओं का (थर्ड पार्टी कॉन्करंट मूल्यांकन का कार्य किया गया। यह परियोजनाऐं सगड़ जिला विदिशा, संजय सागर बाह जिला विदिशा, माही जिला धार, बरियापुर जिला छतरपुर, सिंध फेज-2 जिला शिवपुरी, सिंहपुर जिला छतरपुर, महुअर जिला शिवपुरी, महान जिला सीधी, पेंच जिला सिवनी एवं बाणसागर जिला शहडोल है। इस मूल्यांकन का मुख्य उद्देश्य संबंधित परियोजना के कमाण्ड में जल उपभोक्ता संस्थाओं के अंतर्गत केडवम विकास कार्यो की प्रगति एवं साथ ही कार्यो का तकनीकी मूल्यांकन भी करना था जिससे निर्माण उपरांत परियोजनाओं सतत रूप से प्रभावी एवं टिकाऊ बनी रहें। इस अध्ययन के मुख्य संकेतकों में परियोजना से पूर्व एवं परियोजना के पश्चात सिंचित क्षेत्र, फसल उत्पादकता, फसल सघनता, जल उपयोग दक्षता, जल की उत्पादकता, जीवन स्तर, क्राप डाईवर्सीफिकेशन तथा जल वितरण में समानता का अध्ययन सम्मिलित था। इन मूल्यांकन कार्यों की रिपोर्ट जल संसाधन विभाग के माध्यम से भारत शासन को प्रेषित की जायेगी।

5. मान्यता एवं पहचान

- माह जुलाई 2020 में माननीय मंत्री महोदय की अध्यक्षता में संपादित समीक्षा बैठक में मंत्री महोदय एवं संस्थान के अध्यक्ष द्वारा वाल्मी को ग्रामीण विकास विभाग का Apex प्रशिक्षण संस्थान के रूप में विकसित किया जाना प्रस्तावित किया गया एवं इसके अंतर्गत विभाग के अन्य प्रशिक्षण संस्थान कार्य करेंगे। क्योंकि संस्थान संचालक एक IAS अधिकारी होते हैं एवं अध्यक्ष स्वयं अपर मुख्य सचिव होते हैं अत: इसे एक Resourceful सेंटर के रूप में विकसित कर विभाग के प्रशिक्षणों हेतु Proper Vision निर्मित किया जा सकता है।
- माननीय प्रधानमंत्री जी का सर्वोच्च प्राथमिकता मिशन जल जीवन मिशन को प्रदेश में लागू करने से संबंधित प्रशिक्षण वर्कशॉप सेमिनार माड्यूल्स विकसित करने के लिए प्रदेश के लोक स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग द्वारा संस्थान की दक्षता को देखते हुए चयनित किया गया है। इसके लिए संस्थान को लगभग 5 करोड़ की राशि प्राप्त होगी।
- माननीय प्रधानमंत्री जी का सर्वोच्च प्राथमिकता मिशन अटल भू-जल को प्रदेश में लागू करने से संबंधित प्रशिक्षण वर्कशॉप सेमिनार माड्यूल्स विकसित करने के लिए प्रदेश के जल संसाधन विभाग द्वारा संस्थान की दक्षता को देखते हुए चयनित किया गया है। इसके लिए संस्थान को लगभग 9 करोड़ की राशि प्राप्त होगी।
- NABARD, International Institute of Environment Development द्वारा भी वाल्मी की भूमिका को recognize करते हुए कई कार्यक्रम collaboration में सम्पादित किया जाना प्रस्तावित किया गया हैं।
- जिला बैतूल द्वारा संस्थान में Center for Excellence for Mining Affected Area हेतु सेंटर स्थापित किया गया। इससे संस्थान को 3 करोड़ 41 लाख की राशि प्राप्त होना संभावित है।
- राज्य आजीविका मिशन अंतर्गत संस्थान को Formation of Livelihood and Entrepreneurship Development Cell स्थापित करना प्रस्तावित किया गया है, इससे संस्थान को 9 करोड़ की राशि प्राप्त होना संभावित है।

6. प्रकाशन एवं शोध पत्र

- संस्थान की विविध गतिविधियों के प्रचार-प्रसार हेतु **''इला अमृतम''** पत्रिका का प्रकाशन कार्य प्रारम्भ किया गया है। अभी तक इसके तीन संस्करण प्रकाशित किये जा चुके हैं, प्रथम संस्करण की पृष्ठभूमि **''तनाव रहित प्रशिक्षण''** पर आधारित थी। **''इला अमृतम''** के द्वितीय संस्करण में पृष्ठभूमि **''स्वच्छ वाल्मी-हरित वाल्मी''** रखी गई। मैगजीन का लाभ वृहद स्तर तक विस्तारित किये जाने के उद्देश्य से इसके तृतीय संस्करण का प्रकाशन समस्त गतिविधियों को समाहित कर अंग्रेजी भाषा में किया गया।
- संस्थान द्वारा दिनांक 24-25 अप्रैल 2018 को राज्यस्तरीय प्रशिक्षण संस्थानों हेतु मानक बेंचमार्क निर्धारण विषय पर एक कार्यशाला आयोजिक की गई थी जिसमें 16 राज्यों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। इस कार्यशाला की अनुशंसाओं सम्मिलित करते हुए एक प्रतिवेदन पुस्तिका प्रकाशित की गई।
- संस्थान द्वारा आयोजित बेंचमार्किंग कार्यशाला की अनुशंसाओं के आधार पर संस्थान द्वारा International Journal of Advances in Agricultural Science and Technology में Is Qualilty in Capaciaty Building and Training Institution Development Matters the Most? Setting Benchmarking Process and Benchmark Standards for Training Institutions – WALMI Bhopal a Case in Point विषय पर एक शोधपत्र प्रकाशित किया गया।
- संस्थान द्वारा किए गए तृतीय पक्ष मूल्यांकन की रिपोर्ट्स, थर्ड पार्टी कॉन्करंट के 11 प्रोजेक्ट के मूल्यांकन की प्रोजेक्ट वाइज रिपोर्ट तथा 11 प्रोजेक्ट की समरी रिपोर्ट
- मध्यप्रदेश राज्य में अंतर्गत क्रियान्वयित किये गए जल ग्रहण क्षेत्र विकास कार्यक्रमों के वर्ष 2010-11 एवं 2011-22 के राज्य स्तरीय प्रतिवेदन

अन्य सम सामायिक गतिविधियां

1. सेटकॉम केन्द्रों के माध्यम से वर्चुअल प्रशिक्षण

संस्थान द्वारा सेटकॉम सेन्टर्स के माध्यम से वर्चुअल प्रशिक्षण आयोजित किये गये जिनमें राज्य के सुदूर क्षेत्रों के हजारों प्रतिभागियों को प्रशिक्षित किया गया। संस्थान की यह एक बड़ी सफलता एवं उपलब्धि रही जिसकी सराहना समस्त प्रशासकीय स्तरों पर की गई।

संस्थान द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रमों की योजना तैयार की गई जिसमें कम समय में अधिक प्रतिभागियों को प्रशिक्षित किया गया। पंचायती राज व्यवस्था के अन्तर्गत 22812 ग्राम पंचायतें, 329 जनपद पंचायतें एवं 51 जिला पंचायतों का लक्ष्य रखा गया।

2. प्रशिक्षण संस्थाओं के बेंच मार्क निर्धारण पर कार्यशाला

दिनांक 24-25 अप्रैल 2019 को राज्य स्तरीय प्रशिक्षण संस्थानों हेतु मानक बेंच निर्धारण विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें विभिन्न प्रदेशों के 112 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला में किसी भी प्रशिक्षण संस्था के अकादमिक मानकों जैसे संरचनात्मक मानकों प्रबंधन प्रक्रियात्मक मानक तथा अन्तर इंस्टीट्यूशन लिंकेज संबंधी मानकों को स्थापित करने हेतु विचार विमर्श किया गया।

कार्यालय की अनुशंसाओं को अपर मुख्य सचिव पंचायत एवं ग्रामीण विकास के समक्ष प्रस्तुत किया गया तथा समस्त संस्थाओं को अनुशंसा के लिए प्रेषित भी किया गया।

वाल्मी द्वारा इन अनुशंसाओं के आधार पर विभिन्न मानकों के विरूद्ध अपना स्वयं का आंकलन कर अपनी गुणवत्ता को और अधिक बेहतर बनाने की दिशा में प्रयास आरंभ कर दिए गए हैं।

3. विश्व जल दिवस पर जल साक्षरता संगोष्ठी

दिनांक 27 मार्च, 2019 को विश्व जल दिवस के उपलक्ष्य में जल साक्षरता पर 01 संगोष्ठी का आयोजन प्रदर्शन प्रक्षेत्र पर किया गया जिसमें वाल्मी के समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों के अतिरिक्त विभिन्न महाविद्यालयों/विश्वविद्यालयों के छात्रों द्वारा भाग लिया गया। विशेषज्ञों द्वारा जल संरक्षण की विभिन्न विधियों पर व्याख्यान प्रस्तुत किये गये। इस अवसर पर लगभग 250 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

4. जीआईएस एवं रिमोर्ट सेंसिग तकनीकी एवं इसके अनुप्रयोग विषय पर प्रशिक्षण

संस्थान के कम्प्यूटर सेंटर द्वारा जीआईएस एवं रिमोर्ट सेंसिंग तकनीकी एवं इसके अनुप्रयोग विषय पर फ्री एवं ओपन सोर्स सॉटवेयर के द्वारा 5 दिवसीय 13 प्रशिक्षण कार्यक्रम जल संसाधन विभाग के विभिन्न जिलों में पदस्थ सहायक यंत्रियों के लिए आयोजित किए गए हैं। इसी प्रकार कोविड 19 की चुनौतियों के बीच

जैव विविधता विभाग के अधिकारियों एवं तकनीकी स्टॉफ के लिए जीआईएस एवं रिमोर्ट सेंसिंग तकनीकी के ऑनलाइन प्रशिक्षण आयोजित किए गए है।

युवाओं को रोजगार के अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से जीआईएस एवं रिमोर्ट सेंसिग विषय पर 5 दिवसीय ऑनलाईन इंटर्नशिप प्रशिक्षण आयोजित किया गया।

प्रशिक्षण में प्रदेश एवं देश के ख्याति प्राप्त विषय विशेषज्ञों द्वारा डिजिटल एलिवेशन मॉडल, नक्शों का जियोरिफ्रेसिंग एवं अन्य तकनीकी विषयों पर व्याख्यान एवं प्रेक्टिकल कराए गए।

भविष्य में भी जीआईएस एवं रिमोर्ट सेंसिंग तथा कम्प्यूटर विषय संबंधित अन्य विषयों पर एडवांस प्रशिक्षण प्रारंभ किए जाएंगे।

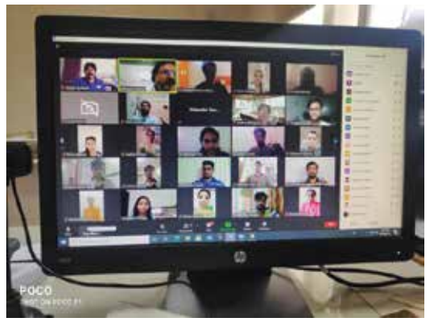

5. जल का अधिकार पर कार्यशाला

संस्थान द्वारा जल का अधिकार विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन मानव अधिकार आयोग के तत्वाधान में दिनांक 13 सितम्बर 2019 को किया गया जिसमें लगभग 200 प्रतिभागी सम्मिलित हुए। प्रतिभागियों द्वारा इस विषय में विभिन्न ज्वलन्त मुद्दों पर चर्चा की गई जिनमें विषय विशेषज्ञ भी सम्मिलित रहे।

6. बजट बनाने हेतु कार्यशाला

संस्थान द्वारा विषय में दो दिवसीय कार्यशाला 8-9 अप्रैल 2019 को आयोजित की गयी जिसमें मध्य प्रदेश पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग के विभिन्न प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत लेखा संबंधी अमला एवं विभिन्न सनदी लेखाकार सम्मिलित हुए।

- कार्यशाला में विभिन्न प्रशिक्षण संस्थानों का बजट तैयार करना, आय-व्यय शेष से राशि का उपयोग करना, आयमूलक स्त्रोतों का सृजन करना बताया गया।
- कार्यशाला में एक वित्तीय वर्ष के लिए प्रशिक्षणवार एवं प्रशिक्षणार्थीवार आय-व्यय पत्रक तैयार करना भी बताया गया।
- प्रशिक्षण आवश्यकता विश्लेषण, प्रशिक्षण आवंटन एवं प्रशिक्षण कैलेण्डर तैयार करना भी कार्यशाला में समझाया गया।

7. आईएसओ 21001-2018 प्रमाणीकरण प्रशिक्षण

संस्थान को आईएसओ 21001-2018 प्रमाणीकृत कराये जाने के प्रयास किये जा रहे हैं, इस संदर्भ में नाबेट द्वारा निर्धारित ऐजेन्सी क्वालिटी आस्ट्रिया सेन्ट्रल एशिया प्रायवेट लिमिटेड के माध्यम से कार्यालयों में आंतरिक लेखा परीक्षण के संबंध में प्रशिक्षण प्रदान किया गया। यह तीन दिवसीय प्रशिक्षण दिनांक 1-3, अगस्त 2019 की अवधि में आयोजित किया गया जिसमें संस्थान के विभिन्न स्तर के अधिकारी/कर्मचारी सम्मिलित हुए।

8. ग्राउंड वाटर मॉडलिंग विषय पर कार्यशाला

वाल्मी एवं राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में ग्राउण्डवाटर मॉडलिंग विषय पर एक कार्यशाला दिनांक 4 से 6 सितम्बर 2018 की अवधि में आयोजित की गई जिसमें 21 प्रतिभागियों/प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया।

9. सामाजिक दायित्वों निर्वहन

विगत वर्षों में विकास के क्षेत्रों में मिली सफलता के साथ पर्यावरण का विनाश अत्यन्त चिन्तनीय रूप से दृष्टिगोचर हुआ है एवं पर्यावरण की सुरक्षा, संरक्षण एवं संवर्धन हेतु अथक प्रयासों की आवश्यकता महसूस की जा रही है। हमारी युवा पीढ़ी में पर्यावरण सुरक्षा के प्रति जागरूकता, समझ एवं अभिवृत्ति विकसित किया जाना अत्यन्त आवश्यक प्रतीत होता है क्योंकि तभी एक सुरक्षित भविष्य की कल्पना की जा सकती है।

हर वर्ष पर्यावरण सुरक्षा के प्रति जागरूकता पैदा करने कितनी ही रैलियों एवं सम्मेलनों का आयोजन किया जाता है किन्तु इनके आयोजन के पश्चात् आगे क्या और कैसे करना है एक प्रश्न के रूप में सामने आता है और इसका जबाव न मिल पाने पर सामान्यजन एवं युवाओं में पर्यावरण, संवर्धन एवं संरक्षण हेतु कैसे कदम बढ़ायें इस बात पर असमंजस्य की स्थिति रहती है।

म.प्र. जल एवं भूमि प्रबंध संस्थान, भोपाल द्वारा इस दिशा में सकारात्मक पहल करते हुये अपने सामाजिक दायित्वों के निर्वहन के अन्तर्गत प्रदेश के विभिन्न महाविद्यालयों के युवा छात्र-छात्राओं हेतु तकनीकी कार्यशालायें आयोजित की गई। इन कार्यशालाओं में न सिर्फ पर्यावरण सुरक्षा एवं संवर्धन के प्रति जागरूकता विकसित किये जाने हेतु विभिन्न महत्वपूर्ण व्याख्यान आयोजित किये गये अपितु यह कार्य कैसे किया जाना है। इस संबंध में आवश्यक तकनीकी जानकारी प्रदाय करते हुये कार्यशाला के प्रतिभागियों से स्वयं करें (Do it yourself) की अवधारणा अपनाते हुये व्यावहारिक रूप से कार्य निष्पादित करवाया गया।

संस्थान के प्रदर्शन प्रक्षेत्र पर 27 जुलाई, 2018 को वृक्षारोपण पर ''तकनीकी आधारित कार्यशाला'' आयोजित की गई। इस कार्यशाला में विभिन्न महाविद्यालयों, नेहरू युवा केन्द्र, आई.डी.बी.आई. बैंक, एस.बी.आई. बैंक इत्यादि के अतिरिक्त संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा भाग लिया गया।

कार्यशाला में प्रतिभागियों को वृक्षारोपण की वैज्ञानिक दृष्टि से सही, सरल एवं भूमि प्रकार पर आधारित उपयुक्त तकनीक सिखाई गई। भूमि सामर्थ्य वर्ग के अनुसार वृक्ष प्रजातियों का चयन एवं रोपण पद्धति संबंधित आवश्यक जानकारी भी दी गई। साथ ही प्रदेश की पड़त एवं बंजर भूमियों हेतु किन प्रजातियों के पौधे कैसे लगाये जा सकते हैं की व्यावहारिक विधियों से अवगत कराया गया। कार्यशाला में पधारे समस्त प्रतिभागियों द्वारा संस्थान के प्रदर्शन प्रक्षेत्र में विभिन्न तरह की भूमियों में वृक्षारोपण किया गया। इस श्रमदान से संस्थान को आर्थिक लाभ भी हुआ।

कार्यशाला की सफलता को देखते हुये भोपाल के अन्य शैक्षणिक संस्थानों द्वारा भी उनके लिये ऐसी कार्यशाला आयोजित किये जाने हेतु वाल्मी से सम्पर्क किया जा रहा है।

इसी तरह संस्थान द्वारा जन-जन तक अपशिष्ट प्रबंधन की महत्ता एवं उसकी तकनीक के प्रचार प्रसार हेतु स्वच्छता पखवाड़े के अन्तर्गत दिनांक 29 सितम्बर, 2018 को ''कचना निष्पादन तकनीक'' विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में विभिन्न महाविद्यालयों से आये छात्र-छात्राओं ने कचरा प्रबंधन की तकनीक सीखी एवं श्रमदान कर बरसात में रोपित किये गये पौधों की निंदाई गुड़ाई से प्राप्त कचरे को जैविक खाद में परिणित किये जाने का कार्य किया गया। प्रतिभागियों को जैविक कचरे से खाद बनाने की अन्य तकनीकों जैसे नाडेप, वर्मीकम्पोस्ट, बैंगलोर विधि, इन्दौर विधि इत्यादि से भी अवगत करवाया गया। कार्यशाला में घरेलु जैविक कचरे से खाद बनाने की तकनीक भी बताई गई। कार्यशाला में संस्थान के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा भी श्रमदान कर भाग लिया गया। कार्यशाला सामाजिक दायित्वों का निर्वहन करने के उद्देश्य से नि:शुल्क आयोजित की गई।

तकनीक आधारित इन कार्यशालाओं के परिणाम बहुत ही उत्साहजनक एवं प्रभावी रहे हैं एवं भविष्य में अन्य महाविद्यालयों द्वारा भी इस तरह की कार्यशाला आयोजित किये जाने की मांग प्राप्त हो रही है।

● प्रकृति के रंग वाल्मी के संग:

संस्थान द्वारा युवाओं को शहर के निकट प्रकृति के नैसर्गिक सौंदर्य से जोड़ने के लिए इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें पौधरोपण, ट्रेकिंग, पारम्परिक खेलकूद, फूड फेस्टिवल, सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ साथ प्रश्नमंच प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। कार्यक्रम के समापन अवसर पर श्री मनोज श्रीवास्तव, अपर मुख्य सचिव पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

● वसंतनाद

संस्थान में दिनांक 13-14 मार्च 2021 को वसन्तनाद का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न प्रतियोगिताओं (रंगोली, पीला व्यंजन, फोटोग्राफी, चित्रकला, गायन, वादन, नृत्य नाटिका, क्रिकेट, चेयर रेस तथा कैरम) का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता सभी के लिये खुली रखी गई, जिनमें संस्थान के अधिकारी/ कर्मचारियों के साथ शहर के अन्य प्रतिभागी भी सम्मिलित हुए थे। इसके अलावा संस्थान में खानपान स्टाल तथा प्रायोजकों के स्टाल इत्यादि आकर्षण का केन्द्र रहे। प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले शीघ्र प्रतिभागियों को पुरस्कृत प्रदान किया गया।

पीला व्यंजन प्रतियोगिता

चित्रकला प्रतियोगिता

क्रिकेट प्रतियोगिता

मेंहदी प्रतियोगिता

रंगोली प्रतियोगिता

रंगोली प्रतियोगिता

पंचायती राज सम्मेलन में संस्थान की प्रदर्शनी

दिनांक 23 फरवरी, 2019 को माननीय मुख्यमंत्री जी की अध्यक्षता में भोपाल के भेल दशहरा मैदान पर पंचायती राज सम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में संस्थान की ओर से एक प्रदर्शनी लगायी गई जिसमें संस्थान की विविध गतिविधियों को दर्शाया गया। इस प्रदर्शनी में संस्थान के उद्देश्य, विजन, मिशन, गतवर्ष की प्रगति तथा विभिन्न नवाचार जैसे–नैनो वाटरशेड, जैविक बागड़, वाटर हार्वेस्टिंग एवं जल प्रबंधन।

खेल एवं युवा कल्याण मंत्रालय भारत सरकार के अंतर्राज्यीय कार्यक्रम एवं मेला

वतन को जानो

कश्मीर के युवाओं के लिये 'वतन को जानो' विषय पर कश्मीरी युवा आदान प्रदान कार्यक्रम दिनांक 01.12.2018 से 06.12.2018 को वाल्मी में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में जम्मू और कश्मीर राज्य के श्रीनगर, अनंतनाग, कुपवाड़ा, बारामूल, बड़गाम एवं पुलवामा जिलों के 128 युवाओं ने भाग लिया। एक सप्ताह के इस कार्यक्रम में परिचय, कार्यक्रमों की रूपरेखा, बौद्धिक सत्र, भाषा संस्कृति, खानपान, रहन सहन, स्वयं की पहचान, भ्रमण (सांची एवं ताजुल मस्जिद), राष्ट्र निर्माण विषय पर व्याख्यान, पैनल डिस्कशन, फूड फेस्टीवल, हस्तशिल्प मेला, सांस्कृतिक प्रस्तुतियां एवं समापन कार्यक्रम आयोजित किया गया।

वतन को जानो कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य युवाओं की ऊर्जा, राष्ट्र निर्माण की गतिविधियों में सहभागिता एवं भागीदारी सुनिश्चित कराना है। यह कार्यक्रम कश्मीर घाटी के संवेदनशील जिलों के युवाओं को अवसर उपलब्ध कराने का प्रयास करना है।

एक भारत – श्रेष्ठ भारत

एक भारत–श्रेष्ठ भारत कार्यक्रम के अंतर्गत अंर्तराज्यीय युवा आदान–प्रदान कार्यक्रम 2018 का आयोजन वाल्मी में दिनांक 07.12.2019 से 21.12.2019 तक आयोजित किया गया, जिसमें पूर्वोत्तर राज्य मणिपुर, नागालैंड से 39 एवं मध्यप्रदेश के 61 युवाओं ने सहभागिता की। प्रतिभागियों को विभिन्न विषय जैसे राष्ट्रीय एकता, एक भारत श्रेष्ठ भारत, संकल्प से सिद्धि, स्वच्छ भारत, डिजिटल इंडिया, गांधी दर्शन एवं गांधी–150, भाषा, कला एवं संस्कृति तथा सम सामयिक विषयों पर परिचर्चा एवं भारत सरकार द्वारा चल रहे फ्लेगशिप योजनाओं को समझने से बौद्धिक एवं विमर्श सत्र आयोजित किये गये। देश में स्थित ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक स्थलों एवं शैक्षणिक संस्थाओं से परिचित कराने के उद्देश्य प्रतिभागियों को यूनेस्को की सूची में विश्व धरोहर व बौद्ध जगत की तीर्थ स्थली सांची स्तूप (रायसेन), संत हिरदाराम महाविद्यालय, शौर्य स्मारक भोपाल, पूर्वोत्तर राज्यों की संस्कृति को संजोए हुये इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय भोपाल, प्रसिद्ध शिव मंदिर भोजपुर, लेक व्यू एवं न्यू मार्केट का भ्रमण कराया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में दोनों राज्यों के युवाओं ने लोकनृत्य, गायन एवं नाटक को प्रस्तुत कर सामजिक समरसता का संदेश दिया।

ये कार्यक्रम नेहरू युवा संगठन भोपाल हेतु वाल्मी द्वारा आयोजित किये गये।

आदिवासी युवा आदान–प्रदान कार्यक्रम:

संस्थान में नेहरू युवा केन्द्र संगठन की ओर से 12वें राष्ट्रीय आदिवासी युवा आदान प्रदान का आयोजन 2–8 फरवरी 2020 की अवधि में किया गया जिसमें उड़ीसा, झारखण्ड एवं आंध्रप्रदेश के सात जिलों के 200 आदिवासी युवाओं ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में जनजातीय समाज के लिए संविधान में वर्णित कल्याणकारी योजनाओं पर प्रकाश डाला गया एवं विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

वृक्षारोपण कार्य

खेल एवं युवा कल्याण मंत्रालय भारत सरकार के ''युवा आदान-प्रदान'' तथा ''एक भारत-श्रेष्ठ भारत'' के प्रतिभागी, रॉयल राजपूताना क्लब एवं उनकी प्रमुख श्रीमती शिवाराजे सिसोदिया, संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा पर्यावरण संरक्षण अन्तर्गत हिलटॉप एवं प्रदर्शन प्रक्षेत्र में ड्रमस्टिक (मुनगा), नीम, आँवला, फलदार, शोभादार, वन प्रजातियों के स्थानीय पौधे लगाए गए।

10. फलोद्यानों का जीर्णोद्धार

संस्थान के उद्यानिकी विषयक ग्रामीण उद्यान विस्तार अधिकारियों के दीर्घकालिक प्रशिक्षणों में प्रतिभागियों को व्यावहारिक अभ्यास प्रदाय कराने के उद्देश्य से प्रतिभागियों को विभिन्न प्रजातियों जैसे आम, आँवला, चीकू, काजू इत्यादि के जीर्ण क्षीर्ण पेड़ आवंटित किये गये एवं उन्हें इन वृक्षों के जीर्णोद्वार की तकनीक व आवश्यक सामग्री जैसे खाद, दवाईयाँ, उपकरण, सिंचाई जल इत्यादि उपलब्ध कराये गये तथा प्रत्येक प्रतिभागी को आवंटित वृक्ष के जीर्णोद्वारा का टास्क (कार्य) सौंपा गया, जिसे प्रतिभागियों द्वारा सफलतापूर्वक निष्पादित किया गया। इस नवाचार से प्रतिभागियों में उन्हें आवंटित वृक्ष के प्रति न सिर्फ जुड़ाव देखने को मिला अपितु छात्रावास में रहते हुये खाली समय का उनके द्वारा सकारात्मक उपयोग किया गया। प्रशिक्षण उपरान्त संस्थान के स्टॉफ द्वारा इन पौधों की देखरेख की जा रही है। कई प्रतिभागियों द्वारा उन्हें आवंटित किये गये वृक्षों की जानकारी प्राप्त करने हेतु दूरभाष पर संस्थान से सम्पर्क किया जाता है, जो नवाचार की सफलता परिलक्षित करता है।

11. मधुमक्खी पालन

प्रदर्शन प्रक्षेत्र के लगभग 700 वर्गमीटर क्षेत्र में मधुमक्खी पालन किया जाना सुनिश्चित किया गया है, जिससे मधुमक्खी पालन संबंधित प्रशिक्षणार्थियों को उचित प्रशिक्षण दिया जा सके। मधुमक्खी पालन संबंधित व्यक्तियों को प्रशिक्षण दिया जाना प्रारम्भ किया गया हैं, जिसमें स्कूली छात्रों द्वारा भी भ्रमण कर प्रक्रिया का अवलोकन किया जा रहा है।

12. वाटर हार्वेस्टिंग टैंक्स का निर्माण

प्रदर्शन प्रक्षेत्र में वर्षा जल निकास व्यवस्था अपूर्ण होने से क्षेत्र का अपवाहित जल (Runoff water) विभिन्न क्षेत्रों से अव्यवस्थित रूप से बहकर मिट्टी का कटाव कर रहा था। इस समस्या के निराकरण हेतु कल्वर्ट के माध्यम से चैनल (नाले) निर्माण कर अंतिम छोर पर सम्पूर्ण जल संग्रहण हेतु वाटर हार्वेस्टिक टैंक का निर्माण किया गया। इससे न सिर्फ भूजल रिचार्ज होगा अपितु संग्रहित जल में मछली पालन एवं मुर्गीपालन जैसी गतिविधियाँ प्रशिक्षुओं के लिये संचालित की जा सकेंगी, जो कि अत्यन्त उपयोगी होंगी।

13. ''वाल्मी फारेस्ट-एक वर्ष में घने जंगल की गारंटी'' पद्धति से स्वास्तिक निर्माण

म.प्र. जल एवं भूमि प्रबंध संस्थान (वाल्मी) द्वारा स्वजनित वाल्मी पद्धति से प्रक्षेत्र में सघनवनीकरण के कार्य विगत वर्ष से किये गये हैं। जिनमें सघनवनीकरण की 2 मीटर चौड़ी एवं 30 मीटर लम्बी सात पट्टियां विकसित की गई हैं, जिनमें विविध प्रकार के स्थानीय पेड़-पौधों को उगाया गया है। यह सभी पेड़-पौधे लगभग एक वर्ष की अवधि में घने जंगल के रूप में विकसित हो चुके हैं। इनमें इस वर्ष बेर, शहतूत, मुनगा बहुतायत में प्राप्त हुए हैं। इसी को आगे बढ़ाते हुए लगभग 500 वर्गमीटर क्षेत्रफल में एक स्वस्तिक आकार की सघनवनीकरण संरचना तैयार की गयी है। यह स्वास्तिक सघनवन होगा तथा इसकी भुजाओं में फूलों की बिन्दी लगायी गयी हैं। वाल्मी में अपर मुख्य सचिव पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग के निर्देश पर वाल्मी विभिन्न तकनीक से आकृतियों में सघनवन निर्मित किये गये हैं। पूर्व में इस श्रंखला में वाल्मी द्वारा ऊपर हिल्स पर 300 वर्गमीटर क्षेत्रफल में डब्ल्यू आकार का सघनवन निर्मित किया गया है।

14. सेनेटरी नेपकिन वेंडिंग मशीन का स्थापना

संस्थान में विभिन्न प्रशिक्षणों में महिला प्रतिभागियों की भी भागीदारी होती है। प्रशिक्षण के दौरान महिलाओं की आवास व्यवस्था भी संस्थान के छात्रावास में रहती है। अत: महिला प्रशिक्षणार्थियों की सुविधा हेतु संस्थान के छात्रावास में दो स्थानों पर सेनेटरी नेपकिन वेंडिंग मशीन स्थापित करायी गई हैं।

15. जल संरक्षण हेतु सूक्ष्म स्तरीय गतिविधियां

तीव्र गति से हो रहे विकास कार्यों के कारण शहरी क्षेत्रों में भूमि क्षेत्र कम होकर निरन्तर ऐसी सतह में परिवर्तित होता जा रहा है, जो जल को भूमि के अन्दर जाने से रोकती है। धीरे धीरे सम्पूर्ण क्षेत्र का भू-जल स्तर कम हो जाता है। शहरीकरण के इस प्रभाव को कम करना आवश्यक है। विकास के इस नकारात्मक प्रभाव कम करने की आवश्यकता को देखते हुए जल संरक्षण के बारे में जागरूकता बढ़ाये जाने की आवश्यकता है। संस्थान में 40 वर्गमीटर का एक पाथवे का निर्माण किया गया है जिसमें से भूमि के अन्दर जल स्वाभाविक रूप से संचारित होता है। संस्थान के एयरकंडीशनरों एवं आर ओ सिस्टम से निकलने वाले वेस्ट वॉटर को उद्यानिकी एवं रिचार्ज हेतु उपयोग किया जा रहा है।

16. संस्थान की अनुपयोगी सामग्री का ई-ऑक्शन

संस्थान की समस्त शाखाओं एवं संकायों की अनुपयोगी सामग्री जैसे - लकड़ी, फर्नीचर, रिवोल्विंग चेयर, एस चेयर, प्लास्टिक चेयर, प्लास्टिक मग, बाल्टी, ए.सी., वाटर कूलर, कूलर प्लास्टिक, कूलर आयरन, रजाई-गद्दे, मैस सामग्री, गीजर, टायर-ट्यूब मटेरियल (आयरन) इत्यादि का वर्षों से विभिन्न जगहों पर एकत्र किया गया था।

अनुपयोगी सामग्री के ऑक्शन से जहाँ एक ओर संस्थान को 7.55 लाख का आर्थिक लाभ हुआ है वहीं लम्बे समय से अनुपयोगी सामग्री आवासीय परिसर के आई टाइप आवासों, भोज परिसर क्र. - 1 एवं 2 ''एफ'' टाइप आवासों में जमा की हुई थी। ये भवन रिक्त हो गये हैं एवं उनके रखरखाव पश्चात् ये संस्थान के कर्मचारियों के निवास करने में उपयोग आयेंगे। एफ टाइप आवास गेस्ट हाउस के रूप में बनाये जाना प्रस्तावित है।

17. सुरक्षा व्यवस्थाएं

संस्थान लगभग 89 हेक्टर में स्थापित है जिसमें संस्थान की बहुमूल्य सम्पत्ति, लेवोरेट्री, छात्रावास, मैस, कम्युनिटी हॉल, प्रशिक्षण हॉल, कान्फ्रेंस हॉल, स्थापना तथा प्रदर्शन प्रक्षेत्र पर विभिन्न परिसम्पित्तियां है। इनकी सुरक्षा हेतु संस्थान में इसी वर्ष बाउंड्री वाल का निर्माण किया गया है। साथ ही संस्थान द्वारा बाह्य एजेंसी को सुरक्षा का दायित्व सौंपा गया है।

18. म.प्र. वाटर सेक्टर रिस्ट्रक्चरिंग परियोजना के अंतर्गत जल उपभोक्ता संस्थाओं व विभाग के संबंधित अमले के प्रक्षेत्र स्तरीय प्रशिक्षण

संस्थान द्वारा विश्व बैंक पोषित एम.पी.डब्ल्यू.एस.आर.पी. परियोजना के अंतर्गत जल संसाधन विभाग से हुए अनुबंध के अंतर्गत 07 जल संसाधन संभागों में चुनिंदा 426 जल उपभोक्ता संथाओं व उनसे संबंधित जल संसाधन विभाग के प्रक्षेत्र स्तरीय अमले हेतु प्रक्षेत्र स्तर पर क्षमतावर्धन गतिविधियों ली गई। कार्य की अनुबंधित राशि रू. 269 लाख थी तथा यह कार्य जून 2015 में पूर्ण किया गया। इस अनुबंध अंतर्गत 07 जल संसाधन संभागो, (विदिशा, दमोह, मुरैना, उज्जैन, देवास, बालाघाट व सतना) में चुनिंदा जल उपभोक्ता संथाओं को छः दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया। इस हेतु अभियांत्रिकी, कृषि व समाज विज्ञान के विशेषज्ञों के दलों का गठन किया गया प्रक्षेत्र स्तरीय प्रक्षेत्र पर प्रशिक्षण कार्यक्रमों के क्रियान्वयन विषय वस्तु विशेषज्ञों के 07 दलों द्वारा किया गया। इन कार्यक्रमों में जल संसाधन संभाग स्तर पर तथा जल उपभोक्ता संस्था स्तर पर प्रशिक्षण दिया गया।

निष्कर्ष

इस तरह एक ऐसा संस्थान जो लगभग निष्क्रिय हो गया था एवं बंद होने की कगार पर था सक्षम नेतृत्व, कुशल प्रबंधन एवं स्टॉफ की मेहनत, लगन एवं अथक प्रयासों से आज आत्मनिर्भर हो चुका है। जबकि संस्थान में तकनीकी अधिकारियों एवं कर्मचारियों की संख्या अत्यंत अल्प है। सीमित एवं अल्प संसाधनों से आरंभ कर संस्थान ने उसके सामने आई चुनौतियों का मुकाबला करते हुए आज देश एवं प्रदेश में विशिष्ट पहचान स्थापित की है। संस्थान द्वारा क्रियान्वयित किये गए कार्यों को देखने व समझने कई गणमान्य अतिथि एवं वरिष्ट प्रशासनिक अधिकारियों का आगमन हुआ है। संस्थान की उपलब्धियों को देखते हुए श्री दुष्यंत कुमार की निम्न पंक्तियां लगता है चरितार्थ हुई हैं :

''कौन कहता है आसमां में सुराख नहीं हो सकता
एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारो''

झरोखा – प्रगतिशील कार्यों का

संस्थान द्वारा वर्तमान में प्राकृतिक एवं मानव संसाधन विकास हेतु निम्न वर्णित कार्य किये जा रहे हैं :

1. अपशिष्ट जल का पुनर्चक्रण

संस्थान के कार्यालय, छात्रावासों एवं आवासीय परिसर से प्रचुर मात्र में अपशिष्ट जल निकलता है जो परिसर में प्रदूषण पैदा करता है। इस जल के सुचारू एवं उपयोगी निष्पादन हेतु I.I.T मुंबई के प्रोफेसर एवं विषय वस्तु विशेषज्ञ डॉ. ए.के. दीक्षित को संस्थान में आमंत्रित किया गया। आपके द्वारा अपशिष्ट जल प्रबंधन की आधुनिक तकनीकों पर अत्यंत प्रभावी एवं जानकारी युक्त प्रस्तुतिकरण किया गया। संस्थान द्वारा उनके मार्गदर्शन में संपूर्ण संस्थान परिसर से उत्पन्न अपशिष्ट जल का उपचार (Treatment) करने उपरांत उसे संस्थान के प्रदर्शन प्रक्षेत्र पर सिंचाई प्रयोजन के लिए उपयोग में लाये जाने का नियोजन एवं क्रियान्वयन किया जा रहा है।

2 वाल्मी प्रदर्शन प्रक्षेत्र पर वन्या विधि से वन विकास

वाल्मी प्रदर्शन प्रक्षेत्र पर सघन वन विकास हेतु वाल्मी विधि से वृक्षारोपण कार्य सफलतापूर्वक संपादित किया गया। इसी श्रृंखला में वन विकास की नवीन तकनीक **''वन्या''** को प्रदर्शन प्रक्षेत्र में अपनाने एवं प्रदर्शित किये जाने हेतु संस्थान की संचालक महोदया के नेतृत्व में संस्थान के तकनीकी दल द्वारा वन्या प्राकृतिक जैविक फार्म, खल बुजुर्ग, जिला बड़वानी का भ्रमण किया गया। जहाँ इस तकनीक से लगभग 100 एकड़ में सफल वन विकास किया गया एवं वन प्रजाति के अलग-अलग ऊंचाई के पौधे लगाये गये हैं। थालो में खस रोपण के साथ हल्दी, अदरक, सूरन, जिमीकंद, सतावर, पान, एलोवीरा गिरोय, पिंक पेपर, इन्सूलिन प्लांट, पपाया, मौरंगा, नीम, आंवला इत्यादि का रोपण किया गया है। इस विधि में खस रोपण का विशेष महत्व है। इसके द्वारा भूमि की जलधारण क्षमता बढ़ती है और कम सिंचाई में पौधों के थालों में नमी बनी रहती है, सिंचाई का अंतराल बढ़ता है तथा खस उत्पाद से आय में वृद्धि होती है। इस विधि के मूल सिद्धांत निम्नानुसार है:-

- जीरो टिलेज – मृदा में किसी प्रकार का Tillage Operation नहीं किया जाता है।
- रासायनिक उर्वरकों का उपयोग नहीं किया जाता है।
- जैविक पलवार (खस इत्यादि) का उपयोग।
- नींदा नाशक दवाओं का उपयोग प्रतिबंधित है।
- मिश्रित खेती के सिद्धांत को अपनाया जाता है।
- जैविक अपशिष्ट को पूर्ण रूप से पुनर्चक्रीकरण द्वारा उपयोग में लाया जाता है।
- खस का रोपण जल संरक्षण हेतु किया जाता है।
- सुबबूल के रोपण के माध्यम से नत्रजन स्थिरीकरण किया जाता है।
- औषधीय प्रजाति की बेलों का विकास वृक्षों के सहारे किया जाता है।

उक्त विधि की सफलता के दृष्टिगत वन्या विधि से वन विकास कार्यक्रम संस्थान के प्रदर्शन प्रक्षेत्र पर भी किया जा रहा है। यह कार्य भूमि सार्मथ्य वर्ग एवं भूमि उपयोग नियोजन के आधार पर 03 क्षेत्रों में किया जावेगा :-

प्रक्षेत्र के रिक्त पड़े क्षेत्र लगभग 10.05 हेक्टेयर में समोच्य रेखाओं पर सुबबूल (बीज द्वारा) नीम, पलाश, मुनगा इत्यादि पौधों का रोपण किया जावेगा एवं खस रोपण के साथ अदरक एवं हल्दी की बुवाई की जावेगी।

फलोद्यानों में जिसका क्षेत्रफल लगभग 3.2 हेक्टेयर के थालों में वन्या विधि से छायाश्रित पौधों जैसे हल्दी, अदरक इत्यादि का रोपण का कार्य खस के साथ किया जावेगा।

प्रक्षेत्र की वनचर भूमि में नीम एवं अन्य पौधों के थालो में बेलदार औषधीय पौधों जैसे गिलोय, सतावर, पान एवं एलोवीरा इत्यादि पौधों का रोपण किया जावेगा।

साथ ही प्रदर्शन प्रक्षेत्र में वाल्मी विधि से सघन वन विकास कर जंगल रूपी भूल भूलैय्या भी विकसित की जा रही है ताकि इकोलॉजिकल

पार्क एवं एडवेंचर स्पोर्ट्स हेतु आये प्रतिभागियों का प्रकृति से मेल मिलाप एवं मनोरंजन हो सके।

लाभ :

1. 90,000 सुबबूल के वृक्ष प्रक्षेत्र पर विकसित होंगे।
2. औसतन एक वृक्ष द्वारा प्रक्षेत्र पर पोंड ऑक्सीजन उत्सर्जित की जाती है 260 विकसित कुल 150,000 वृक्षों द्वारा लगभग 390 लाख पोंड ऑक्सीजन प्रति वर्ष उत्सर्जित की जावेगी जो 300,000 लोगों की प्रति वर्ष ऑक्सीजन की मांग की पूर्ति करेगी।
3. अदरक का 335 क्विंटल उत्पादन रू. 80/- प्रति किलो की दर से एवं हल्दी का 150 क्विंटल उत्पादन रू. 110 की दर से प्रक्षेत्र को रू 5 लाख रूपए की आय संभावित है। इसके अतिरिक्त औषधीय पौधों से अतिरिक्त आय सृजित होगी।

3 प्रशिक्षण आवश्यकता आंकलन सेवाएँ (Training Need Analysis Services)

संस्थान द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रमों को अधिक प्रभावी, उपयोगी एवं व्यावहारिक बनाने के दृष्टिगत प्रशिक्षण आवश्यकता आंकलन सेवाएँ (Training Need Analysis Services) प्रारंभ की जा रही हैं।

संस्थान द्वारा सम्पादित किये गए प्रशिक्षण कार्यक्रमों में विभिन्न चर्चाओं एवं प्रतिभागियों से प्राप्त Feed Back के आधार पर यह अनुभव किया गया है कि कई बार प्रशिक्षण आवश्यकता किसी और क्षेत्र में रहती है और प्रशिक्षण किसी अन्य विषय पर, जो पूर्व निर्धारित है, प्रदाय किये जाते हैं। इसी तरह कई बार व्यवहारिक प्रशिक्षणों की आवश्यकता होती है किन्तु Module अनुसार कक्षागत प्रशिक्षण प्रदाय किये जाते हैं। प्रशिक्षण विषयों के महत्व अनुसार सत्र का समय निर्धारण भी अतिआवश्यक है। ऐसे और भी कई कारण हैं जिनकी वजह से प्रशिक्षण कार्यक्रम अपने उद्देश्यों को कई बार प्राप्त नहीं कर पाते हैं। उक्त परिपेक्ष्य में संस्थान द्वारा प्रशिक्षण आवश्यकता आंकलन सेवाएँ (Training Need Analysis Services) प्रारंभ की जाना प्रस्तावित है। प्रथम चरण में ये सेवाएँ चयनित 4 विभागों-पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग, उद्यानिकी विभाग, जल संसाधन विभाग एवं लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग हेतु निशुल्क प्रदाय की जावेंगी। सर्वेक्षण कार्य हेतु संस्थान से सम्बद्ध Interns की सेवाएँ मानदेय आधार पर ली जावेंगी एवं विषय वस्तु विशेषज्ञों को आवश्यक कार्यों हेतु एमपेनल किया जावेगा। प्रशिक्षण आवश्यकता आंकलन का सर्वेक्षण कार्य राज्य स्तर, जिला स्तर, ब्लाक स्तर एवं ग्रामीण स्तर तक किया जावेगा। मैदानी स्तर पर सर्वेक्षण के साथ-साथ यह कार्य कार्यालयीन स्तर पर भी किया जावेगा। प्रत्येक विभाग हेतु 6 जिलों का चयन किया जावेगा, जिसमें 2 जिले जहां अच्छा कार्य हुआ है, 2 जिले मध्यम श्रेणी के एवं 2 जिले जहां कार्य का स्तर निकृष्ट रहा है चयनित किये जावेंगे।

प्राप्त डाटा के संकलन एवं विश्लेषण उपरांत विस्तृत प्रतिवेदन तैयार कर विभाग को प्रस्तुत किया जावेगा। तदानुसार प्रशिक्षण नीति एवं प्रशिक्षण मोड्युल का निर्धारण किया जावेगा। कार्य की सफलता उपरांत अन्य विभागों हेतु भी प्रशिक्षण आवश्यकता आंकलन सेवाएँ सशुल्क प्रदाय किया जाना प्रसतावित है।

4 मनरेगा हेतु नेनो वाटरशेड विकास अवधारणा अंतर्गत ग्राम महू, जिला इंदौर में विकास कार्य

संस्थान को महात्मा गाँधी रोजगार गारंटी परिषद, भोपाल द्वारा ग्राम महू, जिला इंदौर के लगभग 17 हेक्टर क्षेत्र में नेनो वाटरशेड अवधारणा एवं वाल्मी वन विकास पद्धति से आजीविका मूलक सर्वांगीण विकास किये जाने का प्रस्ताव प्राप्त है। संस्थान द्वारा इस कार्य का विस्तृत परियोजना प्रतिवेदन (DPR) तैयार किया जा रहा है व शीघ्र ही कार्य प्रारंभ किया जावेगा।

5 जिला पंचायत, गुना अंतर्गत ''वाल्मी फॉरेस्ट – एक वर्ष में घने जंगल की गारंटी'' विधि से सौंदर्यीकरण कार्य

जिला पंचायत, गुना से प्राप्त प्रसताव अनुसार जिले के विभिन्न दर्शनीय स्थलों के सौन्दर्यीकरण का कार्य मृदा एवं जल संरक्षण उपचारों के साथ वाल्मी सघन वनिकरण विधि से किया जाना है। प्रस्ताव के अनुपालन में संस्थान के तकनीकी दल द्वारा विभिन्न स्थलों का भ्रमण कर विस्तृत परियोजना प्रतिवेदन (DPR) तैयार कर लिया गया है एवं आवश्यक स्वीकृति उपरांत कार्य प्रारंभ किया जावेगा।

6 जल जीवन मिशन के अंतर्गत प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन

प्रदेश में अब तक केवल लगभग 30 प्रतिशत घर नल द्वारा जल प्रदाय योजना से जुड़े हुए है। भारत सरकार द्वारा जल जीवन मिशन के अंतर्गत वर्ष 2024 तक प्रत्येक घर को नल द्वारा जल प्रदाय योजना से जोड़ा जाना है। यह कार्य लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग द्वारा समुदाय की सहभागिता के साथ किया जाना है। इस कार्य को सफल बनाने में प्रत्येक स्तर पर प्रशिक्षण की एक महत्वपूर्ण भूमिका है। इस योजना के अंतर्गत लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग के अमले को प्रशिक्षित करने का दायित्व संस्थान को दिया गया है। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों की श्रृंखला के अंतर्गत चालू वर्ष में 1000 प्रतिभागियों को प्रशिक्षित किया जावेगा।

7 अटल भू-जल योजना के अंतर्गत प्रशिक्षण कार्यक्रम

प्रदेश के बुंदेलखण्ड क्षेत्र में विगत कई वर्षो में लगातार सूखे के कारण पानी की अत्यंत कमी हो गई है। इसके दृष्टिगत क्षेत्र में पानी की उपलब्धता बढाने के लिये केन्द्र शासन द्वारा अटल भू-जल योजना प्रारंभ की गई है। इस योजना का क्रियान्वयन जल संसाधन विभाग म. प्र. शासन द्वारा किया जा रहा है। इस योजनांर्गत जल संसाधन विभाग द्वारा सम्पूर्ण प्रशिक्षण की गतिविधि का दायित्व संस्थान को दिया गया है। इसके अंतर्गत संस्थान द्वारा इस वर्ष में राज्य स्तर पर 2, जिला स्तर पर 12, ब्लॉक स्तर पर 18 तथा ग्राम पंचायत स्तर पर 2688 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं।

विभिन्न सेवाओं हेतु संपर्क अधिकारियों की सूची

स.क्र.	सेवाएँ	संपर्क अधिकारी का नाम	मोबाइल नंबर
1	छतीय जल संग्रहण, ग्रीन वाल, भूजल पुनर्भरण	श्री जे.के. गुप्ता	9424441688 7828502699
2	नेनो वाटरशेड, वाल्मी विधि से सघन वन विकास-एक वर्ष में घने जंगल की गांरटी	श्री सुनील चौधरी	9406904153
3	मधुमक्खी पालन, मशरूम उत्पादन	श्री सुरेश सिंह राजपूत	9926640146
4	प्रशिक्षण, कार्यशाला, संगोष्टियां	डॉ. सारिका सिंह	7354999948
5	इकोलॉजिकल ऑक्सीजन पार्क एवं एडवेंचर स्पोर्ट्स	श्री शेर सिंह राजपूत	9179218473

सोच आगे की ...

1 नाबेट से एक्रीडिटेशन

नाबेट से एक्रेडिटेशन व संस्थान द्वारा आयोजित किए जाने वाले प्रत्येक प्रशिक्षण कार्यक्रम की उत्कृष्ट गुणवत्ता सुनिश्चित करने हेतु गुणवत्ता नियंत्रण की सर्व सम्मत निर्धारित प्रक्रिया एवं डॉक्यूमेंटेशन आवश्यक है इसे सुनिश्चित करने के लिए नाबेट से एक्रीडिटेशन की कार्यवाही की जावेगी।

2 ग्रीन डेवलपमेंट कॉन्सेप्ट पर कार्य :

वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन के प्रभाव एवं संभावित खतरों के दृष्टिगत समस्त विकास कार्यों में हरित विकास अवधारणा पर बल दिया जावेगा। इस अवधारणा का समावेश यथासंभव प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भी किया जावेगा।

3 क्रीड़ा सुविधाएँ

परिसर में खेलकूद सुविधाओं का विस्तार: संस्थान के प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सम्मिलित प्रतिभागियों एवं परिसर के रहवासियों हेतु उच्च स्तर की खेल सुविधाओं यथा क्रिकेट ग्राउंड वालीबाल एवं बास्केटबॉल ग्राउंड तथा इनडोर बैडमिंटन कोर्ट का विकास किया जाएगा।

4 उत्कृष्टता केंद्रों का विकास:

उत्कृष्टता एवं विशेषज्ञता वर्तमान समय की आवश्यकताएं हैं। संस्थान में क्षेत्र में उत्कृष्टता केंद्र विकसित किया जाना प्रस्तावित है:

- जल उपयोगिता दक्षता उत्कृष्टता केंद्र
- ग्रीन स्किल विकास केंद्र

5 बेहतर विस्तार सेवाएं

- ओपन कार्यक्रमों का आयोजन
- चुनिंदा पाठ्यक्रमों का विश्वविद्यालयों से रिकॉग्निशन
- प्रतिष्ठित संस्थाओं एवं संगठनों से विशेषज्ञ स्त्रोत व्यक्तियों को संस्थान के मानव संसाधन विकास हेतु एंपैनलमेंट द्वारा सम्मिलित करना

6 अधोसंरचनात्मक विकास

जल उपयोगिता दक्षता बढ़ाने पर विशेष फोकस सभी व्याख्यान कक्षों को स्मार्ट व्याख्यान कक्षों के रूप में तब्दील करना।

ई पुस्तकालय का विकास: ई पुस्तकालय के माध्यम से संस्थान देश एवं विदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं प्रख्यात स्थानों के पुस्तकालयों से जुड़ सकेगा एवं अद्यतन जानकारी होगी।

- सभी व्याख्यान कक्षों में हाईस्पीड इंटरनेट सुविधा
- व्याख्यान कक्ष क्रमांक-4 एवं 5 का जीर्णोद्वार
- आवासीय भवनों एवं प्रशासकीय खण्ड की साज-सज्जा
- वाटरशेड पार्क का विकास
- एडवेंचर हेतु हरित वाटर शेड भूलभूलैया

आत्मनिर्भर वाल्मी - आत्मनिर्भर प्रदेश - आत्मनिर्भर देश अवधारणा पर कार्य करते हुए क्षमतावर्धन द्वारा मानव संसाधन विकास में योगदान देते हुए आत्मनिर्भरता में सहयोग देना।

7 युवाओं हेतु रोजगार निर्माण की संकल्पना

वर्तमान में हमारे देश की युवा जनसंख्या विश्व में सबसे अधिक है, जो देश की कुल जनसंख्या का 66 प्रतिशत है एवं अगले 10 वर्षों तक 80 लाख युवा श्रमिक प्रति वर्ष की बढ़ोत्तरी अनुमानित है। इन युवाओं को रोजगार के अवसर प्रदाय करना शासन के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती है। कोरोना महामारी के चलते युवाओं की बेरोजगारी दर में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है एवं यह लगभग 27 प्रतिशत तक पहुंच गई है। ऐसी दशाओं में हमारे देश के युवाओं की क्षमता का पूर्ण उपयोग करने एवं उन्हें रोजगार प्रदाय करने हेतु 2 महत्वपूर्ण विकल्प दृष्टिगोचर होते हैं:

1. शासन द्वारा विकास की विभिन्न योजनाओं में बेरोजगार युवकों को रोजगार के अवसर प्रदाय किया जाना सुनिश्चित करना।
2. बेरोजगार युवाओं को आर्थिक ऋण उपलब्ध करा कर स्वरोजगार हेतु प्रोत्साहित करना।

उपरोक्त दोनों ही विकल्पों हेतु युवाओं का कौशल्य विकास किया जाना अति आवश्यक है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली युवाओं में ज्ञान वृद्धि हेतु अवश्य सफल रही है किन्तु अपेक्षित कौशल्य विकास नहीं कर पाई है। राष्ट्रीय कौशल्य विकास नीति (2009) में वर्ष 2022 तक 50 करोड़ युवाओं में रोजगार हेतु कौशल्य विकसित किया जाना लक्षित है। विगत अवधि में भारत शासन द्वारा कौशल्य विकास के माध्यम से बेरोजगारी दूर किये जाने हेतु **''प्रधानंत्री कौशल्य विकास योजना''** एवं **''राष्ट्रीय शिशिक्षता (Apprenticeship) सहायता योजना''** प्रारंभ की गई है। किन्तु भविष्य में युवाओं हेतु रोजगार के अवसर सुनिश्चित हो सकें इसलिए विशिष्ट क्षेत्रों में उन्हें प्रशिक्षित किया जाकर उसी क्षेत्र में उनका कौशल्य विकसित किया जाना आवश्यक प्रतीत होता है।

प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन एक ऐसा क्षेत्र है जो न सिर्फ हमारे देश के सतत (Sustainable) एवं समग्र विकास तथा पर्यावर्णीय सुधार हेतु नितांत आवश्यक है अपितु इस क्षेत्र में युवाओं को सुनिश्चित रोजगार प्रदाय करने एवं उनकी क्षमताओं के अनूकुल उपयोग की असीमित संभावनाएं हैं। प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन के क्षेत्र में हमारे देश के सामने कुछ महत्वपूर्ण चुनौतियाँ निम्नानुसार हैं:

चुनौतियाँ

1. जलवायु परिवर्तन पर केन्द्र सरकार द्वारा निर्मित नेशनल एक्शन प्लान के परिपालन में वृक्ष आच्छादित क्षेत्र 23% से बढ़ाकर 33% किया जाना।
2. हानिकारक ग्रीन हाउस गैसेस (कार्बन डाइ ऑक्साइड, मीथेन, नाईट्रस ऑक्साइड इत्यादि) उत्सर्जन, जिसमें हमारे देश का विश्व में तीसरा स्थान है, के दुष्प्रभावों को कम किया जाना।
3. ठोस अपशिष्ट उत्पाद, जो विश्व में सबसे अधिक भारत में निकलते हैं एवं प्रदूषण फैलाते हैं, का कुशल प्रबंधन।
4. भूमि सुधार एवं मृदा संरक्षण की चुनौती।
5. जल संरक्षण, संवर्धन एवं प्रबंधन तथा भूजल पुनर्भरण।
6. नदियों का पुनर्जीवीकरण।
7. कृषि क्षेत्रों में जल उपयोग दक्षता का विकास।
8. भूमि उपयोग नियोजन।
9. उद्यानिकी विकास एवं अन्य आजीविका मूलक गतिविधियों द्वारा आय अर्जन में वृद्धि
10. प्रकृति द्वारा प्रदत्त ऊर्जा स्त्रोतों का समुचित उपयोग।

रणनीति

हमारे देश के बेरोजगार युवाओं के क्षमतावर्धन एवं कौशल्य विकास के माध्यम से उपरोक्त चुनौतियों को रोजगार के अवसर में परिणित कर न सिर्फ प्रकृति द्वारा प्रदत्त धरोहर को सुरक्षित रखा जा सकता है अपितु युवाओं के जीवन यापन का यह एक सशक्त साधन (Learn & Earn) सिद्ध हो सकता है।

कौशल्य विकास एवं रोजगार के संभावित क्षेत्र (Themes)

- शीघ्र सघन वन विकास की पद्धतियां
- छतीय जल संग्रहण एवं भूजल पुनर्भरण
- नैनो वाटरशेड आधारित जल एवं भूमि संरक्षण कार्य
- कार्बन क्रेडिट एवं कार्बन फुट प्रिंट
- प्रदूषण नियंत्रण
- ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबंधन
- उन्नत सिंचाई प्रणालियाँ एवं जल उपयोग दक्षता
- नदियों के पुनर्जीवीकरण के उपाय
- भूमि सामर्थ्य वर्गीकरण एवं भूमि उपयोग नियोजन
- ऊसर भूमियों का सुधार
- प्राकृतिक ऊर्जा के विभिन्न स्त्रोत एवं उनका उपयोग
- कृषि जलवायुवीय क्षेत्र (Agro Climatic Regions) अनुसार उद्यानिकी विकास
- जल बजटिंग एवं मापन

कार्ययोजना

1. **विभागों/योजनाओं का चयन :** ऐसे समस्त विभाग एवं योजनाएं जहाँ बाह्य स्त्रोत नियोजन (Out Sourcing) के माध्यम से प्रस्तावित कार्य सम्पादित किये जा सकते हैं को चिन्हित किया जाना। कुछ संभावित विभाग एवं उनकी योजनाएं जहाँ प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन के कार्य मुख्य रूप से किये जाते हैं निम्नानुसार हैं :
   - पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग : राष्ट्रीय रोजगार गारंटी योजना, राजीव गाँधी जल ग्रहण मिशन, स्वच्छ भारत मिशन, आजीविका मिशन, ग्रामीण यांत्रिकी सेवाएँ इत्यादि।
   - वन विभाग : राष्ट्रीय वनीकरण योजना, निजी भूमि पर वृक्षारोपण प्रोत्साहन योजना, बांस रोपण, मिश्रित रोपण इत्यादि।
   - कृषि विभाग : राष्ट्रीय कृषि विकास योजना, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना, परम्परागत कृषि विकास योजना, राष्ट्रीय बायोगेस योजना, अन्नपूर्णा, नलकूप खनन योजना, मृदा परिक्षण इत्यादि।
   - जल संसाधन विभाग : समूह जल प्रदाय योजना, मत्स्य पालन, जल उपभोगता संस्थाएं इत्यादि।
   - लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी : नल जल प्रदाय योजना, ग्रामीण पेयजल कार्यम, जल जीवन मिशन, आदिवासी उपयोजना, भूजल संवर्धन एवं पुनर्भरण कार्यक्रम इत्यादि।
   - नगरीय विकास एवं आवास विभाग: स्मार्ट सिटी, अमृत, राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन, मुख्यमंत्री शहरी अधोसंरचना विकास योजना, मुख्यमंत्री शहरी पेयजल योजना इत्यादि।
   - उद्यानिकी विभाग: संरक्षित खेती, मुख्यमंत्री बागवानी एवं खाद्य प्रसंस्करण योजना, एकीकृत बागवानी विकास मिशन, आत्मनिर्भर भारत की योजनाएं इत्यादि।
   - अशासकीय संस्थाएं जो प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन हेतु कार्यरत हैं को सूचीबद्ध किया जाना।
2. **बेरोजगार युवाओं का वर्गीकरण :** कौशल्य विकास हेतु इंगित विषयों पर बेरोजगार युवाओं की शैक्षणिक योग्यता एवं अनुभव के आधार पर विभिन्न वर्गो में वर्गीकरण
   1 स्तर 1 महाविद्यालयों/विश्वविद्यालयों के Interns
   2 स्तर 2 दसवीं एवं बारहवीं उत्तीर्ण युवा
   3 स्तर 3 अशिक्षित युवा
3. **कौशल विकास एवं क्षमता वर्धन कार्यक्रम :** बेरोजगार युवाओं के शैक्षणिक स्तर अनुसार कौशल्य विकास के विभिन्न Modules विकसित किये जावेंगे तथा विभिन्न वर्गो अधीन चयनित युवाओं हेतु 1 माह से 3 माह अवधि के कौशल्य विकास एवं क्षमता वर्धन कार्यक्रम आयोजित किये जावेंगे। ये कार्यक्रम जिला स्तर, ब्लाक स्तर एवं ग्राम स्तर पर उपलब्ध प्रशिक्षण केन्द्रों, शासकीय अधोसंरचनाओं अन्य उपयुक्त सीलों पर आयोजित किये जावेंगे।
4. प्रशिक्षित बेरोजगार युवाओं को शासन द्वारा मान्यता प्राप्त प्रमाण पत्र प्रदाय किया जावेगा एवं कौशल विकास के क्षेत्रों एवं दक्षता के अनुकूल इन्हें विभिन्न योजनाओं में विभिन्न स्तरों पर संलग्न किया जा सकेगा। शासन द्वारा इस हेतु नीति निर्धारण अपेक्षित है।
5. स्वरोजगार हेतु ऋण सुविधाओं की जानकारी एवं ऋण उपलब्ध करवाने में सहायता।
6. उक्त प्रसतावित कार्ययोजना के क्रियान्वयन हेतु प्रादेशिक स्तर पर एक नोडल एजेंसी चयनित की जावेगी जो विभिन्न विभागों, प्रशिक्षण संस्थाओं एवं बेरोजगार युवाओं से समन्वय स्थापित कर योजना का क्रियान्वयन करेगी। इस एजेंसी द्वारा संसाधन व्यक्तियों का Empanellment कर Master Trainers तैयार किया जाना, प्रशिक्षणों हेतु आवश्यक व्यवस्थाओं का नियोजन इत्यादि कार्य भी किये जावेंगे।

परिणाम

विभिन्न एजेंसियों द्वारा किये गए सर्वेक्षणों के आधार पर प्रदेश में कुल बेरोजगार युवाओं की संख्या अनुमानत: 25-30 लाख है। उक्तानुसार प्रस्तावित कार्ययोजना के माध्यम से 5-10 लाख बेरोजगार युवाओं का प्रति वर्ष कौशल्य विकास कर रोजगार के अवसर उपलब्ध किये जा सकते है।

मीडिया में वाल्मी

वाल्मी मे एडवेंचर्स का लुत्फ उठाने पहुंचे सिटीजन

नेचुरल ब्यूटी के बीच वॉल क्लाइंबिंग, ट्रेकिंग हॉर्स राइडिंग के साथ जमकर किया एंजॉय

वाल्मी प्रशिक्षण के साथ देश का शोध संस्थान बनेगा: महेंद्र सिंह सिसोदिया

मुक्ताकाश का नाम कलाकाश होगा

Bank personnel enjoy adventure activities with family

Walmi Ecological Oxygen Park is seeing participation of every class

वाल्मी में मुक्ताकाश का नाम होगा 'कलाकाश'

वाल्मी बनेगा प्रशिक्षण और शोध संस्थान: सिसौदिया

कार्यशाला में पेश किये गये 18 शोध पत्र

वाल्मी में अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित

राज्य मंत्री श्री परमार ने मंत्रालय में प्राकृतिक टेरेस गार्डन का किया लोकार्पण

बरेली-जयपुर के मांझे से उड़ी पतंग

मीडिया में वाल्मी

दो साल में जंगल खड़ा करने की तकनीक

जापानी तकनीक से 5 लाख में तैयार हुआ 100 वर्गमीटर जंगल, वाल्मी ने अपनी तकनीक से 80 हजार में तैयार किया

iamBHOPAL SPECIAL

12,36,300 | 2,28,240

दो साल में बदली तस्वीर...

यह जगह वाल्मी में बंजर पड़ी थी। इस पर वाल्मी की तकनीक से जंगल तैयार करने का प्रयोग किया, जो सफल रहा है।

3,170 वर्ग मीटर में वाल्मी ने तैयार किया जंगल | 9,510 पौधे लगाए गए थे वर्ष उठे 4 पौधे के। | 10x20 फीट डायमंड ली गई एक साल में।

दूसरों के लिए भी तैयार कर रहे जंगल

जैविक खाद व गोमूत्र का हो रहा इस्तेमाल

चित्रों से दिया पर्यावरण संरक्षण का संदेश

भोपाल, 14 मार्च. मध्य प्रदेश जल एवं भूमि का प्रबंध संस्थान, वाल्मी में चल रहे दो दिवसीय वसंतनाद का समापन रविवार को किया गया. वसंतनाद में क्रिकेट, टेबल टेनिस, कैरम जैसी खेल प्रतियोगिताओं के साथ चित्रकला, गायन, नृत्य, फोटोग्राफी व रंगोली प्रतियोगिता के साथ ही पीले व्यंजनों पर भी आधारित प्रतियोगिता हुई. जल, जंगल, जमीन विषय पर आयोजित पेंटिंग प्रतियोगिता में बच्चों ने पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया, उन्होंने स्वच्छता एवं जल संरक्षण की भी अपील की. दो दिनों तक चलने वाले क्रिकेट के फाइनल मुकाबले में बरखेड़ी कला विजेता रहा. वहीं, वाल्मी ने जोरदार प्रदर्शन करते हुए आधारित प्रतियोगिता हुई. जल, जंगल, जमीन विषय पर आयोजित पेंटिंग प्रतियोगिता में बच्चों ने पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया, उन्होंने स्वच्छता एवं जल संरक्षण की भी अपील की. दो दिनों तक चलने वाले क्रिकेट के फाइनल मुकाबले में बरखेड़ी कला ने मारी बाजी. दिनों तक चलने वाले क्रिकेट एडवांस मुकाबले में बरखेड़ी ने विजेता रहा, वहीं वाल्मी ने जीत करते हुए उपविजेता का खि अपने नाम किया.

फूलों से बनाई रंगोली

रंगोली प्रतियोगिता में प्रतिभागि ओडम थर्ड पर केरल में बनाई रात्री फूलों की रंगोली बनाकर र का स्वागत किया, साथ ही को जागरूकता का सन्देश दि क्रिकेट में वाल्मी रहा उपवि बरखेड़ी कला ने मारी बाजी. दिनों तक चलने वाले क्रिकेट एडवांस मुकाबले में बरखेड़ी ने विजेता रहा, वहीं वाल्मी ने जीत करते हुए उपविजेता का खि अपने नाम किया.

जल संरक्षण की भी अपील पीले व्यंजनों पर आध प्रतियोगिता में खांडवी , खोपरा पाक, श्रीखंड, नमक जई पुलाव सहित ड पकवानों को प्रदर्शित किया.

गीत व नृत्य के साथ वाल्मी में वसंतनाद का आयोजन

कोरोना जागरूकता का दिया संदेश

भोपाल, 1 अप्रैल. मध्यप्रदेश जल एवं भूमि प्रबंध संस्थान (वाल्मी) में एक अप्रैल को सार्थक बनाने के लिए विश्व कल्याण एंव सोसायटी द्वारा शहर को हरा भरा बनाने एवं पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखते हुए वृक्षारोपण किया गया. पौधरोपण में पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री मोहि सिंह सिसोदिया की धर्मपत्नी शिवा राजे सिसोदिया के साथ वनमंत्री भौसरे, कंचन सिंह, सुमेधा सिंह, राजश्री चौतु, सीमा

वृक्षारोपण से वातावरण बनाएं हरा- भरा

शर्मा, नीतु सिंह, पूजा सिंह, नीलम सिंह, सरला बघेल सहित संचालक वाल्मी उर्मिला शुक्ला ने फ्लावर एवं छायादार पौधों का रोपण किया. जहां एक और लोग पूजो को पूर्ण बना कर अप्रैल- फूल बनते हैं, वहाँ वाल्मी ने वृक्षारोपण के माध्यम से हम अप्रैल को एवं वातावरण को फूल बना सकते हैं.

वाल्मी वसंतनाद

पीले व्यंजनों से बनाए गणेश जी, जीते ईनाम

रिपोर्टर • IamBhopal
Mobile no. 9827080486

मध्यप्रदेश जल एवं भूमि का प्रबंध संस्थान (वाल्मी)में चल रहे दो दिवसीय वसंतनाद का समापन रविवार को किया गया। वसंतनाद में क्रिकेट, टेबल टेनिस, कैरम जैसी खेल प्रतियोगिताओं के साथ चित्रकला, गायन, नृत्य, फोटोग्राफी व रंगोली प्रतियोगिता के साथ ही पीले व्यंजनों पर आधारित प्रतियोगिता हुई।

जल, जंगल, जमीन विषय पर आयोजित पेंटिंग प्रतियोगिता में बच्चों ने पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया, उन्होंने स्वच्छता एवं जल संरक्षण की भी अपील की। दो दिनों तक चलने वाले क्रिकेट के फाइनल मुकाबले में बरखेड़ी कला विजेता रहा। वहीं, वाल्मी ने जोरदार प्रदर्शन करते हुए उपविजेता का खिताब अपने नाम किया। रंगोली प्रतियोगिता में प्रतिभागियों ने ओणम पर्व पर केरल में बनाई जाने वाली फूलों की रंगोली बनाकर वर्षांत का स्वागत किया।

पीले व्यंजनों का लिया आनंद

पीले व्यंजनों पर आधारित प्रतियोगिता में खांडवी , खोपरा पाक, श्रीखंड, नमकीन, जर्द पुलाव सहित कई पकवानों को प्रदर्शित किया गया।

झूम रही है डार -डार, झम-झम नाचत आई बहार.....

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भोपाल

वाल्मी में वसंतनाद के समापन पर रंगोली, चित्रकला, गायन व नृत्य प्रतियोगिताएं

मप्र जल एवं भूमि का प्रबंध संस्थान, वाल्मी में चल रहे दो दिवसीय वसंतनाद का समापन रविवार को किया गया। वसंतनाद में क्रिकेट, टेबल टेनिस, कैरम जैसी खेल प्रतियोगिताओं के साथ चित्रकला, गायन, नृत्य, फोटोग्राफी व रंगोली प्रतियोगिता के साथ ही पीले व्यंजनों पर भी आधारित प्रतियोगिता आयोजित की गई। वसंतनाद में दो दिनों तक चलने वाले क्रिकेट के फाइनल मुकाबले में वाल्मी ने जोरदार प्रदर्शन करते हुए उपविजेता का खिताब जीता।

चित्रों में पर्यावरण संरक्षण का संदेश

कार्यक्रम में जल, जंगल, जमीन विषय पर पेंटिंग प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में बच्चों ने चित्रों के माध्यम से दिया पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया, उन्होंने स्वच्छता एवं जल संरक्षण की भी अपील की।

पीले व्यंजनों का लिया आनंद

पीले व्यंजनों पर आधारित प्रतियोगिता में खांडवी , खोर, खोपरा पाक, श्रीखंड, नमकीन, जर्द पुलाव सहित अनेक पकवानों को प्रदर्शित किया। रंगोली प्रतियोगिता में प्रतिभागियों ने ओणम पर्व पर केरल में बनाई जाने वाली फूलों की रंगोली बनाकर वर्षांत का स्वागत किया।

मीडिया में वाल्मी

अनुपयोगी सामग्री से ओपन एयर थियेटर तैयार कर रहा वाल्मी

2500 से अधिक कांच एवं पानी की बॉटल का किया जा रहा उपयोग

रिपोर्टर • IAmBhopal
Mobile no. 9827080486

मप्र जल एवं भूमि प्रबंध संस्थान (वाल्मी) द्वारा संस्थान में 250 सीटिंग कैपेसिटी का ओपन एयर थियेटर (खुला रंगमंच) गैर पारंपरिक वेस्ट (अनुपयोगी सामग्री) से तैयार किया जा रहा है। यह इस तरह का यह पहला प्रयास है।

ओपन एयर थियेटर के निर्माण के लिए कबाड़ से अनुपयोगी सामग्री को खरीदकर नया रूप दिया गया है, जिसमें 2000 कांच की बॉटल एवं 500 पानी की बॉटल सहित मलबा,मेटल का उपयोग किया गया है। रेत की जगह क्रेशर डस्ट का किया उपयोग किया गया है, साथ ही फ्लोरिंग में मार्बल के टूटे हुए पत्थर और वाटर पर डिजाइन के लिए

100 कलाकार दे सकेंगे प्रस्तुति: मंच को इस तरह तैयार किया जा रहा है कि जिसमें 75 से 100 कलाकार एक साथ प्रस्तुति दे सकें। यह थियेटर सितंबर के अंत तक होना शुरू होगा, फिर यह जनसामान्य के लिए उपलब्ध होगा। संचालक वाल्मी उर्मिला शुक्ला ने बताया कि पर्यावरण संरक्षण एवं अनुपयोगी

रविवार को सैकड़ों की संख्या में एडवेंचर का लुत्फ उठाने वाल्मी पहुंचे लोग

एडवेंचर एक्टिविटी के लिए वाल्मी लोगों की पसंद, बढ़ रहा रुझान

भोपाल स्थानी दैनिक जनहितेश न्यूज. शहर के बीचों-बीच कलियासोत पहाड़ी स्थित मप्र जल एवं भूमि प्रबंध संस्थान वाल्मी के इकोलॉजिकल ऑक्सीजन पार्क की एडवेंचर्स एक्टिविटी में शहर के नागरिक दिनों-दिन बड़ी संख्या में सहभागिता कर रहे हैं। शहर में एडवेंचर्स गतिविधियों के लिए वाल्मी पहली पसंद बनता जा रहा है। रविवार को आयोजित नेचर मास्ला वाल्मी वास्ता यहीं धूप-यहीं छांव कार्यक्रम में नेहरू युवा केंद्र भोपाल, यस बैंक, एसबीआई बैंक, पीएनबी बैंक के बैंककर्मियों सहित शहर के 100 से अधिक लोगों ने सहभागिता की।

ट्रेकिंग के साथ बॉल क्लाइमिंग में दिखाया जोश

एडवेंचर गतिविधियों में बॉल क्लाइमिंग, ट्रेकिंग, हार्स राइडिंग, केमल राइडिंग, टेबल टेनिस, कुर्सी दौड़ आदि में उत्साह के साथ हर उम्र वर्ग के लोगों ने सहभागिता की, राजधानी के प्राकृतिक वातावरण में वाल्मी में नागरिकों को एडवेंचर्स स्पोर्ट्स के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से विगत एक वर्ष से एडवेंचर्स एक्टिविटी आयोजित की जा रही है.

क्रिसमस पर वाल्मी में रोमांचक गतिविधियां

भोपाल(नाहि)। मप्र जल एवं भूमि प्रबंध संस्थान (वाल्मी) द्वारा इकोलॉजिकल ऑक्सीजन पार्क में क्रिसमस के अवसर पर कोविड गाइड लाइन का पालन करते हुए 'क्रिसमस फन वाला वाल्मी वीकेंड' इवेंट का आयोजन किया गया। इवेंट में प्रकृति के बीच गेम्स, ट्रेकिंग,बॉल क्लाइमिंग एवं ई रिक्शा, जंगल सफारी सहित एडवेंचर गतिविधियां आयोजित की गईं। इस बार विशेष आकर्षण हार्स राइडिंग एवं कैमल राइडिंग रही। इसमें 23 लोगों ने सहभागिता की।

बॉल क्लाइमिंग का दृश्य। • आयोजक

क्रिसमस पर वाल्मी में एडवेंचर एक्टिविटी

वेस्ट मटेरियल से वाल्मी बना रहा पहला ओपन एयर थिएटर

2500 से अधिक कांच एवं प्लास्टिक की बॉटल का किया उपयोग

स्टाफ रिपोर्टर ।। भोपाल

मप्र जल एवं भूमि प्रबंध संस्थान वाल्मीद्वारा संस्थान में 250 सीटिंग कैपेसिटी का ओपन एयर थियेटर खुला रंगमंच गैर पारंपरिक वेस्ट अनुपयोगी सामग्रीसे तैयार किया जा रहा है। इस तरह का यह पहला प्रयास है। कबाड़ से अनुपयोगी सामग्री को खरीदकर दिया नया रूप। ओपन एयर थियेटर के निर्माण के लिए कबाड़ से अनुपयोगी सामग्री को खरीदकर नया रूप दिया गया है, जिसमें 2000 कांच की बॉटल एवं 500 पानी की बॉटल सहित मलबा, मेटल का उपयोग किया गया है। रेत की जगह क्रेशर डस्ट का किया उपयोग। साथ ही फ्लोरिंग में मार्बल के टूटे हुए पत्थर और वाटर पर डिजाइन के लिए, नीलपुर पत्थर का उपयोग किया जा रहा है।

मंच को इस तरह तैयार किया जा रहा है कि जिसमें 75 से 100 कलाकार एक साथ प्रस्तुति दे सकें। यह ओपन एयर थियेटर सितम्बर अंत तक पूरा होगा, फिर यह जनसामान्य के लिए उपलब्ध होगा। संचालक वाल्मी उर्मिला शुक्ला ने बताया कि पर्यावरण संरक्षण एवं अनुपयोगी वस्तुओं के उपयोग करने के उद्देश्य से इस तरह की पहल की है।

भोपाल लाइव

एडवेंचर का लुत्फ उठाने वाल्मी पहुंचे लोग

भोपाल, 20 दिसंबर. शहर के बीचों-बीच कलियासोत पहाड़ी स्थित मप्र जल एवं भूमि प्रबंध संस्थान वाल्मी के इकोलॉजिकल ऑक्सीजन पार्क की एडवेंचर्स एक्टिविटी में शहर के नागरिक दिनों-दिन बड़ी संख्या में सहभागिता कर रहे हैं. शहर में एडवेंचर्स गतिविधियों के लिए वाल्मी पहली पसंद बनता जा रहा है. रविवार को आयोजित नेचर मास्ला वाल्मी वास्ता यहीं धूप-यहीं छांव कार्यक्रम में नेहरू युवा केंद्र भोपाल, यस बैंक, एसबीआई बैंक, पीएनबी बैंक के बैंककर्मियों सहित शहर के 100 से अधिक लोगों ने सहभागिता की.

बॉल क्लाइमिंग में दिखाया जोश

एडवेंचर गतिविधियों में बॉल क्लाइमिंग, ट्रेकिंग, हार्स राइडिंग, केमल राइडिंग, टेबल टेनिस, कुर्सी दौड़ आदि में उत्साह के साथ हर उम्र वर्ग के लोगों ने सहभागिता की, राजधानी के प्राकृतिक वातावरण में वाल्मी में नागरिकों को एडवेंचर्स स्पोर्ट्स के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से विगत एक वर्ष से एडवेंचर्स एक्टिविटी आयोजित की जा रही है.

मीडिया में वाल्मी

वाल्मी ने स्वयं की तकनीक विकसित कर रोपे हजारों पौधे

मियावाकी से कई गुना सस्ती और ज्यादा प्रभावशाली है वाल्मी की पद्धति

भोपाल, 4 जून. कलियासोत पहाड़ी स्थित मध्य प्रदेश जल एवं भूमि प्रबंध संस्थान, (वाल्मी) भोपाल प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन के क्षेत्र में राज्य का प्रमुख संस्थान है, पर्यावरण संरक्षण, संवर्धन एवं विकास हेतु संस्थान

वन एवं जल संरक्षण क्षेत्र में वाल्मी ने पेश की मिसाल

द्वारा निरंतर नवाचार किए जा रहे हैं

इन नवाचारों ने एक और जहां पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, वहीं दूसरी ओर प्रदेश में सघन वन विकास के लिए स्वयं की तकनीक

संस्थान के विशेषज्ञों ने शोध कर वाल्मीकी पद्धति निर्मित की, जो की मियावाकी तकनीक से कई गुना सस्ती और अधिक लाभप्रद है.

जंगल तैयार किया है, जो किसी आश्चर्य से कम नहीं है. तत्कालीन एसीएस पंचायत एवं ग्रामीण विकास एवं वर्तमान में मुख्य सचिव

विभिन्न स्थानों पर किया पौधरोपण

प्रदेश के विभिन्न जिलों में एवं राजधानी के अलग-अलग स्थानों पर इस पद्धति से जंगल विकसित करने का काम किया जा रहा है. इसके माध्यम से अब तक राजधानी में 13800 से अधिक पौधों का रोपण किया जा चुका है. वाल्मी प्रदर्शन प्रक्षेत्र में 1400 पौधे, वाल्मी पहाड़ी 800 पौधे, वाल्मी स्वास्तिक में 1650 पौधे, वाल्मी खेल मैदान में 6400 पौधे, खजूरी सड़क में 300 पौधे, रीसेट भवन में 600 पौधे तथा स्मार्ट सिटी में 1650 रोपे गये.

उनका सुझाव था कि इस पद्धति का उपयोग कर व्यापक स्तर पर पौधरोपण किया जाए, संस्थान के विशेषज्ञों ने मिलकर रिसर्च की और उसके बाद बंजर भूमि पर विभिन्न प्रजातियों के हजारों पौधों का रोपण किया, वही बंजर भूमि आज हरियाली से आच्छादित है.

इस पद्धति से संस्थान के विशेषज्ञों को मदद से राजधानी एवं

विशेषज्ञ डॉ रविंद्र ठाकुर ने बताया कि इस पद्धति में किसी भी प्रकार की केमिकल का उपयोग नहीं किया जाता, यह पूरी तरह जैविक पद्धति है, जिसमें गन्ना वेस्ट, धान का भूसा, गोबर खाद, गोमूत्र का उपयोग किया जाता है. संस्थान के विशेषज्ञ सुनील चौधरी ने बताया कि इस पद्धति से पौधरोपण करने से भूजल स्तर भी बढ़ता है. साथ ही उन पौधों

नवाचारों को गांव- गांव तक पहुंचाएं

भोपाल, 1 दिसंबर. मप्र जल एवं भूमि प्रबंध संस्थान (वाल्मी) में नाबार्ड की ओर से एक दिवसीय राज्य स्तरीय भ्रमण सह-प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें मुख्य रूप से सीजीएम नाबार्ड डॉ. राजी गेल, डीजीएम डॉ कीएस प्रसाद, संचालक वाल्मी उर्मिला शुक्ला, कृषि मंत्रालय प्रमुख डॉ.रविन्द्र ठाकुर सहित नाबार्ड के जिला विकास अधिकारी उपस्थित रहे. सीजीएम नाबार्ड डॉ. टीएस राजी गेल ने कहा कि वाल्मी ने पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से विभिन्न

समन्वय से मिलेंगे सकारात्मक परिणाम : शुक्ला

संचालक वाल्मी उर्मिला शुक्ला ने कहा कि जो कार्य दिशा में वाल्मी भी लगातार कार्य कर रहा है. और.

'EXPLORE NATURE AND FUN WALMI SANG'

Students briefed on afforestation

OUR STAFF REPORTER
Bhopal

A team of youths learned the intensive afforestation technique and waste management technology during a visit to the Ecological Oxygen Park of the Water And Land Management Institute (WALMI) on Wednesday.

The visit was part of a nine-day event, 'Explore Nature and Fun Walmi Sang' which will continue till December 5. The activities being organized as a part of the event include cycling, indoor

युवाओं ने साइकिल चलाकर फिट रहने का संदेश दिया, वनीकरण को समझा

वाल्मी और नाबार्ड मिलकर करेंगे पर्यावरण संरक्षण के कार्य : डॉ. राजी

राज एक्सप्रेस

वाल्मी ने हरियाली बढ़ाने स्वयं की तकनीक विकसित कर रोपे हजारों पौधे, 30 हेक्टेयर में तैयार किया तालाब

वन एवं जल संरक्षण क्षेत्र में पेश की मिसाल

सोशल मीडिया गतिविधि

#walmisocialmedia

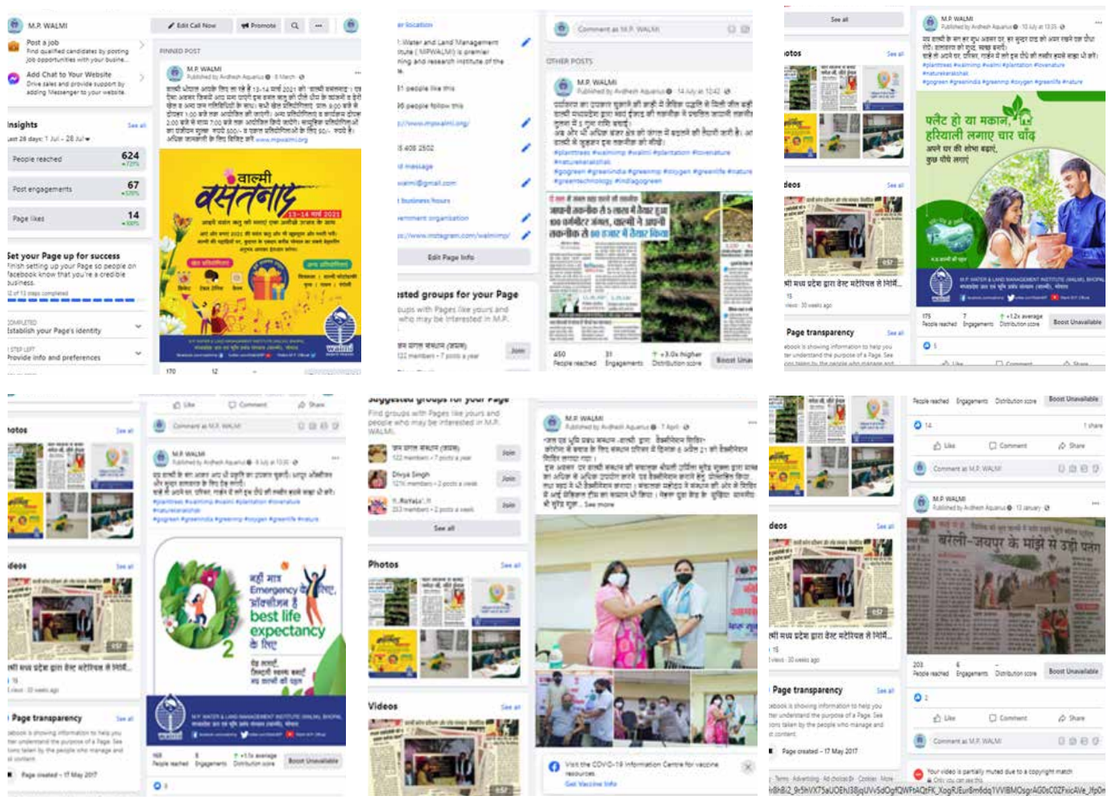

सोशल मीडिया गतिविधि
#walmisocialmedia

प्रतिभागियों की अभिव्यक्तियां

"वाल्मी द्वारा कोविड–19 महामारी के इस कठिन परिस्थिति में इकोलॉजिकल ऑक्सीजन पार्क विषय पर आयोजित ऑनलाइन इंटर्नशिप कार्यक्रम में इकोसिस्टम के विषय में अत्यंत महत्वपूर्ण जानकारी श्री वीकके खरे सर एवं तिवारी सर द्वारा प्रदान की गई जिसके द्वारा हमारे सामाजिक परिवेश में पारिस्थितिकी तंत्र के प्रति संवेदनशीलता का विकास हुआ। ऑनलाइन व्याख्यान में अतिथियों द्वारा प्रदाय की गई जानकारी से पर्यावरण एवं उसके मूलभूत तत्वों के संरक्षण व संवर्धन के प्रति चेतना का विकास हुआ। इस ज्ञान को प्राप्त कर हम अपने आसपास के पर्यावरण को यथा वायु जल वृक्ष सूक्ष्म जीव जंतु को संरक्षित रखने का प्रयास कर सकते हैं। यह अत्यंत चिंतनीय विषय है कि प्रकृति के इस संसाधनों का मानव ने अपनी तथाकथित बुद्धि एवं विकास के अव्यवहारिक मापदंड पर दोहन किया जिसके कारण आज महामारी के दौर में मनुष्य के समक्ष अस्तित्व का संकट खड़ा हो गया परन्तु वाल्मी द्वारा एक अवसर प्रदान किया गया है कि हम प्रकृति के प्रति सूक्ष्म समझ विकसित करें एवं प्रकृति व पर्यावरण के अनुरूप ही विकास करें।"

– भावना पाटने (प्रतिभागी)

"कोविड–19 महामारी में मध्यप्रदेश जल एवं भूमि प्रबंध संस्थान (वाल्मी) ने अपने सामाजिक दायित्वों को देखते हुए नि:शुल्क इंटर्नशिप प्रोग्राम प्रारंभ किया है, जिसमें सभी उम्र वर्ग के व्यक्ति सम्मिलित हैं, आज इकोलॉजी ऑक्सीजन पार्क के व्याख्यान के तहत हमारे अतिथि महोदय श्री वी.आर. खरे सर और श्री डी.पी. तिवारी सर द्वारा बेहद सीमित समय सीमा में काफी विस्तृत और महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गई, जिसमें (1) Article-48 (2) Article-21 (3) Article-51 A(g) (4) Miyawaki Technique Plantation its called also walmiyawaki plantation (5) Clean Water (6) Clean Air (7) Water Cycle (8) New Ecological Park formation etc. श्री अभिषेक गुप्ता सर जी और वाल्मी संस्थान द्वारा आयोजित इस महत्वपूर्ण व्याख्यान में हमें सम्मिलित करने हेतु विशेष धन्यवाद।"

–आस्था मिश्रा भोपाल। प्रतिभागी।

"वाल्मी के द्वारा दिए जा रहे प्रशिक्षण में सम्मानीय श्री वीके खरे सर एवं डीपी तिवारी सर द्वारा पारिस्थिकी के संबंध में हमे जो भी जानकारी प्रदान की गई है उसकी सहायता से हम कठिन परिस्थिति से गुजर रहे पर्यावरण को बचाने के लिए सतत प्रयास करते रहेंगे तथा लोगों को जागरूक करने के साथ–साथ हमारे जीवनकाल में प्रकृति से होने वाले लाभों के बारे में लोगों को अवगत कराएंगे। वाल्मी के द्वारा प्रकृति के संरक्षण में जो भी प्रयास किए जा रहे उनको लोगों को अनुभूति कराने का प्रयास करेंगे। श्री अभिषेक गुप्ता सर और Walmi के द्वारा हमें इतनी अच्छी प्रशिक्षण दिया जा रहा उसके लिए हम आभार व्यक्त करते हैं।"

धन्यवाद

– विवेक कुमार अवस्थी (शहडोल) प्रतिभागी।

"WALMI organised an information and enlightening internship on ecology oxygen park which highlighted the benefits and services of such parks. WALMI is persevering to become a biodiversity heritage spot and this requires contribution from all members of society along with the eminent experts. The participants were encouraged to take initiative and adapt measures to contribute by learning how to plan out an ecology oxygen park in their districts by learning through models and established system in WALMI. It was a holistic experience which definitely stressed the need to address the problem of ecological degradation by playing a proactive role."

–Sarah Zaki Ansari Bhopal.

(10:27 PM, 6/1/2021) **FP Hariom Goswami :** वाल्मी प्रशिक्षण संस्थान भोपाल द्वारा जो आयोजित नेनो वाटर शेड विषय पर आज बहुत ही तथ्यपरक और तकनीकी जानकारी दी गई इसमें वाटर शेड क्या हैं? इस पर ठाकुर सर द्वारा बड़ी ही सरल भाषा में बताया गया कि एक बिन्दु से लेकर जिस अंतिम बिन्दु तक पानी जाता है, और उस क्षेत्र में जो पानी रूकता है वह पूरा क्षेत्र जलग्रहण क्षेत्र कहलाता है। और हर वाटरशेड के कई माइक्रो वाटरशेड होते है जिसका एक नाम होता हो, जिसमें हर शब्द, अंक कुछ न कुछ दर्शाता है। इसका ही एक और चरण है, नेनो वाटरशेड। नेनो अर्थात् छोटा रूप में जलग्रहण क्षेत्र को विकसित करना जिससे खेती, बनिकी, और पर्यावरण में सहयोग मिल सके। इसमें कई प्रकार की छोटी–छोटी संरचनाएँ बनाई जाती हैं, जैसे – गली प्लग, लूजबोल्डर गेबियन, कंटूर ट्रेंच, खेत तालाब, खेत खंती आदि क्षेत्र में कौन सी तकनीक अपनाई जाए इस पर विस्तार से चर्चा की गई। 2. सत्र के दूसरे चरण में रवि सलकते के द्वारा आज नेनो वाटर शेड के अतिरिक्त वाटर बजटिंग और वाटर रन क्या होता है? इसके बार में जानकारी साझा की कि, कभी भी किसी संरचना को बनाते समय यह उद्देश्य होता है कि उस क्षेत्र में निस्तार, पेय जल, पशुओं के लिए, कृषि के लिए कितने पानी की आवश्यकता साल भर में होती है और वह कितना पानी संग्रहण करेगा इसके लिए बजटिंग की जाती है, जिसके कुछ पैरामीटर होते हैं उनके आधार पर इसे तैयार करते हैं।

– हरिओम गोस्वामी, प्रतिभागी

(5:01 PM, 6/1/2021) **FP VEENA MANJHI :** वाल्मी द्वारा आयोजित नेनो वाटर शेड विषय पर आज बहुत ही तथ्यपरक और तकनीकी जानकारी दी गई इसमें वाटर शेड मैनेजमेंट के लिए किस क्षेत्र में कौन सी तकनीक अपनाई जाए इस पर विस्तार से चर्चा की गई और इसके लिए हमें कौन–कौन से फैक्टर्स को ध्यान में रखना चाहिए यह भी बताया गया। जल के उचित प्रबंधन के लैंड कैपेसिटी क्लास को ध्यान में रखकर कृषि क्षेत्र में उद्यानिकी, मधुमक्खी पालन के जरिए अतिरिक्त आय अर्जित की जा सकती है आज नेनो वाटर शेड के अतिरिक्त वाटर बजटिंग और वाटर रन ऑफ विषय पर रोचक और वैज्ञानिक तथ्यों के साथ कम समय में बहुत ही उम्दा जानकारी दी गई। संस्थान द्वारा आयोजित होने वाली आगामी ऑनलाइन प्रशिक्षण सत्र में निश्चय ही शामिल होना चाहती हूं। धन्यवाद!

– वीणा मांझी, प्रतिभागी

(5:24 PM, 6/1/2021) 91 93407 23489 : जल एवं भूमि प्रबंधन संस्थान भोपाल मध्यप्रदेश द्वारा आज नेनो वाटरशेड तथा वाटर शेड मैनेजमेंट से संबंधित सभी तकनीकों तथ्यों पर प्रमुखता से जानकारी प्रदान की गई साथ ही एकीकृत जलग्रहण प्रबंधन तथा इसके अंतर्गत निर्मित की जाने वाली जल संरक्षण एवं मृदा संरक्षण संबंधित गतिविधियों, Ridge to Valley Approach आदि विषयों पर प्रशिक्षणार्थियों को जानकारी प्रदान की गई। वाटर शेड मैनेजमेंट की ग्रामीण विकास व इसके साथ की जाने वाली अन्य गतिविधियों पर प्रमुखता से जानकारी प्रदान की गई। Water Shed मैनेजमेंट में आदर्श ग्राम के रूप में प्रसिद्ध रालेगण सिद्धि एवं हिवरे बाजार मॉडल की जानकारी दी गई। दूसरे सत्र में Water बजट एवं इसके महत्व पर जानकारी के साथ–साथ जल चक्र Infiltration Runoff एवं Evapotranspiration से संबंधित विभिन्न तकनीकी पहलुओं पर जानकारी दी गई साथ ही Water बजटिंग की जल संरक्षण में भूमिका पर भी प्रकाश डाला गया। आगे भी संस्थान द्वारा आयोजित प्रशिक्षण एवं अन्य गतिविधियों में सक्रिय रूप से अपनी सहभागिता सुनिश्चित करूंगा।

– योगेश यादव, प्रतिभागी।

कैमरा वॉक

कैमरा वॉक

कैमरा वॉक

कैमरा वॉक

मध्य प्रदेश जल एवं भूमि प्रबंध संस्थान,
भोपाल

कैमरा वॉक

कैमरा वॉक

मध्य प्रदेश जल एवं भूमि प्रबंध संस्थान,
भोपाल

कैमरा वॉक